

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1994

CRPF SAMACHAR



CRPF Newsletter & Magazine

1994

Contents

28 February 1994 Vol. 7 No. 1

31 March 1994 Vol. 7 No. 2

31 May 1994 Vol. 7 No. 3

30 June 1994 Vol. 7 No. 4

31 August 1994 Vol. 7 No. 5

30 September 1994 Vol. 7 No. 6

30 November 1994 Vol. 7 No. 7

31 December 1994 Vol. 7 No. 8

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-VII

अंक-1

28 फरवरी 1994.

9 फाल्गुन, शक 1915



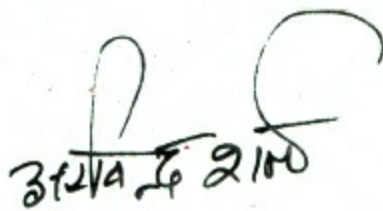
गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण 54वीं वार्षिक परेड का निरीक्षण करते हुए।

प्राया-सतीश खन्ना

सम्पादकीय

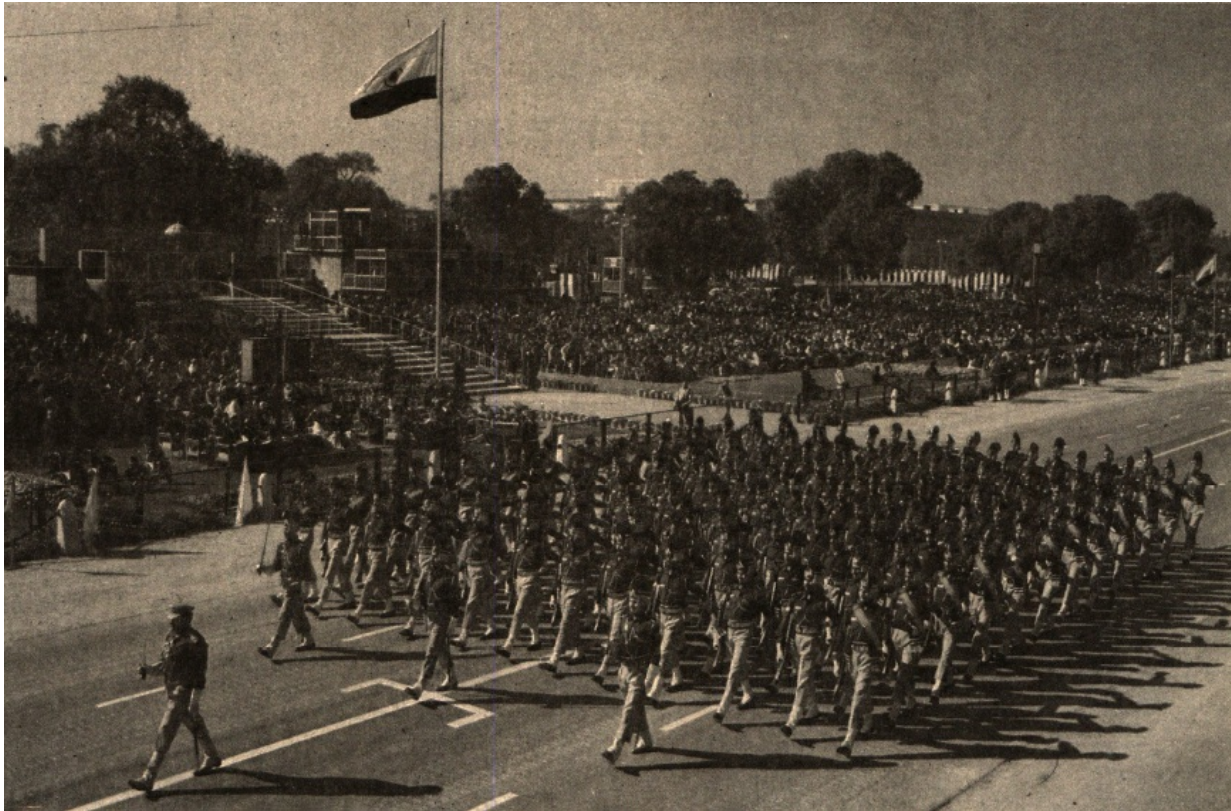
वर्ष 1994 का प्रथम हिन्दी समाचार आपके हाथ में है। पंजाब में आतंकवाद पर जिस विजय अभियान की शुरुआत हम लोगों ने की थी, 1993 में उस के अंतिम चरणों से होते हुए हमने 1994 में प्रवेश किया है। आज पंजाब शांत है। पंजाब की यह शांति हमारे जवानों, हमारे विभाग और सबसे अधिक पंजाब के नागरिकों के लिए नए वर्ष का एक नायाब तोहफा है। मगर यह एक ऐसा तोहफा है, जो अपनी हिफाजत और महफूजियत की मांग हमसे हमेशा करता रहेगा। और ये हमारा भी फर्ज है कि हम इस शांति की हिफाजत उसी मुस्तैदी के साथ करें, जिस मुस्तैदी से हमने यहां अमन कायम किया है।

कई कठिनाईयों, बलिदानों और संघर्षों की एक लम्बी डगर पार कर हम आज इस मुकाम पर पहुंचे हैं। आज इस मुकाम पर जब हम पलट कर देखते हैं, तो हमें अनायास ही याद आते हैं, अपने वो हजारों साथी, जिन्होंने पंजाब में अमन के दामन में लगी दहशत की आग को बुझाने के लिए अपने लहू के छोटों से इस हरी भरी धरती को सींचा है। आतंक से तपती पंजाब की भूमि को शीतलता प्रदान करने के लिए अंजुरी भर भर कर अपना लहू दिया। साथ ही हमें याद आते हैं इन शहीदों के परिवारजन। उनके प्रति हमारा मन मस्तिष्क, श्रद्धा और कर्तव्यबोध से भर उठता है। ये परिवार सहारे के अभाव में टूटें न, बिखरने न पायें, ये हमें तथा समाज को देखना है। पंजाब आतंकवाद के खूनी दौर के बाद अब पुनर्वास के दौर से गुजर रहा है। आतंकवाद के इस खूनी दौर में पंजाब के बहुत से नागरिकों के परिवार और प्रायः सभी नागरिकों के मन बुरी तरह क्षतविक्षत हुए हैं। इन घावों पर अब हमें तथा समाज को मरहम लगाना है। हमें पंजाब के गांवों में पूरी तरह पैर पसार चुकी उदासी की चादर को नोच कर फेंक देना है। पंजाब को फिर वही पुराना खुशहाल माहौल देने के लिए यही उचित कदम होगा, और नए वर्ष के लिए यही हमारा संकल्प भी है।



(अ. ना. शर्मा)

गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकडियां



गणतंत्र दिवस परेड में सलामी मंच के आगे से गुजरती बल की पुरुष टुकड़ी

इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में के. रि. पु. बल की पुरुष, महिला तथा बैंड की तीन टुकड़ियों ने भाग लिया।

परेड में बल की पहली टुकड़ी महिला बटालियन की थी, जिसका नेतृत्व सहायक कमान्डेन्ट अनिता चट्टा शर्मा कर रही थीं। इस टुकड़ी में 144 महिला अधीनस्थ अधिकारी, अवर अधिकारी तथा कांस्टेबल शामिल थीं।

बल की महिला टुकड़ी के पीछे 105 सदस्यों वाला के. रि. पु. बल बैंड था, जिसका नेतृत्व इंस्पेक्टर पी. एस. थापा कर रहे थे। ज्ञातव्य है कि श्री थापा गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने की अपनी रजत जयंती मना चुके हैं।

बैंड के पीछे बल की 144 सदस्यों वाली पुरुष टुकड़ी थी, जिसका नेतृत्व सहायक कमान्डेन्ट ए. आनंदन कर रहे थे। टुकड़ी में सब इंस्पेक्टर तथा अन्य रैंकों के औसतन 6 फुट कद के जवान शामिल थे।

बल की टुकड़ियां दर्शकों की भारी हर्षध्वनि के बीच सलामी मंच के आगे से अपने कथानक गीत “सेवा भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहलाता है” की धुन पर मार्च करती हुयी गुजरीं।

अंगोला कमीजों तथा खाकी पेंटों में सज्जित महिला तथा पुरुष टुकड़ियों के सभी जवानों के हाथों में सेल्फ लोडिंग रायफलें थीं। जबकि इन टुकड़ियों के कमांडरों के हाथों में चमचमाती हुयी तलवारें थीं। पुरुष जवानों की गहरे नीले रंग की पगड़ियों पर

आसमानों रंग का तुरा लहरा रहा था, जिस पर सुनहरे रंग की झालर थी। जबकि महिला बटालियन की टुकड़ी की सदस्यों की आसमानी बेरेट कैप पर नीले रंग की कलगी चमक रही थी। इन दोनों टुकड़ियों के जवानों की कमीज की बांयी बांह पर के.रि.पु. बल का प्रतीक चिह्न था। उनकी खाकी पैंटों पर बंधे नीले कमर बंध पर सफेद चमड़े की पेटी बंधी थी। सभी जवानों के गले में के. रि. पु. बल के प्रतीक चिह्न वाला स्कार्फ बंधा था

54 वीं वर्षगांठ

गृह मंत्री द्वारा के.रि.पु.बल कल्याण निधि में एक करोड़ का अनुदान



गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण 54वीं वार्षिक परेड का निरीक्षण करते हुए

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री एस.बी. चव्हाण ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की केन्द्रीय कल्याण निधि में कल्याण कार्यक्रमों हेतु एक करोड़ रुपए की राशि दी है। श्री चव्हाण ने यह घोषणा 28 दिसम्बर, 93 को के.रि.पु.बल की 54 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित एक भव्य परेड की सलामी लेने के बाद उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए की।

श्री चव्हाण ने कहा कि के.रि.पु. बल के जवानों द्वारा देश की सेवा में किए जा रहे बलिदानों को देखते हुए यह राशि बहुत थोड़ी है, मगर उन्होंने आशा व्यक्त की कि इससे उनके कल्याण कार्यक्रमों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि के.रि.पु.बल

अपने प्राशिक्षण के अनुरूप कार्य करते हुए आतंकवादियों और देशद्रोही तत्वों के दिल में दहशत पैदा करता रहेगा। गृह मंत्री ने उन लोगों को भी चेतावनी दी, जो कि देश के अंदर और बाहर से आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरे पैदा कर रहे हैं। उन्होंने बल को आश्वासन दिया कि उसके कार्मिकों का बलिदान व्यर्थ न जाएगा, तथा आने वाले समय में देश उनके बलिदानों की व्याख्या गर्व के साथ करेगा। उन्होंने रेपिड एक्शन फोर्स तथा महिला बटालियन द्वारा किए जा रहे कार्यों को भी प्रशंसा की। गृह मंत्री ने देश को आश्वासन दिया कि इस बल का हर जवान देश व के.रि.पु. बल के ध्वज की आन के लिए कोई भी कुर्बानी देने से पीछे न हटेगा।



गृह मंत्री पदक विजेताओं के साथ

इससे पूर्व गृह मंत्री ने एक भव्य व आकर्षक परेड का निरीक्षण किया और उसकी सलामी ली। परेड का नेतृत्व कमान्डेन्ट नागेन्द्र सिंह ने किया।

परेड के बाद गृह मंत्री ने बल के 42 कार्मिकों को पुलिस पदक प्रदान किए। जिनमें से तीन कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्यवीरता के पुलिस पदक, 30 शौर्यवीरता के पुलिस पदक, चार को शौर्यवीरता की पुलिस पदक बार तथा पांच को विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक प्रदान किए गए। इनमें से पांच पदक मरणोपरांत दिए गए।

गृह मंत्री ने इस मौके पर बल की 66 बटालियन को वर्ष 1993 की सर्वश्रेष्ठ बटालियन ट्राफी भी प्रदान की। यह ट्राफी 66 बटालियन के कमान्डेन्ट श्री आर.सी. पुरी ने ग्रहण की।

इस मौके पर बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने गृह मंत्री को बल की तरफ से एक स्मृति चिह्न भेंट किया तथा महाराष्ट्र के भूकंप-पीड़ितों के लिए 5,47,500 रुपए का अनुदान प्रधान मंत्री के राहत कोश में भेंट किया। यह राशि पहले दिए गए 38 लाख रुपए के अनुदान के अतिरिक्त है। इस प्रकार अब तक महाराष्ट्र के भूकंप

पौड़ों के लिए के.रि.पु.बल 43 लाख से अधिक का अनुदान दे चुका है।

इस मौके पर भारी संख्या में अति महत्वपूर्ण व्यक्ति, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तथा बल के कार्मिक उपस्थित थे।

43 वें अखिल भारतीय पुलिस खेल के.रि.पु.बल को तीसरा स्थान



सर्वश्रेष्ठ एथलीट है. कां. प्रेमजीत सिंह स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए।

21 से 28 फरवरी '94 तक जयपुर में संपन्न हुए 43 वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अपनी स्थिति को संभालते हुए तीसरा स्थान प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि गत वर्ष के.रि.पु.बल को इन खेलों में पाचवां स्थान प्राप्त हुआ था। बल की टीम ने इन खेलों की सभी प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया।

दौड़कूद के पुरुष वर्ग के मुकाबलों में इस वर्ष बल की टीम से काफी आशाएं थीं, क्योंकि इस वर्ष बल की टीम में कई और प्रतिभावान खिलाड़ियों को शामिल किया गया था। बल की टीम ने आशा से अनुरूप अपनी स्थिति को सुधारा तो सही, मगर उसे चार स्वर्ण, 6 रजत, चार कांस्य पदकों तथा 15 खिलाड़ियों की चौथी से छठी पोजीशन से संतोष करना पड़ा। हैड कांस्टेबल प्रेमजीत सिंह ने 200 तथा 400 मीटर

मुकाबलों में स्वर्ण पदक जीते तथा उन्हें सर्वश्रेष्ठ एथलीट घोषित किया गया तथा गृह मंत्री का पदक प्रदान किया गया।



दर्शक दीर्घा में अन्य अधिकारियों के साथ बैठे बल के महानिदेशक श्री एस. वी. एम. त्रिपाठी।

महिलाओं के वर्ग में लांस नायक शीजा मोल के. ने हाई जम्प में 1.57 मीटर की छलांग लगाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित कर स्वर्ण पदक जीता। बल की दो अन्य महिला एथलीटों ने चौथी से छठी पोजीशन हासिल की। बल की महिला टीम प्रतियोगिता में छठे स्थान पर रही।

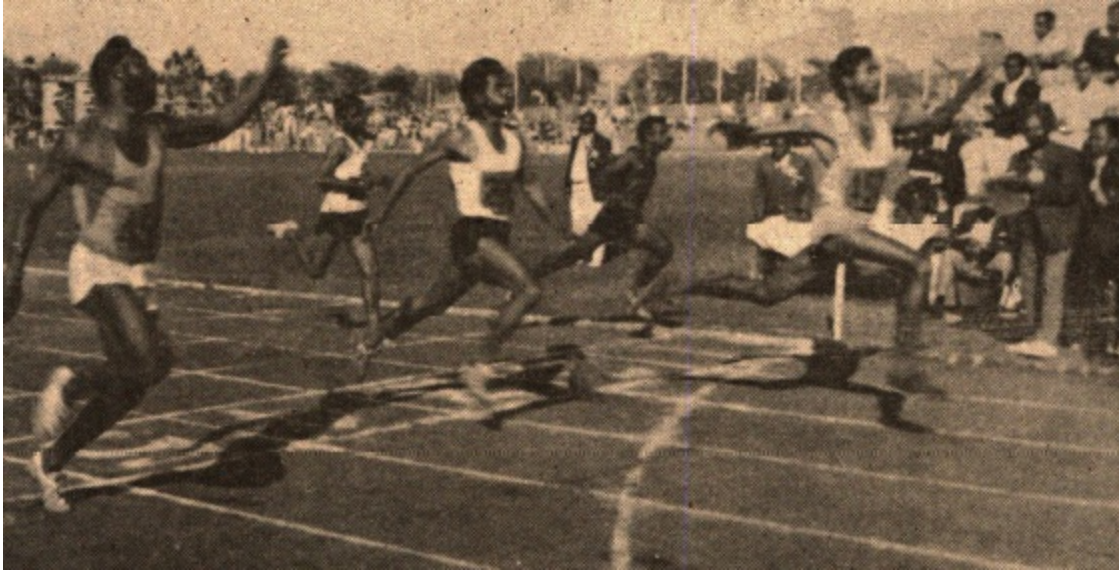
फुटबाल मुकाबलों में बल की टीम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा तथा वह पहले ही राउंड में नागालैंड पुलिस से एक के मुकाबले जीरो गोल से हार गई।

हमारी बालीबाल टीम में अधिकांश खिलाड़ी नए थे, मगर जहां, पिछली बार हमारी टीम पहले ही राउंड में पंजाब पुलिस से हार गई थी। वहां इस बार उसने पंजाब पुलिस को दूसरे राउंड में कड़ा मुकाबला दिया। प्रतियोगिता की विजेता पंजाब पुलिस ही रही।

पिछले वर्ष के.रि.पु.बल. की टीम अखिल भारतीय पुलिस खेलों के हाकी मुकाबलों के लिए क्वालीफाई भी नहीं कर पाई थी। मगर इस वर्ष पहले राउंड में मणिपुर पुलिस को हराने के बाद उस का मुकाबला सेमी फाइनल में बी.एस.एफ. के साथ हुआ, जिसे टाई ब्रेकर में बी.एस.एफ. ने जीत लिया।



है. का. प्रेमजीत सिंह 200 मी. मुकाबले के अंतिम चरण में
बास्केट बाल प्रतियोगिता में के.रि.पु.बल की टीम इस वर्ष तीसरे स्थान पर रही।
गत वर्ष उसे इस प्रतियोगिता में चौथा स्थान प्राप्त हुआ था।



है. का. अमृत पाल-3000 मी. बाधा दौड़ में स्वर्ण पदक

बल के कबड्डी प्रेमियों को इस बार के मुकाबलों में कुछ निराशा हाथ लगी। बल की टीम तीसरे स्थान पर रही, जबकि पिछले वर्ष वह दूसरे स्थान पर थी।

जूडो की टीम भी इस वर्ष अपने प्रदर्शन में कोई सुधार नहीं कर पायी और उसे तीसरे स्थान पर ही संतोष करना पड़ा।

जिमनास्टिक टीम ने जरूर अपने प्रदर्शन को सुधारा तथा टीम ने पिछले वर्ष की चौथी स्थिति से निकल कर इस वर्ष तीसरा स्थान प्राप्त किया।

कुश्ती प्रतियोगिताओं में भी बल की टीम ने दो रजत पदक प्राप्त किए।

संक्षिप्त समाचार

श्री शर्मा को विदाई

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जन सम्पर्क अधिकारी श्री अरविन्द नारायण शर्मा पदोन्नति पर पत्र सूचना कार्यालय (लखनऊ) में उप प्रधान सूचना अधिकारी की हैसियत से अपना नया पदभार 1, मार्च '94 को संभालने जा रहे हैं। 28 फरवरी 94 को के.रि.पु. बल मुख्यालय में उन्हें भावभीनी विदाई दी गई। श्री अरविन्द नारायण शर्मा लगभग चार वर्षों तक के.रि.पु.बल. में जन सम्पर्क अधिकारी के रूप में कार्यरत रहे।

केन्द्रीय सूचना सेवा के अधिकारी श्री अरविन्द नारायण शर्मा ने इस पद पर आने से पूर्व पत्र सूचना कार्यालय दिल्ली में रेलवे, भूतल परिवहन, प्रेस सुविधा, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सूचना अधिकारी के रूप में कार्य किया। श्री शर्मा कुछ समय के लिए दिल्ली पुलिस के जन सम्पर्क अधिकारी भी रहे।

श्री शर्मा को के.रि.पु.बल में रहते हुए जन सम्पर्क के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं

के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से भी सम्मानित किया गया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 37 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जनवरी 94 में देश भर में 37 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान आतंकवादियों के साथ हुई सात मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए। इनमें पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में हुई मुठभेड़ें भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में मारे गए आतंकवादियों में बब्बर खालसा गुट के दो स्वयंभू ले.जन. सजन हैप्पी तथा सरदूल सिंह धूला भी शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 24 घातक हथियार भी बरामद किए। बरामद हथियारों में सात विभिन्न प्रकार की रिवाल्वरें/पिस्तौलें, दो ए.के. 47 राइफलें, 14 देसी बंदूकें तथा एक देशी 2 इंच मोर्टार शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के तीन कार्मिक गंभीर रूप से घायल हुए।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ों में दिखाई गई वीरता के लिए महानिदेशक महोदय ने बल के पांच कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की है।

70 बटालियन के नायक रोकम दिगम तथा कांस्टेबल ड्राइवर बिछेंदर सिंह को यह सम्मान 12 नवम्बर 91 को पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए दिया गया है।

90 बटालियन के हैड कांस्टेबल श्री पाल सिंह तथा कांस्टेबल रूप सिंह पंडराम को यह सम्मान 24 सितम्बर-1992 को पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए दिया गया।

75 बटालियन के इंस्पेक्टर हीरालाल को 14 जून 1992 को पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए यह डिस्क प्रदान की गई है।

सोना बरामद

जम्मू स्थित (प्रथम) बटालियन की एक कम्पनी के जवानों ने जम्मू शहर के तालाब टीला क्षेत्र में एक नाका ड्यूटी के दौरान 20 जनवरी 94 को स्कूटर पर सवार दो कुख्यात तस्करों को गिरफ्तार कर उनके पास से 11 किलो 300 ग्राम वजन के 98 सोने के बिस्कुट बरामद किए। इस सोने की कीमत लगभग 54 लाख रुपए है।

आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक को विदाई

31 दिसंबर, 93 को वजोराबाद दिल्ली स्थित रॉपेड एक्शन फोर्स की 103 बटालियन स्थल पर आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री सी.पाल. सिंह को उनकी सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई दी गई।



श्री सी. पाल सिंह

इस मौके पर जवानों को सम्बोधित करते हुए श्री सी.पाल.सिंह ने कहा कि आर.ए.एफ. ने अपना प्रारंभ बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया है तथा उन्हें आशा है कि आने वाले वर्षों में भी आर.ए.एफ. इसी प्रकार अपने उत्साह को बनाए रखेगा। उन्होंने कहा कि जल्दी ही रॉपेड एक्शन फोर्स की दसों बटालियनें तैनाती के लिए तैयार हो जाएंगी। आर.ए.एफ. की पांच बटालियनें पहले ही कार्यरत हैं तथा बाकी की पांच बटालियनों का प्रशिक्षण भी शीघ्र ही प्रारंभ हो जाएगा।

श्री सी.पाल. सिंह के.रि.पु. बल काडर के पुलिस अधिकारी थे।

गणतंत्र दिवस परेड में बल में टुकड़ियां

इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर अरूणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर में आयोजित एक भव्य समारोह में 24 बटालियन की एक टुकड़ी ने भी भाग लिया। इस टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ मार्चिंग टुकड़ी घोषित किया गया। बल की इस टुकड़ी को सर्वश्रेष्ठ मार्च पास्ट के लिए अरूणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री गंगोंग अपांग ने एक ट्रॉफी भी भेंट की। इस परेड में 15 अन्य बलों की टुकड़ियां भी शामिल थीं।

इस के अतिरिक्त राज्य के सेपा व जीरो क्षेत्रों में आयोजित विशेष समारोहों में भी इस बटालियन की टुकड़ियों ने भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किए।

बेहतर सुविधाओं के लिए अनुमोदन

सरकार ने 11 ग्रुप केन्द्रों के सर्जन के साथ साथ 10 वर्तमान ग्रुप केन्द्रों का 2-3

बटालियन से 3-4 बटालियन वाला दर्जा बढ़ाने तथा नए व वर्तमान ग्रुप केन्द्रों, पुलिस महानिरीक्षकों और पुलिस उप महानिरीक्षकों के कार्यालयों, प्रशिक्षण संस्थानों व कैम्प स्थलों के लिए भूमि अधिग्रहण करने का अनुमोदन कर दिया है। सरकार ने कार्मिकों की आवासीय परेशानी को कम करने के लिए विभिन्न श्रेणियों के 89 मकानों सहित लगभग 12,79,41,600 रुपए की लागत के बहुत से निर्माण कार्यों की मंजूरी दे दी है।

जिस राष्ट्र की संस्कृति व प्राचीन इतिहास नष्ट हो जाएंगे, उस राष्ट्र का विनाश निश्चित रूप से होगा।

—व्यास

जोखिम निधि लाभ

माह जनवरी 94 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जोखिम निधि से मृत्यु के 43 मामलों में कुल 15,17,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के 10 मामलों में कुल 1,50,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि “बी” विशेष कल्याण निधि से भी इस के सदस्य कार्मिकों की मृत्यु के छः मामलों में कुल 1,80,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

नागपुर में हिन्दी वाद विवाद प्रतियोगिता

के.रि.पु. बल ग्रुप केन्द्र नागपुर में 22 दिसम्बर 93 को एक अंतर विभागीय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नागपुर स्थित विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों के 40 अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अपर उप महानिरीक्षक श्री अ.गुहाराय ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

जवानों द्वारा रक्तदान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय के स्थापना अनुभाग-1 के अनुभाग अधिकारी जे.सी.वर्मा की पत्नी 6 नवम्बर 93 को गोस अनीमिया के कारण गंभीर रूप से अस्वस्थ होने के कारण नई दिल्ली बेस अस्पताल में चिकित्सा के लिए भर्ती थीं।

उनकी हालत काफी चिंताजनक थी, उन्हें तत्काल रक्त दिया जाना आवश्यक था, किन्तु उनके ग्रुप का रक्त उपलब्ध नहीं था। ऐसे में 3 बटालियन के दो कांस्टेबल

अजीत सिंह और सत्य नारायण रेड्डी सूचना मिलने पर तत्काल रक्तदान के लिए तैयार हो गए।

दोनों कांस्टेबलों द्वारा उचित समय पर रक्तदान करने के कोई संभावित अनहोनी होने से टल गई।

माह जनवरी 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी '94 में मृत्यु की प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

सफाई कर्मचारी गयारसी देवी (गु. के. गांधी नगर), नायक/रे. आ. मोहम्मद कलाम अंसारी (2 सिग.), नायक/रे. आ. अभिमन्यु गिरि (3 सिग.), हैड कांस्टेबल गुमान सिंह (95 बटा.), कांस्टेबल सूरजभान सिंह (गु. के. नीमच), कुक हरी राम वर्मा (40 बटा.), हैड कांस्टेबल विजय कुमार सिंह (55 बटा.) नायक विरेंद्र सिंह (104 बटा.), नायक नजर हुसैन (7 बटा.) नायक/टेल. एम. ए. खादर (गु. के. आवड़ी), बारबर के. जी. प्रभाकरन (18 बटा.), इंस्पेक्टर हनुमंत सिंह (गु. के. आवड़ी), कांस्टेबल जी. राजेश्वर राव (69 बटा.), सफाई कर्मचारी रामपाल (23 बटा.), कुक धर्म सिंह (20 बटा.) तथा नायक जे. के. सोई (गु. के. दुर्गापुर)। इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार दिसंबर '93 माह में नायक सोनेलाल (37 बटा.) कांस्टेबल हेमनाथ राय (92 बटा.), कांस्टेबल होशियार सिंह (2 बटा.) तथा ला. नायक/फिटर राम कुमार (100 आर.ए.एफ.) की भी मृत्यु हुई।

श्री नगर में हिन्दी कार्यशाला

पुलिस उप महानिरीक्षक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, श्रीनगर द्वारा कश्मीर घाटी में स्थित कार्यालयों तथा यूनिटों के कर्मचारियों के लिए 20 से 27 जनवरी 94 तक संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन), श्रीनगर रेंज कार्यालय तथा घाटी में तैनात 7 बटालियनों के 29 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के अन्त में प्रतियोगियों के लिए हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन की प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

यद्यपि कश्मीर घाटी वर्तमान समय में विद्रोही गतिविधियों से ग्रस्त है तथा विद्यमान परिस्थितियों में कर्मचारियों को इस कार्य के लिए कार्यमुक्त करके हिन्दी कार्यशाला के लिए एक स्थान पर एकत्र करना तथा कक्षा के बाद उन्हें संबंधित कार्यालय/यूनिट में भेजना जोखिम भरा कार्य है, किन्तु इसके सफल संचालन के लिए रेंज उप महानिरीक्षक ने विशेष प्रबंध कर कार्यशाला के सफल सम्पादन में विशेष योगदान दिया।

विश्वास का जन्म हृदय से होता है, बुद्धि से नहीं। हृदय ही एक ऐसी जगह है, जहां

इसके सिवाय और कोई वस्तु उपलब्ध नहीं होती।

—मैक्सिम गोर्की

प्रार्थना से अत्यन्त प्रबल शक्ति उपलब्ध की जा सकती है। वह शक्ति भू गुरुत्वाकर्षण के समान ही वास्तविकता है।

—महात्मा बुद्ध

हम उपदेश सुनते हैं मन भर, देते हैं टन भर, किन्तु ग्रहण करते हैं कण भर।

—अलबर्ट

आओ हंसे

भिखारी : “बाबू जी, लंगड़े को पांच पैसे दे दो।”

बाबूजी : अभी खुले नहीं है, फिर किसी दिन ले जाना।

भिखारी : “इसी उधार में तो हजारों रुपए डूब गए।”

मालकिन : “लेकिन इस बात का तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुमने सेठ जगन्नाथ के यहां एक साल तक भोजन बनाया है।”

नौकर : “मेरे पास ऐसे कई बर्तन हैं हजूर, जिन पर उनका नाम खुदा हुआ है।

“जो बेवकूफ होते हैं, अपना मतलब ठीक से समझा नहीं सकते”—पहले व्यक्ति ने कहा।

“माफ करना, मैं आपका अभिप्राय समझा नहीं।”—दूसरे व्यक्ति ने मुस्करा कर जवाब दिया।

होटल वाले ने एक नौकर रखा। शर्त यह थी कि अगर उसके हाथों एक भी प्लेट टूटी तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। पहले ही दिन वह प्लेटें लेकर जा रहा था कि उसके हाथों सारी प्लेटें छूट गईं और टुकड़े-टुकड़े हो गईं। वह मालिक के पास आया और बोला, “सारी प्लेटें टूट गईं और मैं जा रहा हूँ।”

पति : “मैं असूल का पक्का हूँ, समझ लो, अपनी सीमा रेखा से अलग नहीं हो सकता।”

पत्नी : “तो सुन लो, मैं भी बात की पक्की हूँ, तुम्हारी सीमा और रेखा को खूब पहचानती हूँ। उनसे तुम्हें अलग न किया तो कहना।”

पवन देर से घर पहुंचा तो उसकी पत्नी मुंह फुलाए बैठी थी। पवन ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—“समझदार पत्नियां ऐसे नहीं करतीं।

“और समझदार पति”—पत्नी ने पूछा।

“समझदार लोग पति ही नहीं बनते।” पवन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

नाई का उस्तरा तेजी से गले के नजदीक चल रहा था। शेव कराने वाला बोला,

“भाई, तुम्हारे पास एक और उस्तरा होगा।”

“हां साहब, मगर आप क्या करेंगे।” नाई आश्चर्य से बोला।

“अपनी रक्षा” शेव कराने वाला बोला।

“आप क्या पीते हैं। चाय, काफी या कुछ और” डाक्टर ने मरीज से पूछा

“डाक्टर साहब आप बेकार में तकल्लुफ कर रहे हैं। मैं घर से खा-पीकर ही चला हूं”—मरीज बोला।

इंस्पेक्टर (एम.) एन. आर. देवनानी
स्थापना अनुभाग
महानिदेशालय

दो कविताएं

के.रि.पु.बल की वीरागंना

भारत की पावन माटी को नमस्कार करती हूं
मैं के.रि.पु.बल की वीरागंना वतन से प्यार करती हूं।
जान बूझकर चुना है मैंने रास्ता कठिनाईयों का,
हर मुश्किल में साथ निभाऊ वीर सिपाहियों का।
दुश्मन का जीना सदा दुश्वार करती हूं।
मैं के.रि.पु.बल की वीरागंना वतन से प्यार करती हूं।
रानी झांसी की तरह मैं भी एक रानी हूं,
फिर दुहराने के लिए आ गई कहानी हूं।
हर किस्म के शस्त्रों से श्रृंगार करती हूं,
मैं के.रि.पु.बल की वीरागंना वतन से प्यार करती हूं।
मेरे दिल में देश प्यार के उमड़ रहे तूफान,
मैं रहूं न रहूं, रहेगा मेरा देश महान,
देश की खातिर मर मिटने का इक़रार करती हूं।
मैं के.रि.पु.बल की वीरागंना वतन से प्यार करती हूं।
ऐसी मिली ट्रेनिंग मेरी काया पलट गई,
फूलों सी नाजुक थी अब फौलाद में बदल गई।
मार छलांगे सभी आष्टीकल पार करती हूं।

मैं के.रि.पु.बल को वीरांगना वतन से प्यार करती हूँ।
फूलों की तरह रहूँ महकती हर रंजो गम में,
नगमें गाती रहूँ वतन के अपने ही मन में
“गुरदयाल सिंह” के गीतों में इसका इजहार करती हूँ
मैं के.रि.पु.बल की वीरांगना वतन से प्यार करती हूँ

गुरदयाल सिंह, उ.नि.
समूह केन्द्र, दुर्गापुर
आर्श वरकशाप न.-7

के.रि.पु.बल के जवान

इस धरती पर उतरे वीर हैं हम,
इस धरा को स्वर्ग बनाएंगे,
मर जाएंगे, कट जाएंगे
पर नाम अमर कर जाएंगे
तेजस्वी हैं, धीर हैं हम,
हम के.रि.पु.बल के जवान हैं।
जीवन सर्वस्व बलिदान किया है
यह देश हमारा है
इस देश को महान बनाना है
मृत्यु से अब क्या घबराना है
तेजस्वी हैं, धीर हैं हम
हम के.रि.पु.बल के जवान हैं।
इस धरती को रक्त से सींचा है,
प्यार और श्रद्धा से संवारा है
धर्म-जाति के बंधन तोड़े
सह-अस्तित्व को अपनाया है
तेजस्वी हैं, धीर हैं हम,
हम के.रि.पु. के जवान हैं।

अतुल शर्मा, स.उ.नि.
परिचालन महानिदेशालय, नई दिल्ली



88 महिला बटालियन की कुमारी शीजा-ऊंची कूद में नया कीर्तिमान।

मुख्य सम्पादक: ए० एन० शर्मा। सम्पादक: अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार: सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक कें० रि० पु० बल, ब्लाक-। सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर से ए० एन० शर्मा।
मुद्रक: सी० आर० पी० प्रेस, झड़ोदा कला, नई दिल्ली-110072।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग: फ्लेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन: 3275184, 3266571

सी० आर० पी० एफ० समाचार

खंड-VII

अंक-2

31 मार्च 1994,

10 चैत्र, शक 1916



अखिल भारतीय पुलिस खेलों के हाई जम्प मुक़ाबलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली शीला मोल से परिचय प्राप्त करते हुए
बल के महानिदेशक एल.वी.एम. बिपाठी

छाया-सतीश खन्ना

सम्पादकीय

सी.आर.पी.एफ. समाचार के प्रधान संपादक श्री अरविन्द नारायण शर्मा पदोन्नति पर पत्र सूचना कार्यालय लखनऊ में उप प्रधान सूचना अधिकारी के रूप में नियुक्त हुए हैं। जहां सी.आर.पी.एफ. समाचार परिवार उन्हें उनकी इस नियुक्ति पर बधाई देता है, वहीं उन्हें विदाई देते हुए संजीदा भी है। श्री शर्मा लगभग 4 वर्ष तक सी.आर.पी.एफ. समाचार के प्रधान सम्पादक रहे। हम उन्हें उनके उज्ज्वल एवं सफल भविष्य के लिए अपनी शुभ कामनाएं देते हैं। साथ ही हम अपने पाठकों को भी विश्वास दिलाते हैं कि श्री शर्मा द्वारा इस पत्रिका को रोचक एवं सारगर्भित बनाने के लिए शुरु किये गये प्रयासों को हम जारी रखेंगे।

इस वर्ष के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में हमें तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। पिछले साल हम इन खेलों में पांचवें स्थान पर थे। हालांकि गत वर्ष की तुलना में हमारी स्थिति संभली है, किन्तु फिर भी यह स्थिति संतोषजनक नहीं है। किसी भी खिलाड़ी या उस के विभाग को पूर्ण आत्म गौरव और संतुष्टि की प्राप्ति न केवल शीर्ष पर पहुंच कर अपितु उस स्थान पर जमे रह कर ही प्राप्त हो सकती है। यह सही है कि खेल खेल की भावना से खेले जाने चाहिए, उनमें किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत द्वेष या द्वंद आड़े नहीं आना चाहिए। खेलों में हार जीत विशुद्ध रूप से प्रतिभा और सतत अभ्यास का परिणाम है। किन्तु यह परिणाम पूर्ण विराम नहीं है। हमारी आज की पराजय, कल की एक बड़ी विजय के पथ का सौपान बन सकती है। आवश्यकता अपनी कमियों को आंक कर सतत अभ्यास से प्रतिभा को निखारने की है। इस के लिए एक अकेला खिलाड़ी ही उत्तरदायी नहीं है। उसे अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए पूरा माहौल, सुविधाएं और वक्त चाहिए। यह दायित्व विभाग का है कि वह खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने के लिए सतत अभ्यास तथा आधुनिकतम प्रशिक्षण के लिए साधन तथा हर संभव सुविधा उपलब्ध कराए विशेषकर जिन प्रतियोगिताओं में हम पिछड़ जाते हैं, उन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही जरूरत है, खिलाड़ियों को उचित प्रोत्साहन देने की ताकि उन का मनोबल बना रहे। इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम इस वर्ष उठाया गया है। अखिल भारतीय पुलिस खेलों तथा अन्य राष्ट्रीय खेलों में स्थान प्रदान प्राप्त करने वाले 34 खिलाड़ियों को महानिदेशक महोदय ने एक एक पद की पदोन्नति दे दी है। यह एक सराहनीय कदम है।

एक बात हमें अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि अपनी विजय के द्वारा पूरे विभाग और देश के लिए यश बटोरने वाला खिलाड़ी कभी अकेला नहीं जीतता। निस्संदेह उसकी प्रतिभा, उसका संघर्ष, उसका परिश्रम सर्वोपरि होता है, मगर उस को आधार प्रदान करने के लिए पूरे महकमे को उसी शिद्दत, उसी समर्पण के साथ जुटना पड़ता है। यदि खिलाड़ी जीतता है, तो यह सबकी जीत होती है, तो फिर हार के लिए हम अकेले खिलाड़ी को दोषी कैसे ठहरा सकते हैं।

खेलाड़ियों को पदोन्नति तथा बल के जवानों द्वारा रक्तदान पर विशेष लेखों के साथ सी.आर.पी.एफ. समाचार के सभी स्थायी स्तम्भ इस अंक में हैं।

सुदेव चक्रवर्ती

बी० चक्रवर्ती।

राज्यपाल द्वारा 16 बटा. का दौरा



मणिपुर के राज्यपाल श्री वी.के. नायर 16 बटा. के जवानों के साथ

मणिपुर के राज्यपाल मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) श्री वी.के. नायर ने लाम्फेट, इम्फाल स्थित बल की 16 बटालियन स्थल का दौरा किया तथा बल के उन कार्मिकों को बधाई दी जिन्होंने एक मुठभेड़ में कई घातक आतंकवादियों सहित के.एन.एफ. के मुखिया नेहलून किपगेन को भी मार गिराया था।

राज्यपाल महोदय ने बल के कार्मिकों के कार्य की प्रशंसा करते हुए उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। इस मौके पर आयोजित भव्य समारोह में मणिपुर पुलिस के महानिदेशक एम.जे.शर्मा, महानिरीक्षक बिमल चंद्र सिंह तथा बल के उप

महानिरीक्षक एम.आर. मालेक भी उपास्थित थे।

ज्ञान गंगा

* गलती सभी करते हैं परन्तु मूर्ख के अतिरिक्त उसे कोई भी नहीं बनाए रखता।

—स्वेट मार्टेन

* गुण मनुष्य के वश में हैं, प्रतिभा के वश में मनुष्य स्वयं होता है।

—लावेल

* सुखी परिवार छोटा स्वर्ग है।

—स्वेट मार्टेन

* नरक ईश्वर का न्यायालय है और स्वर्ग उसका नन्दन वन।

—अज्ञात

* मन चंचल है, परन्तु अभ्यास तथा वैराग्य से वश में किया जा सकता है।

—गीता

* हमारे जीवन का प्रत्येक अगला दिन पिछले दिन से कुछ ऐसे ढंग का हो, जिसमें हमने कुछ सीखा है।

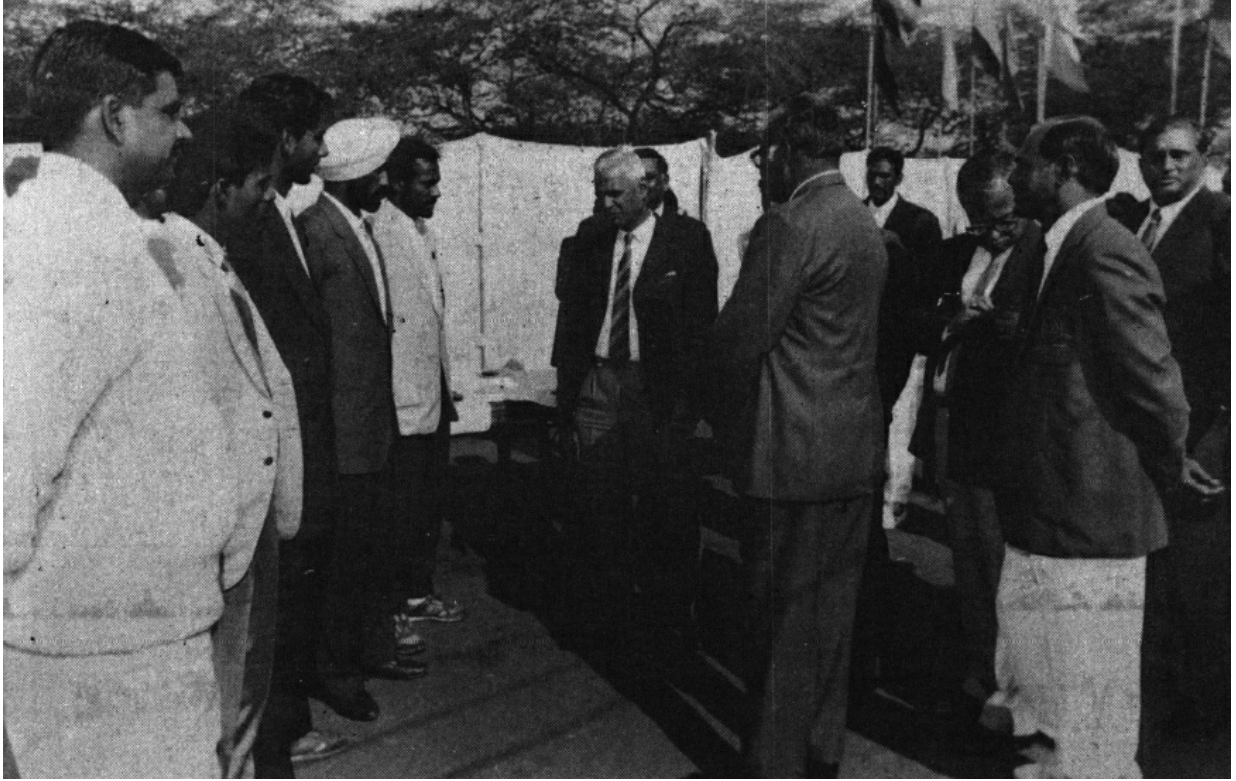
—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 34 खिलाड़ी पदोन्नत

विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में विशिष्ट स्थान पाने वाले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों के सम्मान में 9 मार्च, 1994 को रविन्द्र रंगशाला नई दिल्ली स्थित 32 बटालियन स्थल पर आयोजित एक समारोह में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने बल के 34 खिलाड़ियों को उनकी योग्यता के पुरस्कार स्वरूप पदोन्नतियां प्रदान की।

पूने में हुए 1994 के राष्ट्रीय खेलों के 65 कि.ग्रा. श्रेणी के जूडो मुकाबले में स्वर्ण पदक जीतने वाले 83 बटालियन के सब इंस्पेक्टर सिद्धार्थ सेठ को इंस्पेक्टर पद पर, वाल्टिंग हार्स मुकाबलों में रजत पदक जीतने पर ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर के नायक चंदू कोयले को हैड कांस्टेबल पद पर, 10 बटालियन के कांस्टेबल राजेश कुमार को कुश्ती के 130 कि.ग्रा. वर्ग के मुकाबले में स्वर्ण पदक जीतने पर हैड कांस्टेबल पद पर, 53 बटालियन के लांस नायक नरेंद्रकुमार को जूडो के 80 कि.ग्रा. मुकाबले में कांस्य पदक जीतने पर नायक पद पर, 24 बटालियन के कांस्टेबल गुमान सिंह को जूडो प्रतियोगिता की 78 कि.ग्रा. श्रेणी में कांस्य पदक जीतने पर नायक पद पर तथा

जूडो में ही 78 कि.ग्रा. श्रेणी में कांस्य पदक जीतने पर 9 बटालियन के कांस्टेबल शौभनाथ को नायक पद पर पदोन्नत कर दिया गया है।



पदोन्नति प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी



पदोन्नत खिलाड़ियों के साथ महानिदेशक महोदय

1993 को इंटर स्टेट नेशनल चैंपियनशिप तथा 1994 के आखिल भारतीय पुलिस खेलों की विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान हासिल करने पर 86 बटा. के हैड कांस्टेबल ए.डी. गणपति तथा 98 बटालियन के हैड कांस्टेबल अमृतपाल सिंह को सब-इंस्पेक्टर पद पर, 9 बटालियन के नायक एच.एम.माहतो, तथा लांस नायक गोकुल चंद माहतो को हैड कांस्टेबल पद पर पदोन्नत कर दिया गया है।

1994 के अखिल भारतीय पुलिस खेलों की विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान हासिल करने पर 86 बटालियन के हैड प्रेमजीत सिंह को सब इंस्पेक्टर पद पर, 88 बटालियन की लांस नायक शीजामोल, लांस नायक कनक लता तथा कांस्टेबल प्यारी पूर्ति को हैड कांस्टेबल पद पर, लांस नायक इनोबा सिंह तथा रघुवीर सिंह को नायक पद पर तथा कांस्टेबल एच.एम.दास गणेश्वरी, राम कुमार, शिवाजी निक्कम, नरेश कुमार, वी.वासुदेवन, मोहम्मद सोमधनी, श्याम लाल, रमेश कुमार, जे.टोपनो, टोपर कुजर, संदीप सिंह, सी.वी. चीबा तथा टी.शीजू को लांस नायक पद पर पदोन्नत कर दिया गया है।

आओ हंसें

* 'यार मेरे पड़ोसी बहुत गलत आदमी हैं। रात के 2 बजे घर का दरवाजा खटखटाने लगे।'

'तब तो तुम्हारी नींद में खलल पड़ा होगा।'

'नहीं यार, मुझे गाने का अभ्यास बंद करना पड़ा।'

अफसर : 'तुम परेड में लेट क्यों आए?'

जवान : 'साहब, मैं हर रोज 15 मिनट में तैयार हो जाता हूं। बस आज कुछ लेट हो गया।'

अफसर : '15 मिनट? मैं तो 10 मिनट में तैयार हो जाता हूं।'

जवान : 'लेकिन हजूर, मैं 10 मिनट में तैयार नहीं हो सकता।'

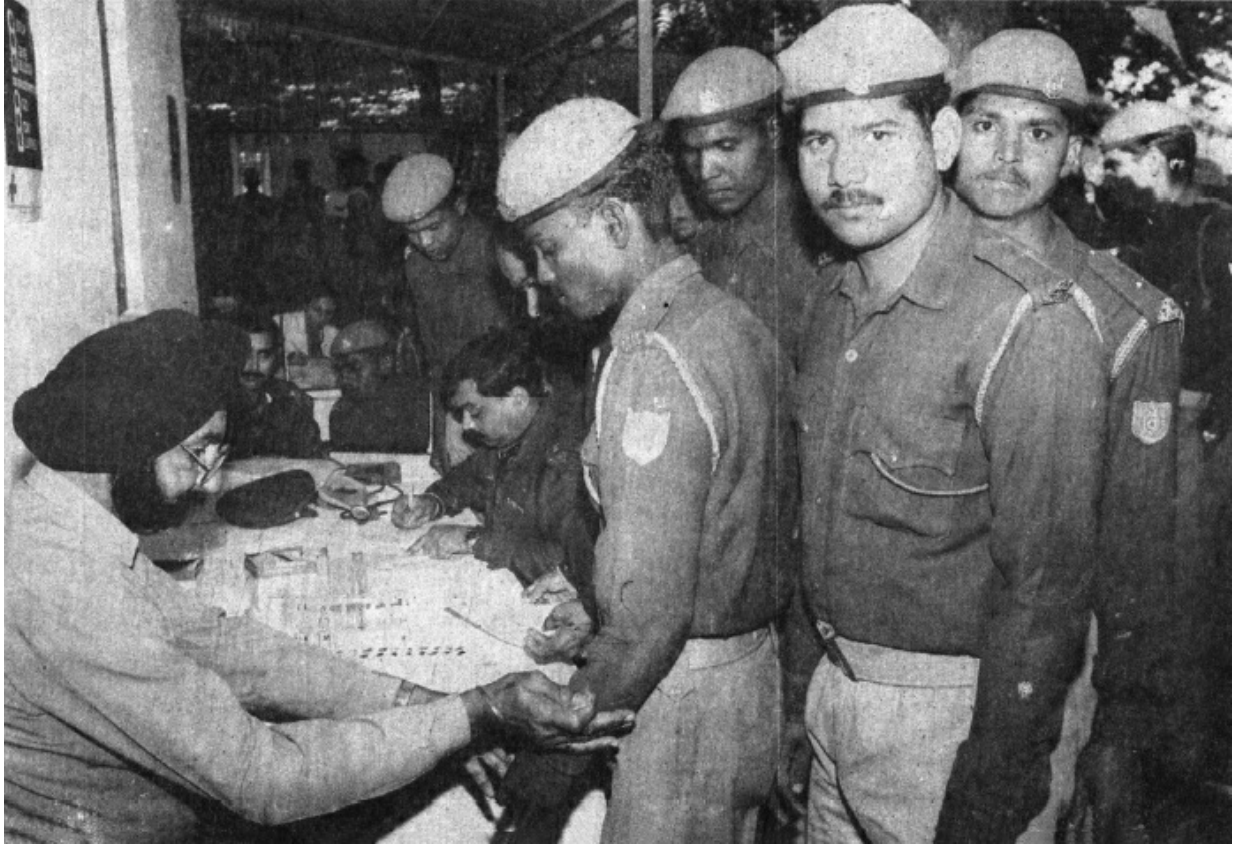
अफसर : 'मगर क्यों नहीं?'

जवान : 'क्योंकि मुझे नहाना पड़ता है।'

बल के 450 कार्मिकों द्वारा रक्तदान



दीप प्रज्वलित कर रक्तदान शिविर का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी



रक्तदान के लिए अपने रक्त की जांच कराते हुए बल के सदस्य



रक्तदान शिविर में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी का स्वागत करते हुए रेड क्रॉस के डा. एम. एल. गुप्ता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अस्पताल, आर.के.पुरम में 8 मार्च, 1994 को आयोजित एक विशाल रक्तदान शिविर में बल के 450 से भी अधिक कार्मिकों ने रक्तदान किया।

भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी के सहयोग से के.रि.पु.बल अस्पताल द्वारा आयोजित इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने किया।

रेड क्रॉस के डॉ.एम.एल.गुप्ता की देख रेख में आयोजित इस शिविर में रक्तदान करने वाले कार्मिकों में बल की लगभग सौ महिला कार्मिक भी शामिल थीं। उप निदेशक (प्रशासन) श्री भूदेव चक्रवर्ती तथा उप महानिरीक्षक नई दिल्ली श्री बी.एम. सारस्वत सहित बल के अन्य कई वरिष्ठ अधिकारियों ने भी स्वेच्छा से रक्तदान किया।



रक्तदान कर रही 88 महिला बटालियन की जवानों से बात करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

संक्षिप्त समाचार

के.रि.पु.बल ने 172 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल जवानों ने माह फरवरी, 1994 में दे भर में आतंकवादियों तथा देशद्रोही तत्वों के साथ आठ मुठभेड़ों तथा अन तलाशी अभियानों में 172 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया।

इन अभियानों में बल के जवानों ने 44 घातक हथियार तथा भारी संख्या में सजीव गोली बारूद भी बराम किया। बरामद हथियारों में एक देश ए.के. 47 राइफल, पांच विभिन्न प्रकार की रिवाल्वर/पिस्तौलें तथा 38 विभिन्न प्रकार की बन्दूकें शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल का एक जवान वीरगति को प्राप्त हुआ तथा 11 कार्मिक गंभीर रूप से घायल हुए।

तीन कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने पंजाब तथा जम्मू कश्मीर आतंकवादियों के विरुद्ध संघर्ष में अतुलनीय वीरता और साहस का प्रदर्शन करने वाले बल के तीन कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की है।

18 नवम्बर, 1990 को कश्मीर घाटी में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने पर 29 बटालियन के डिप्टी कमान्डेन्ट श्री टी.वी.नायर को महानिदेशक महोदय की प्रशंसा डिस्क देने की घोषणा की गई है।

इसी प्रकार 15 सितम्बर '92 को पंजाब में आतंकवादियों के विरुद्ध संघर्ष में

प्राप्त उल्लेखनीय सफलता के लिए 102 बटालियन के डिप्टी कमान्डेन्ट प्रेम प्रकाश तथा 14 बटालियन के सहायक कमान्डेन्ट रति राम को यह सम्मान प्रदान किया गया है।

माह फरवरी, 1994 में मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

माह फरवरी, 1994 में बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कुक हरीकांत (53 बटा.), कांस्टेबल बाबूलाल (प्रथम सिगनल बटा.) (कांस्टेबल परमानंद (120 बटा.), नायक प्रताप सिंह (83 बटा.), कांस्टेबल उत्तम भाई पटेल (66 बटा.), लांस नायक पुरषोत्तम लाल (7 बटा.), बारबर मोहिंदर सिंह (2 बटा.), नायक हरी सिंह (41 बटा.), कांस्टेबल दिल मोहम्मद (ग्रुप.के. गुवाहाटी), कांस्टेबल टी.आर.मोहनराव (74 बटा.), कांस्टेबल जी.आर.नायक (111 बटा.) तथा इंस्पेक्टर एम.पी. करीयप्पा (ग्रु.के.आवड़ी)

इन के अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार नवम्बर '93 में 51 बटा. के इंस्पेक्टर गोबिंद सिंह, दिसम्बर, 1993 में 95 बटालियन के नायक कुट्टीमणि तथा जनवरी '94 में 64 बटालियन के इंस्पेक्टर प्रीतम सिंह की भी मृत्यु हुई।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय जोखिम निधि से माह फरवरी '94 में मृत्यु के 24 मामलों में कुल 8,82,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की केंद्रीय कल्याण निधि तथा सी बी एफ की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के पांच मामलों में कुल 75,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि 'बी' स्पेशल कल्याण निधि से भी इस के छ सदस्यों की मृत्यु के मामलों में कुछ 1,70,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

एड्स पर सेमिनार

विश्व एड्स दिवस के अवसर पर 30 नवम्बर, 1993 को ग्रुप केन्द्र हैदराबाद स्थित बेस अस्पताल में दो दिवसीय एड्स सेमिनार का आयोजन किया गया। बेस अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डी.एन.कर, डा. मोहंती, डा. श्रीलक्ष्मी, डा. बी.एस. मिश्रा तथा डा.ए.के.मेहता ने एड्स रोग के विभिन्न पहलुओं, इनके कारणों तथा इससे बचाव के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला। सेमिनार में महिलाओं में एड्स की रोकथाम पर भी चर्चा हुई। सेमिनार का उद्देश्य बल के कार्मिकों में इस रोग के संबंध में जागरूकता पैदा करना था। इस सेमिनार में एड्स से बचाव पक्षों पर अधिक प्रकाश डाला गया। इस सेमिनार में बल के 600 से भी अधिक कार्मिकों एवं उनके परिजनों ने भाग लिया।

राक्षस जहाँ स्वयं नहीं पहुँच पाता वहाँ मादेरा को भेज देता है।

—गुरुनानक

जीवन में अनुभव की उतनी ही आवश्यकता होती है, जितनी उपासना की।

—भगवती चरण वर्मा

फुरसत में अपना ज्ञान बढ़ाइए

नीचे हमारे सौर मंडल, पृथ्वी तथा मानव जीवन से संबंधित कुछ प्रश्न दिए गए हैं। इन प्रश्नों का उत्तर दीजिए और देखिए कि अपने सौर मंडल के विषय में आप कितना जानते हैं। अपने उत्तरों की जाँच पृष्ठ सं० 11 पर दिए गए उत्तरों से कीजिए।

प्रश्न : 1-सौर का क्या अर्थ है?

प्रश्न : 2-पृथ्वी की परिधि कितनी है?

प्रश्न : 3-सौर मंडल का सबसे दूर स्थित ग्रह कौन सा है?

प्रश्न : 4-हमारा सूर्य किस तारामंडल में स्थित है?

प्रश्न : 5-क्या सूर्य भी गतिशील है?

प्रश्न : 6-पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी कितनी है?

प्रश्न : 7-बुध (मरकरी) वर्ष कितने दिन का होता है?

प्रश्न : 8-सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में प्लूटो को कितना समय लगता है?

प्रश्न : 9-बृहस्पति ग्रह में कितने चन्द्रमा हैं?

प्रश्न : 10-शनि ग्रह में कितने चन्द्रमा हैं?

प्रश्न : 11-हमारी आकाश गंगा कब उत्पन्न हुई?

प्रश्न : 12-सूर्य कब प्रकट हुआ?

प्रश्न : 13-हमारे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कब हुई?

प्रश्न : 14-सूर्य के ग्रह कौन-कौन से हैं?

प्रश्न : 15-सृष्टि की रचना कब से शुरू हुई?

प्रश्न : 16-इस पृथ्वी पर डायानासोर कब पाए जाते थे?

- प्रश्न : 17-हमारी पृथ्वी को उत्पत्ति कब हुई?
- प्रश्न : 18-मानव की रचना कब हुई?
- प्रश्न : 19-इस पृथ्वी पर क्रो मैगनोन मनुष्य का काल बताइए?
- प्रश्न : 20-अब तक पृथ्वी पर कितने मनुष्य जन्म ले चुके हैं?
- प्रश्न : 21-बच्चे के जन्म में कितना समय लगता है?
- प्रश्न : 22-विश्व की वर्तमान जनसंख्या कितनी है?
- प्रश्न : 23-मनुष्य के शरीर में कितनी कोशिकाएं हैं?
- प्रश्न : 24-प्रत्येक कोशिका में कितने क्रोमोसोम (गुण सूत्र) होते हैं?
- प्रश्न : 25-औसतन लगभग कितने जुड़वा बच्चे जन्म लेते हैं?

प्रस्तुति-भूदेव चक्रवर्ती

सी.आर.पी.एफ.

अपनी सी.आर.पी. है सबसे महान,
देश के लिए बस होते हुए कुर्बान।
मर जाये मिट जाये हो जाये बलिदान,
देश की शान सी.आर.पी. जवान।
पूर्वाचल से ये आवाज आई है,
किस गद्गार ने छेड़ी लड़ाई है।
ये सब तो आपस में लड़ते रहेंगे,
जाति और पैसे के लिय मरते रहेंगे।
किसने तुमको यूं बहकाया है,
आपस में ही तुमका झगड़ाया है।
पैसों की खातिर बिकता नहीं ईमान,
मर जाये मिट जाये हो जाये बलिदान।
भारत माता का है बहता लहू,
खौला नहीं क्या तुम्हारा ये खून।
खाई कसम आज मर जाने की,
देश के लिए कुछ भी कर जाने की।
हम सब है सी.आर.पी. की शान।

बढ़ते कदम तेरे रूकते नहीं,
मंजिल से पहले ये थमते नहीं।
हम पर तो है पूरे देश को गुमान,
दुनिया भी हमको है करती सलाम।

स.उ.नि. (एम) ओम प्रकाश पाठक
पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय अजमेर

भिखारी

झुर्रियों से मुरझाये हुए चेहरे,
आंखों में दीनता, हाथों में याचना,
कोई उसे कुछ करे अपर्ण,
होठों पर वाचना।
स्वेद की दुर्गन्ध और भिनकती गंदगी,
रोगों के बीच सिसकती मानवता,
ये घिसटती लाचार जिन्दगी।
पिचके हुये पेट लिये,
जीवित झूठन से, अभाव में सालती,
जिन्दगी की घुटन से,
बोझिल हैं आंखे, छलकते आँसू लिये,
गोद में एक नवजात शिशु,
भूख से बिखलता लिये।
ये कब तक, अपनी लाशें ढोंएंगे।
दिशाहीन मंजिलों पर चलते,
क्या खोएँगे-क्या पायेंगे।

बाघदमन सिंह हंस, उ.नि. (एम)
प्रशासन-चार, महानिदेशालय

75 बटालियन ने हॉकी प्रतियोगिता का खिताब

जीता



श्री एम.के. सिंह विजेता टीम की ट्राफी प्रदान करते हुए।

19 मार्च, 1994 को 103 आर.ए.एफ. बटालियन स्थल वजीराबाद दिल्ली में खेले गए एक रोमांचक मुकाबले में बल की 75 बटालियन की टीम ने 89 बटालियन को 2-0 से हरा कर दिल्ली स्थित बटालियनों की अंतर बटालियन हाकी प्रतियोगिता जीत ली। मध्यांतर तक दोनों टीमों का स्कोर शून्य था। विजयी टीम के लिए दोनों गोल नायक बुद्ध राम ने दागे।

89 बटालियन सेमी फाइनल मुकाबलों में 120 बटालियन को 5-2 से हराकर फाइनल में आयी थी। जबकि फाइनल में प्रवेश पाने के लिए 75 बटालियन ने एस.डी.जी. को 2-0 से हराया। सेमी फाइनल मुकाबलों में 89 बटालियन के लांस नायक एस.एस. लकरा ने दो गोल दागे।

इस चार दिवसीय प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबलों में आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री एम.के.सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए। इस प्रतियोगिता में दिल्ली स्थित बल की 15 टीमों ने भाग लिया। इन सभी टीमों को पूल “ए” और पूल “बी” में विभाजित किया गया था। प्रतियोगिता के सभी मैच नाक आउट आधार पर खेले गए।

पुरस्कार वितरण से पूर्व श्री एम.के.सिंह ने प्रतियोगी टीमों द्वारा प्रस्तुत एक

आकषक माचे पास्ट को सलामी भी लो। इस मौके पर बोलते हुए पूरी प्रातियोगिता के दौरान खेल भावना बनाए रखने के लिए खिलाडियों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आशय नवोदित प्रतिभाओं की खोज तथा उन्हें प्रोत्साहन देना है।

अपना ज्ञान बढ़ाइए

सही उत्तर

उत्तर : 1 सूर्य से संबंधित।

उत्तर : 2 भूमध्य रेखा पर 40,000 किलोमीटर। दस लाख से भी अधिक पृथ्वियां सूर्य में समा सकती हैं।

उत्तर : 3 प्लूटो। सूर्य का प्रकाश 3,00,000 किलोमीटर प्रति सैकिण्ड की गति से साढ़े पांच घण्टे में प्लूटो पर पहुंचता है।

उत्तर : 4 आकाश गंगा में।

उत्तर : 5 हां, ग्रहों के समूह के साथ साथ सूर्य भी आकाश गंगा के केन्द्र के चारों ओर धीरे-धीरे घूमता है। सूर्य अपनी यात्रा पूरी करने में 225 मिलियन (2 अरब 25 करोड़) वर्ष लेता है।

उत्तर : 6 3,84,000 किलोमीटर।

उत्तर : 7 88 दिन का।

उत्तर : 8 250 वर्ष।

उत्तर : 9 13 (तेरह)।

उत्तर : 10 10 (दस)

उत्तर : 11 10 हजार मिलियन वर्ष पहले।

उत्तर : 12 5 हजार मिलियन वर्ष पहले।

उत्तर : 13 16 हजार मिलियन वर्ष पूर्व।

उत्तर : 14 बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, वृहस्पति, शनि, यूरेनस, वरूण (नेपच्यून) और प्लूटो।

उत्तर : 15 33 मिलियन वर्ष पहले।

उत्तर : 16 70 से 190 मिलियन वर्ष पूर्व।

उत्तर : 17 4600 मिलियन वर्ष पूर्व।

उत्तर : 18 होमो इरेक्टस के रूप में एक मिलियन वर्ष से 2 लाख वर्ष पूर्व।

उत्तर : 19 35,000 वर्ष पूर्व। आधुनिक मनुष्य को मैगनोन मनुष्य का ही वंशज है।

उत्तर : 20 100 हजार मिलियन।

उत्तर : 21 280 दिन अर्थात् 9 माह।

उत्तर : 22 लगभग 5000 मिलियन।

उत्तर : 23 100 मिलियन मिलियन कोशिकाएं।

उत्तर : 24 46 क्रोमोसोम, 10,000 जीन्स।

उत्तर : 25 90 में एक।

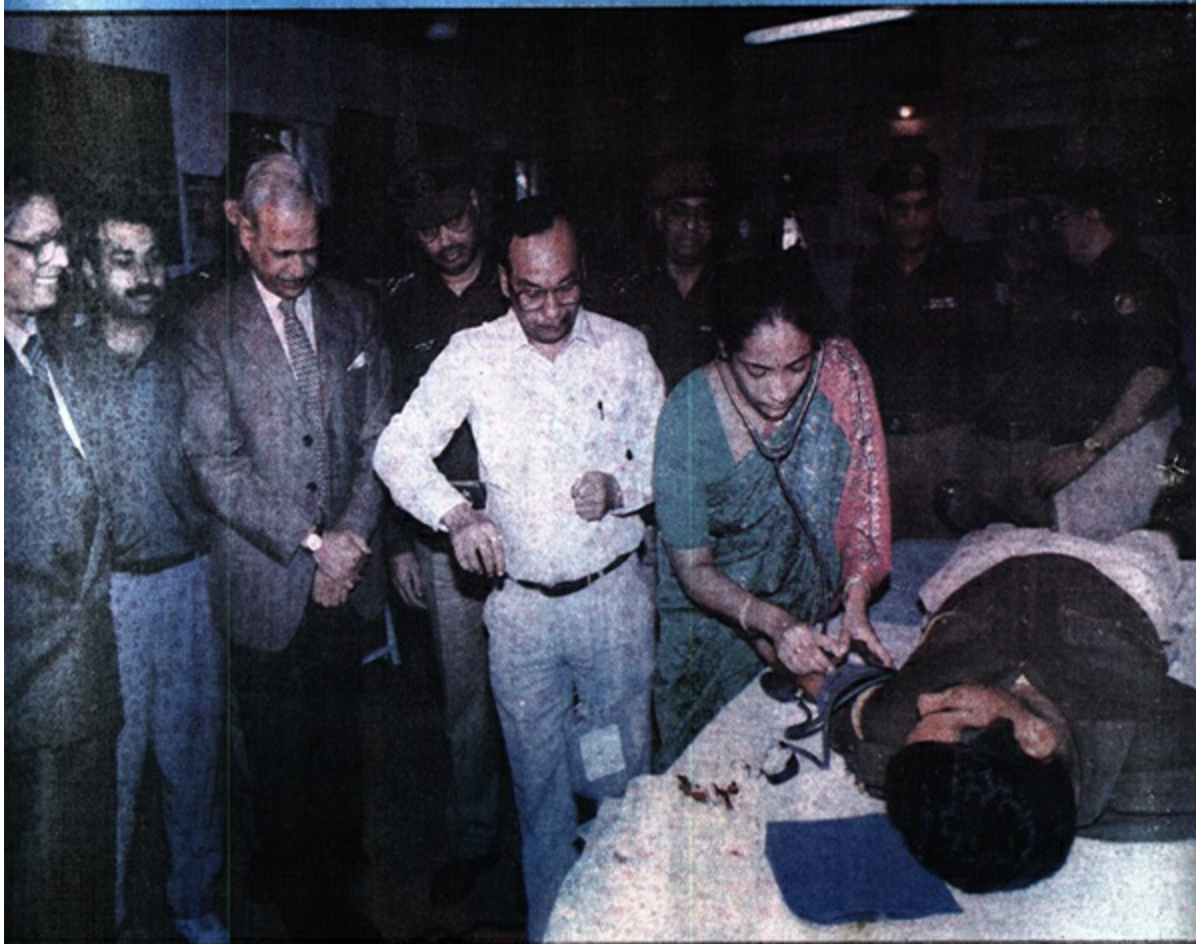
पत्रिका सी. आर. पी. एफ. समाचार के स्वामित्व एवं प्रकाशन से संबंधित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सेंट्रल रूलस् के फार्म 4 के नियम 8 के अधीन)

- | | |
|---|---|
| 1. प्रकाशन का स्थान | - नई दिल्ली |
| 2. प्रकाशन की अवधि | - वर्ष में आठ बार |
| 3. प्रिंटर का नाम | - भूदेव चक्रवर्ती |
| 4. नागरिकता | - भारतीय |
| 5. पता | - ब्लॉक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 |
| 6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता व पता | - उपर्युक्त |
| 7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता | - उपर्युक्त |
| 8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों। | - महानिदेशक के.रि.पु.बल,
ब्लॉक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 |
- मैं भूदेव चक्रवर्ती एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।

31 मार्च, 1994

ह०
भूदेव चक्रवर्ती



बल के कार्मिकों द्वारा स्वतःदान का निरीक्षण करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस. वी. एम. त्रिपाठी

मुख्य सम्पादक: भूदेव चक्रवर्ती। सम्पादक: सतीश खन्ना तथा अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार: सतीश खन्ना।

मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-1 सी० जी० ओ० कॉम्प्लेक्स, सोधी रोड
नई दिल्ली-110003 की ओर से भूदेव चक्रवर्ती।

मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़वा कलां, नई दिल्ली-110072।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : फ्लेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-6

अंक-3

31 मई, 1994

10 ज्येष्ठ, शक 1916



श्री लंका के वरिष्ठ पुलिस उप महानिरीक्षक जे.डी.एम. आर्यसिंगे को एक स्मृति चिह्न भेंट करते हुए
बल के महानिदेशक श्री श्री. वि. म. त्रिपाठी

सम्पादकीय

उड़ीसा के बरबरा वन क्षेत्र से काफी उत्साहवर्द्धक खबरें आ रही हैं। इस क्षेत्र में हाल ही में के.रि.पु.बल को लकड़ी की तस्करी तथा अवैध शिकार को रोकने और पर्यावरण सुरक्षा के लिए तैनात किया गया है।

बरबरा वन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के कीमती वृक्ष तथा जंगली जानवर बहुत बड़ी तादाद में पाए जाते हैं। यह सदाबहार बन टीक तथा साल की उत्कृष्ट लकड़ी के लिए विख्यात है। इस वन क्षेत्र में बहुत बड़े भाग पर 80 के दशक में बहुत बड़े पैमाने पर टीक के वृक्षों को लगाया गया था। इस वन क्षेत्र की पशु आबादी भी बहुत घनी है। यहां अलग-अलग स्थानों पर चीते, भालू, तेंदुए, सांभर, हिरण, हाथी तथा अन्य कई प्रकार के छोटे बड़े जानवर भारी तादाद में पाए जाते हैं।

इस वन क्षेत्र के निकटवर्ती नगरों जिनमें भुवनेश्वर भी शामिल है—की लगातार आबादी बढ़ने से पिछले 30 सालों से इस वन पर अत्यधिक दबाव पड़ रहा था। टिम्बर लकड़ी की लगातार बढ़ती मांग ने इस वन क्षेत्र में साल और टीक की तस्करी को अत्यधिक बढ़ा दिया था। टिम्बर के ये तस्कर आधुनिक हथियारों से लैस होते हैं, जिससे उनकी वन अधिकारियों के साथ अक्सर सशस्त्र मुठभेड़ें होती रहती थीं। इन कारणों के साथ-साथ जलाने की लकड़ी के लिए भी स्थानीय नागरिकों द्वारा की जाने वाली कटाई के कारण यह आरक्षित वन विनाश के कगार पर पहुंच गया था।

इस अवैध कटाई तथा शिकार के कारण यहां की पशु आबादी भी तेजी से कम हो रही थी। किन्तु के.रि.पु.बल के जवानों की यहां नियुक्ति के बाद से स्थितियां तेजी से बदली हैं। यहां तैनाती से पूर्व बल के जवानों को वन विभाग द्वारा एक विशेष प्रशिक्षण दिया गया जिसमें उन्हें वन कानून, पर्यावरण संरक्षण, वृक्षों की पहचान तथा वनों से संबंधित अन्य जानकारियां प्रदान की गईं। परिणाम आशातीत रहे। बल के जवानों की नियुक्ति के बाद से न केवल इस क्षेत्र में तस्करी बिल्कुल बंद हो गयी, अपितु बल के जवानों ने बहुत बड़ी तादाद में चुराई गई लाखों रुपए की लकड़ी भी बरामद की। और इस प्रकार के.रि.पु.बल एक नई भूमिका में, एक बार फिर न केवल खरा उतरा, अपितु उसकी बहुआयामीय दक्षता और अधिक निखर कर सामने आयी।

बरबरा वन क्षेत्र से आयी बल के जवानों की कार्रवाई की पहली रिपोर्ट इसी अंक में संकलित है।

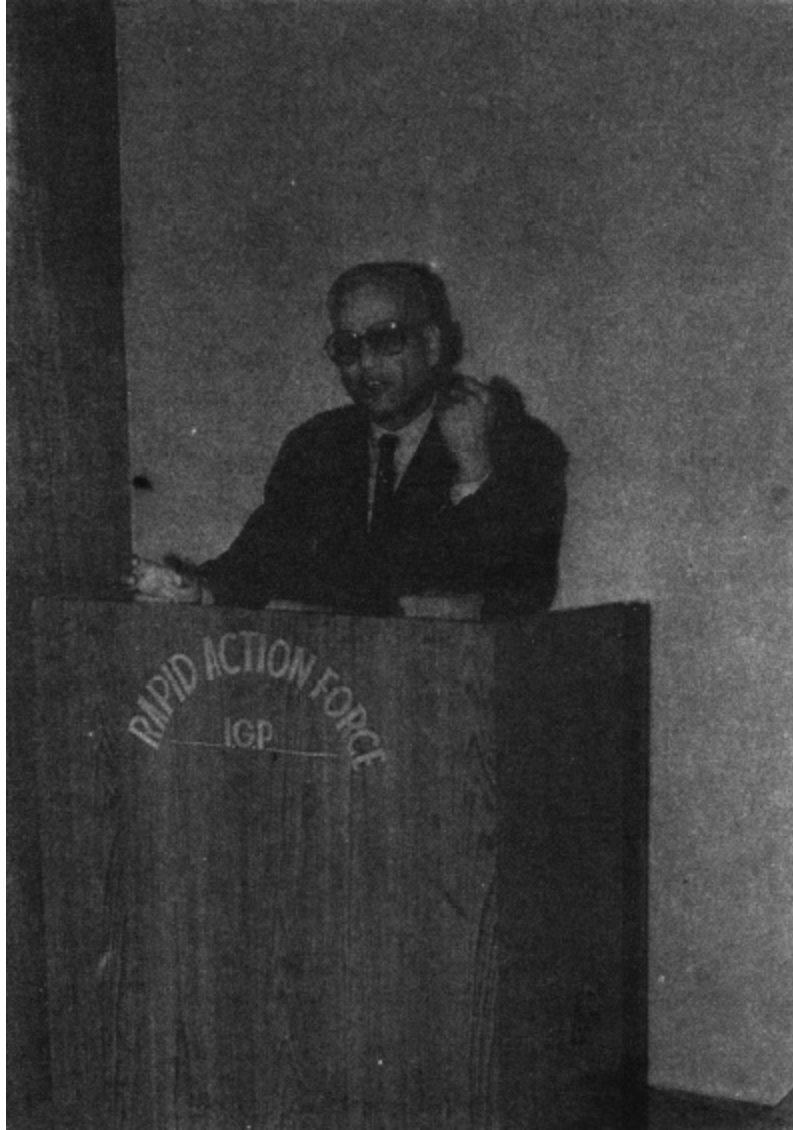
भूदेव चक्रवर्ती

(भूदेव चक्रवर्ती)

आर.ए.एफ. के सदस्यों को मानव अधिकारों से संबंधित प्रशिक्षण

राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव अधिकारों की व्यापक स्तर पर चर्चा होने तथा सामान्य नागरिकों की इस क्षेत्र में पैदा हुई रुचि तथा जागरूकता के कारण यह जरूरी हो गया है कि कानून एवं व्यवस्था लागू करने वाली संस्थाएं इसके विभिन्न पहलुओं से परिचित हों। इसी पहलु को दृष्टि में रखते हुए के.रि.पु. बल की सभी बटालियनों तथा ग्रुप केन्द्रों के सभी रैंकों के लिए एक विशेष कोर्स की व्यवस्था की गई है। आर.ए.एफ. के कार्मिकों के लिए इस कोर्स की महत्ता इसलिए बढ़ जाती है, क्योंकि आर.ए.एफ. के कार्मिकों को एक विशिष्ट प्रकार की अत्यधिक संवेदनशील स्थिति में कार्य कर हालात पर काबू पाना पड़ता है। आर.ए.एफ. की इस प्रवृत्ति को दृष्टि में रखकर आर.ए.एफ. मुख्यालय में मानव अधिकारों से संबंधित दो दिन का एक कैप्सूल कोर्स चलाया गया।

26 तथा 28 फरवरी, 94 को आर.ए.एफ. मुख्यालय में चले इस कोर्स का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री श्री.वि.एम. त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर महानिरीक्षक (संभरण तथा प्रशिक्षण) जी.पी.दूबे तथा आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री एम.के.सिंह सहित अन्य कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।



प्रशिक्षण में शामिल अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री श्री. वि. म. त्रिपाठी

इस मौके पर बोलते हुए महानिदेशक महोदय ने पुलिस बलों में आमतौर पर तथा के.रि.पु.बल व आर.ए.एफ. में विशेष तौर पर मानव अधिकारों से संबंधित इस कोर्स की आवश्यकता तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। मानव गरिमा तथा मानव अधिकारों की रक्षा के लिए भारतीय संविधान तथा समाज के विभिन्न प्रावधानों तथा सिद्धान्तों पर भी उन्होंने विस्तार से चर्चा की। महानिदेशक महोदय ने बल के सभी अधिकारियों का आह्वान किया कि वे अपने अधीनस्थ कार्मिकों को मानव अधिकारों जैसे महत्वपूर्ण विषयों तथा इसके विभिन्न पहलुओं से अवगत करायें। इस कोर्स में आर.ए.एफ. के 20 अधिकारियों ने भाग लिया।

बरबरा वन क्षेत्र में बल के कार्मिकों का

उल्लेखनीय योगदान



बरबरा वन क्षेत्र के अधिग्रहण के समय महानिदेशक श्री श्री. वि. म. त्रिपाठी उडीसा के मुख्य मंत्री एवं वन मंत्री के साथ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा अंगीकृत किये गए बरबरा वन क्षेत्र में 41 बटालियन की “ई” कम्पनी पर्यावरण सुरक्षा तथा लकड़ी की तस्करी व अवैध शिकार पर काबू पाने के लिए तैनात है। 21 अप्रैल, 94 को पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद ने इस वन क्षेत्र का दौरा करने के बाद पाया कि बल के जवानों ने अपनी तैनाती की इस अल्प अवधि के दौरान ही स्थानीय लोगों तथा प्रशासन के बीच में काफी ख्याति अर्जित कर ली है। वन विभाग के अधिकारियों के साथ उनका अच्छा तालमेल है। खुर्दा जिले के क्षेत्रीय वन अधिकारियों के अनुसार के.रि.पु.बल की तैनाती के बाद से इस क्षेत्र से टीक और साल की लकड़ी की तस्करी बिल्कुल समाप्त हो गई है। इस वन क्षेत्र में बल के जवानों की गश्त का इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि वे ग्रामीण जो पहले तस्करों को कीमती लकड़ी की तस्करी में मदद देते थे, अब वन अधिकारियों के पास आकर अपने पिछले क्रिया कलापों के लिए न केवल माफी मांग रहे हैं, अपितु उन्हें अपना पूरा सहयोग देने का वादा भी कर रहे हैं। हमारे गश्ती दलों ने तस्करों के कई ठिकानों पर छापे मारकर भारी मात्रा में अवैध रूप से छिपाई गई कीमती लकड़ी को बरामद किया है। अकेले फरवरी, 94 माह में ही हमारे जवानों ने 10 लाख रुपये की अवैध टीक की लकड़ी बरामद की, जबकि मार्च के महीने में बरामद लकड़ी की कीमत 7 लाख रुपये है।

बल के जवानों के सहयोग से वन विभाग ने 35 वाहनों को भी अपने कब्जे में लिया

। ये वो वाहन थे जिन्हें विशेष तौर पर जंगल को लकड़ी बाहर ले जाने के तैयार किया गया था। इसके अतिरिक्त बरबरा से भुवनेश्वर तक अवैध रूप से लकड़ी ढोने वाले 7 ट्रकों को भी वन विभाग ने अपने कब्जे में ले लिया है। इन सभी ट्रकों के पास राष्ट्रीय परमिट थे।

बरबरा वन क्षेत्र में बल के जवानों द्वारा किये जा रहे इस कार्य की सर्वत्र व्यापक प्रशंसा हुई है तथा कई राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने इस विषय पर लम्बे लम्बे लेख तथा टिप्पणियाँ प्रकाशित की हैं।

महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर ने भी इस क्षेत्र में कार्य कर रहे कार्मिकों को किसी भी प्रकार के विवाद से बचाने के लिए ईंधन के रूप में लकड़ी के इस्तेमाल पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया है। साथ ही ये कार्मिक किसी अन्य के अनुरोध पर भी न तो सामान्य रूप से और न ही परमिट पर लकड़ी खरीद सकेंगे।

तीन कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

परिचालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता हासिल करने पर बल के तीन अधिकारियों को महानिदेशक महोदय की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई है।

36 बटालियन के डिप्टी कमांडेंट हरी सिंह को 10 अप्रैल, 92 को पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में दिखाई गई वीरता के लिए यह सम्मान दिया गया है।

102 बटालियन के डिप्टी कमांडेंट एस.एस.एन.नायर तथा 91 बटालियन के सहायक कमांडेंट आर.बी.सिंह को यह सम्मान 8-9 जून, 92 को पंजाब में आतंकवादियों के साथ हुई एक मुठभेड़ में दिखाई गई अद्वितीय वीरता एवं साहस के लिए दिया गया है।

बल के अधिकारियों को प्रशंसा पत्र

1993 में नागालैंड में तैनाती के दौरान 13 बटालियन के कमांडेंट मोहर सिंह तथा 12 बटालियन के कमांडेंट टी.आर. अरोडा की नागालैंड के राज्यपाल ने उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशंसा की है।

इन दोनों कमांडेंटों को प्रदान किए गए प्रशंसा पत्रों में राज्यपाल महोदय ने कहा है कि नागालैंड में शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए इन अधिकारियों द्वारा दिए गए योगदान से वे बहुत प्रभावित हैं।

माह अप्रैल, 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अप्रैल, 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

का. गुरमीत सिंह (21 बटा.), कां.आर.अथीमुलम (86 बटा.), का./ड्रा. बलविन्दर

सिंह (ग्रुप केन्द्र दुगोपुर), उप निरीक्षक/मोटर मैकेनिक चन्द्रबलोराम (47 बटा.), है.कां. मिलाप चन्द्र (99 बटा), नायक जसपाल सिंह परदेशी (24 बटा), कां. सरबदेव सिंह (ग्रुप केन्द्र नीमच) तथा सफाई कर्मचारी हीरालाल 65 बटा)।

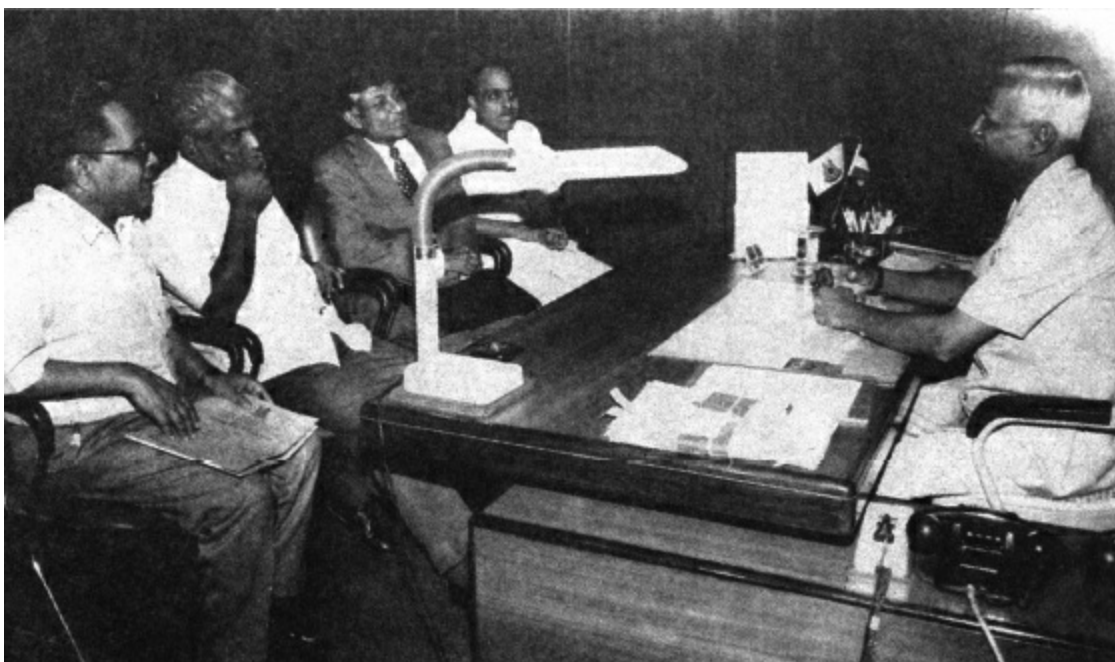
इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार मार्च, 94 में 96 बटा. के कां. अमर सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

नागपुर में दन्त रक्षा शिविर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र नागपुर में 06 मार्च, 94 को एक दन्त शिविर का आयोजन किया गया। रोटरी क्लब तथा भारतीय डेन्टल एसोसिएशन के सहयोग से आयोजित इस शिविर में डाक्टर हरीश राठी तथा उनके सहयोगी चिकित्सकों ने लगभग 500 दन्त रोगियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई। के.रि.पु.बल के कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों के लिए आयोजित इस शिविर में निकटवर्ती गांवों के निवासियों को भी निःशुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराई गई।

शिविर का उद्घाटन उप महानिरीक्षक श्री त्रिलोचन सिंह बाहद ने किया। इस मौके पर अपर उप महानिरीक्षक श्री अ. गुहा राय भी उपस्थित थे।

श्री लंका के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का के.रि.पु.बल महानिदेशालय में दौरा



श्री आर्यसिंगे बल के महानिदेशक श्री श्री. वि. म. त्रिपाठी के साथ विचार विमर्श करते हुए

श्री लंका के वरिष्ठ पुलिस उप महानिरीक्षक श्री जे.डी.एम आर्यसिंगे ने 20 अप्रैल, 94 को के.रि.पु.बल के महानिदेशालय में दौरा किया। उनके इस दौरे का उद्देश्य विभिन्न भारतीय पुलिस संगठनों की कार्य शैली का परिचय प्राप्त करना है।

इस दौर के दौरान श्री आर्योसिंग ने के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री श्री विलास मणी त्रिपाठी से मुलाकात की एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से परस्पर संबंधित विचारों का आदान-प्रदान किया।

जन शक्ति वाहिनी हॉकी प्रतियोगिता के.रि.पु.बल को दूसरा स्थान



श्री दारासिंह बल की टीम से परिचय प्राप्त करते हुए।

अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित प्रथम जनशक्ति वाहिनी हॉकी टूर्नामेंट में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। 29 अप्रैल, 94 को नई दिल्ली के शिवाजी स्टेडियम में खेले गये इस प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में के.रि.पु.बल का सामना पंजाब एंड सिंध बैंक से हुआ। बेहद संघर्षपूर्ण मुकाबले के बाद पंजाब एंड सिंध बैंक ने यह मैच टाईब्रेकर में 3-4 से जीत लिया। इससे पूर्व दोनों टीमों अतिरिक्त समय के बावजूद 1-1 के बराबर स्कोर पर थीं।

प्रतियोगिता के सेमी फाइनल मुकाबलों में के.रि.पु.बल की टीम एयर इंडिया को टाईब्रेकर में 5-4 से हराकर फाइनल में पहुंची थी। दूसरी ओर पंजाब एंड सिंध बैंक को सेमी फाइनल में पहुंचने के लिए सीमा सुरक्षा बल को 3-1 से हराना पड़ा।

फाइनल मैच में के.रि.पु.बल की टीम ने पंजाब एंड सिंध बैंक को कड़ा मुकाबला

दिया किन्तु फिर भी 70 मिनट के इस मुकाबले में बल की टीम उन पर काबू ना पा सकी और मुकाबला बराबरी पर छूटा।

पंजाब एंड सिंध बैंक के संजीव कुमार ने प्रतियोगिता शुरू होने के चौथे मिनट के बाद ही गन्दीप कुमार से मिले एक पास को गोल में तब्दील कर दिया। इस गोल को उतारने के लिए के.रि.पु.बल की टीम जीजान से जुटी रही, किन्तु बल के त्रिलोकराम तथा सुरेश टोकनो दो पेनल्टी कोर्नरों को गोल में तब्दील करने में असफल रहे, उनकी आशाएं तब ओर धूमिल पड़ती दिखाई दी, जब उनके साथी तनवीर जमाल को रेफरी ने उनके खेल के लिए ग्रीन कार्ड दिखा दिया।



दुसरे स्थान पर रही बल की टीम उप मंत्री श्री राम लाल राही के साथ।

मध्यान्तर से 4 मिनट पूर्व बल के जी० तिरके ने अपने अकेले प्रयास से एक गोल दाग कर अपनी टीम को बराबरी पर ला खड़ा किया। इसके साथ ही बल की टीम दुगुने उत्साह के साथ पंजाब एंड सिंध बैंक की सुदृढ़ रक्षा पंक्ति को तोड़ने का प्रयास करने लगी। मैच समाप्त होने के कुछ ही समय पूर्व बल के सुकार ऐंद को गोल दागने का एक बेहद खूबसूरत मौका मिला, किन्तु उनके द्वारा दागी गई बॉल लक्ष्य को न भेद पाई।



श्री राम लाल बल की टीम को दूसरे स्थान की ट्राफी प्रदान करते हुए

टाई ब्रेकर में पंजाब एंड सिंध बैंक की तरफ से भूपिंदर सिंह, गन्दीप कुमार, सुरेश भाटिया तथा हरवेन्द्र सिंह ने गोल दागे जबकि के.रि.पु.बल की तरफ से एल. जोसप, सुकार ऐंद तथा एस.के.वशिष्ठ ने गोल किये।

मैच शुरू होने से पूर्व दोनों टीमों का परिचय विख्यात पहलवान दारा सिंह से कराया गया। उप गृह मंत्री श्री राम लाल राही इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये।

बल के अधिकारी को हिन्दी में कार्य करने के लिए सम्मान

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने 01 अगस्त से 30 सितम्बर, 93 तक 26 वीं अखिल भारतीय हिन्दी प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें अरूणाचल प्रदेश से बल की 24 बटालियन के कमांडेट श्री एस.आर. साहनी ने भी भाग लिया। इस कार्य अवधि में कुल 36,938 शब्द हिन्दी में लिखने के लिए श्री साहनी को अरूणाचल प्रदेश राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसके लिए परिषद् ने उन्हें प्रशस्ति पत्र तथा 101 रुपए पुरस्कार स्वरूप भेंट किए।

के.रि.पु.बल ने 356 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के जवानों ने माह अप्रैल, 1994 में देश भर में 356 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई आठ मुठभेड़ों में सात आतंकवादी मारे गए।

मारे गए आतंकवादियों में बब्बर खालसा का डिप्टी चीफ अवतार सिंह तथा बब्बर खालसा का ही मंड एरिया का एरिया कमांडर ध्यान सिंह जैसे कुख्यात आतंकवादी भी शामिल थे।

इस अवधि में बल के जवानों ने 56 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में सजीव गोली बारूद बरामद किया। बरामद हथियारों में पांच ए.के. 47 राइफलें, एक ए.के. 56 राइफल, एक लाइट मशीनगन, एक जी.पी.एम.जी., एक राकेट लांचर, एक एस.एल.आर., दो. 303 रायफलें, एक 9 एम.एम. कारबाइन, 11 पिस्तौले, पांच रिवाल्वरें, 26 देशी बंदूकें तथा एक रूस निर्मित दूरबीन शामिल है।

इन मुठभेड़ों में बल का एक जवान वीरगति को प्राप्त हुआ तथा 33 गंभीर रूप से घायल हुए।

50 बटालियन ने ट्राफी जीती



50 बटालियन की टीम श्री इजहार आलम से फुटबाल ट्राफी ग्रहण करते हुए।

15 अप्रैल, 94 को कालकाजी नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 50वीं बटालियन स्थल पर खेले गए एक रोमांचक मुकाबले में 50 बटालियन ने 103 बटालियन को 1-0 गोलों से हराकर के.रि.पु. बल की दिल्ली स्थित बटालियनों की अंतर बटालियन फुटबाल प्रतियोगिता जीत ली। मध्यांतर तक स्कोर 1-0 था। विजेता टीम के लिए सर्वाधिक 1 गोल सिपाही नरेन्द्र सिंह ने किया।

सेमी फाइनल मुकाबलों के पूल “ए” वर्ग में 50 बटालियन ने 33 बटालियन को 1-

0 गोल से हरा कर फाइनल में प्रवेश किया। जबकि पूल “बी” वर्ग में 103 बटालियन ने 125 बटालियन को 3-0 गोलों से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। 50 बटालियन के लिए एक मात्र निर्णायक गोल कांस्टेबल एस.के.किपगन ने दागा, जबकि 103 बटालियन के लिए लांस नायक अलगाना ने दो गोल दागे।

इस मौके पर आर.ए.एफ. के डी. आई.जी. श्री इजहार आलम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए तथा खिलाड़ियों को पूरी प्रतियोगिता के दौरान खेल भावना बनाए रखने के लिए बधाई दी।

इस प्रतियोगिता में के.रि.पु.बल की दिल्ली स्थित 12 यूनिटों की टीमों ने भाग लिया।

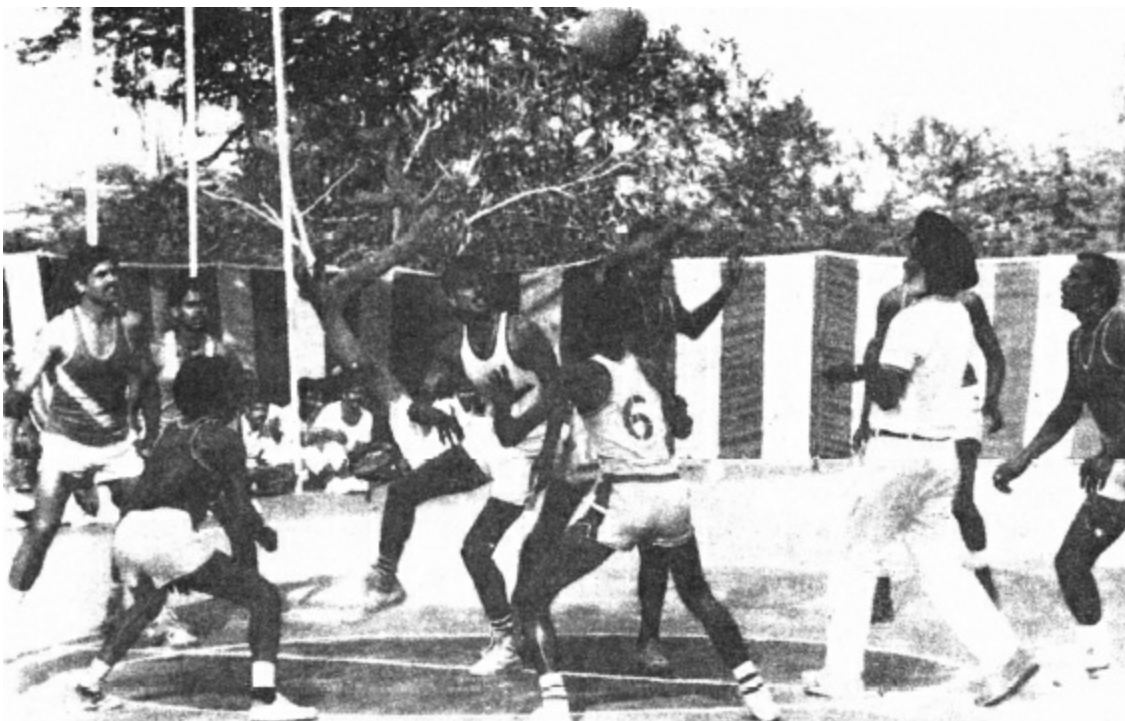
जोखिम निधि लाभ

माह अप्रैल, 94 में जोखिम निधि से मृत्यु के 31 मामलों में कुल 11,45,000 रूपए देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रति मामला 10,000 रूपये की केंद्रीय कल्याण निधि तथा सी. बी. एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के दो मामलों में कुल 30,000 रूपये देने स्वीकृत किये गए।

स्पेशल कल्याण निधि रिस्क फंड ‘बी’ से भी मृत्यु के एक मामले में 30,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

40 बटालियन ने अंतर बटालियन बास्केट बाल प्रतियोगिता का खिताब जीता



बास्केट बाल प्रतियोगिता के फाइनल मैच का एक रोमांचक क्षण

रविंद्र रंगशाला स्थित के.रि.पु. बल की 33 बटालियन स्थल पर खेले जा रहे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उत्तरी सेक्टर की

अंतर बटालियन बास्केट बाल प्रतियोगिता के 9 अप्रैल, 94 को खेले गए फाइनल मुकाबले में 40 बटालियन ने 33 बटालियन को 43-41 से हरा कर प्रतियोगिता की टाफी जीत ली। मध्यान्तर तक स्कोर 18-26 था। विजयी टीम के मुख्य स्कोर सब इंस्पेक्टर गुरविंदर सिंह ने 24 अंक लिए।

सेमी फाइनल मैचों में 40 बटालियन ने 55 बटालियन को 64-33 से हराया। विजयी टीम के मुख्य स्कोर सब इंस्पेक्टर गुरविंदर सिंह ने 37 अंक लिए। जबकि 33 बटालियन ने 54 बटालियन को 63-21 से हराया। विजयी टीम 33 बटालियन के हैड कांस्टेबल सुजान सिंह ने 40 अंक लिए।

श्री एम.एस.यादव भारतीय पुलिस सेवा पुलिस महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र के.रि.पु.बल ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये। इस छः दिवसीय प्रतियोगिता में उत्तरी सेक्टर को 16 बटालियनों तथा ग्रुप केन्द्रों की टीमों ने भाग लिया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री यादव ने पूरी प्रतियोगिता में खेल भावना बनाए रखने के लिए खिलाड़ियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य नवोदित खिलाड़ियों को आगे बढ़ाना और उनकी प्रतिभा को निखारना है।

33 बटालियन ने के.रि.पु.बल उत्तरी सेक्टर की फुटबाल प्रतियोगिता जीती

33 बटालियन ने 85 बटालियन को टाई ब्रेकर में 4-3 गोलों से पराजित कर उत्तरी सेक्टर की प्रथम इंटर सेक्टर प्रतियोगिता जीत ली। मध्यांतर से पहले 33 बटालियन के सब इंस्पेक्टर भीम सिंह ने 85 बटालियन पर एक गोल किया, जिसे मध्यांतर के बाद 85 बटालियन के सिपाही सुरेश थापा ने 33 बटा. पर एक गोल कर बराबर कर दिया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच 25 अप्रैल, 94 को ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली में खेला गया।

सेमी फाइनल मुकाबलों में 85 बटालियन 73 बटालियन को टाई ब्रेकर में 4-2 गोलों से तथा 33 बटालियन 9 बटालियन को 2-0 गोलों से हरा कर फाइनल में पहुंची थीं। फाइनल मुकाबले को देखने के लिए बल के उत्तरी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री एम.एस.यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

इस सात दिवसीय मुकाबले में बल के उत्तरी सेक्टर की बटालियनों एवं ग्रुप केन्द्रों की 17 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाट आउट आधार पर खेले

गए।



33 बटालियन की टीम श्री यादव से ट्रॉफी ग्रहण करते हुए।

आपका स्वास्थ्य मधुमेह कारण और निवारण

डा० जी. एस. सोनी

पूरे संसार में करीब एक अरब लोग मधुमेह रोग से पीड़ित हैं। किन्तु बहुत कम लोगों को पता है कि यह बीमारी क्या है, इसकी शुरुआत कैसे होती है, इसके आसार क्या हैं तथा इसकी मालूमात कैसे की जाती है और इसके इलाज के लिए क्या करना चाहिए।

इस बीमारी की शुरुआत ईसा पूर्व 1500 ईसवी में यूनान, मिश्र, भारत तथा चाईना आदि देशों में हुई। इस बीमारी में शरीर में शक्कर या इंसूलिन की मात्रा बढ़ जाती है जिससे पेशाब में बदबू आना शुरू हो जाती है। यदि पेशाब करने के बाद कई कीड़े मकोड़े उस जगह पर इक्ठे हो जायें तो यह समझना चाहिये कि उस व्यक्ति को मधुमेह की बीमारी है। यह इस बीमारी की एक बड़ी पहचान है।

मधुमेह (डायबिटीज) की बीमारी दो प्रकार की होती है। एक में रोगी बहुत दुबला,

पतला हो जाता है तथा दूसरे में मोटापा आ जाता है। अगर रोगी के पेशाब में बहुत मीठी, ठण्डी व गन्ने के रस की तरह गंध आती हो तो उसे ग्लायकोसुरीया की बीमारी कहते हैं। इस बीमारी के शरीर मीठे, वसायुक्त तथा कार्बोहाइड्रेट युक्त भोज्य पदार्थों को पचाता नहीं है और इनके शरीर में ज्यादा मात्र में एकत्र होने पर पेशाब के जरिये निकाल देता है। पाचन क्रिया ग्रन्थियां शिथिल पड़ जाती हैं। जिससे जिस्म में ताकत नहीं रहती है और जब तक गुर्दे के द्वारा शुगर पेशाब में नहीं जाती तब तक ब्लड शुगर बढ़ता जाता है। खून और पेशाब में ज्यादा शुगर का होना ही डायबिटीज की बीमारी है।

कारण:

मधुमेह के मुख्य कारण हैं:-

1. हीट स्ट्रोक (लू लगना)
2. मौसम
3. ज्यादा बैठने का काम या ज्यादा आराम
4. कम उम्र में शादी
5. असंतुलित तथा अस्वच्छ भोजन
6. अजीर्ण
7. कम कैलोरीज की खुराक
8. अत्यधिक तनाव या चिन्ता
9. ऐसी स्थिति जिसमें मस्तिष्क के ऊपर असर पड़ता हो।
10. इन्सुलिन का शरीर में पूरी तरह से पैदा नहीं होना और जब शरीर में इंस्यूलिन पूरी तरह पैदा नहीं होता है तब ज्यादा मात्रा का ग्लूकोस ब्लड स्ट्रीम में जमा हो जाता है व गुर्दे में जाकर पेशाब के द्वारा साफ हो जाता है।
11. मधुमेह वंशानुगत रूप से भी फैलता है।
12. मोटापे तथा कुछ शारीरिक संरचना संतुलन में अव्यवस्था आने के कारण भी मधुमेह का जन्म होता है।
कुछ संकेत जिससे रोगी इस रोग का पता आसानी से लगा सकता है-
1. शरीर में इंस्यूलिन की कमी के कारण शरीर के कई अंगों में ताकत का न रहना व कमजोर होना।
2. रोगी का लगातार कमजोर होना व वजन का कम होना।
3. रोगी का मोटा होना पर वास्तव में अन्दर से कमजोर होना।

4. शरीर में हर प्रकार के खाने जैसे कार्बोहाइड्रेट आदि के पचाने की ताकत नहीं होना।
5. शरीर की ग्रन्थियों का पूरी तरह से इंस्यूलिन को भोज्य पदार्थों को ताकत में बदलने और जमा करने या संग्रहित करने में मदद नहीं करना।
6. रोगी को ज्यादा पानी पीने की इच्छा लगातार या बार बार होना।
7. पेशाब का ज्यादा व बार बार होना।
8. पेशाब को ज्यादा देर तक रोकने की कोशिश करने पर भी नहीं रूक पाना।
9. भूख का ज्यादा लगना।
10. जल्दी ही थकान महसूस करना।
11. यदि चोट लग जाये तो घाव का जल्दी ठीक नहीं होना।
12. आंखों की रोशनी का कमजोर होना व लगातार कमजोर होने से अन्धेपन का आना।
13. सुस्ती होना व किसी काम में दिल नहीं लगना या काम करने की ताकत का खत्म होना।
14. उंगलियों, पांव, एडी आदि में दर्द होना।
15. पेशाब सफेद व गाढ़ा होना जिसमें सफेद छछूंदें का आना।

इस बीमारी के आसार पता लगने पर रोगी को इसकी जांच कराकर इलाज जल्दी ही करवाना चाहिये, क्योंकि यह एक बहुत ही घातक बीमारी है जिससे रोगी की मौत तक हो सकती है। भारत में यह बीमारी औरतों से ज्यादा आदमियों को होती है।

यहां यह बताना जरूरी है कि इसके लिए सिर्फ इलाज ही काफी नहीं है बल्कि कुछ सावधानियां भी हैं जिसका ध्यान रखना बहुत जरूरी जैसे:-

1. खाना ऐसा खाना चाहिये जिसमें कार्बोहाइड्रेट्स फेट्स, प्रोटीन आदि ठीक मात्रा में हो।
2. खाने में चीनी नहीं होनी चाहिए।
3. एक आम आदमी को अपने वजन के मुताबिक 10 कैलोरीज हर पौन्ड के हिसाब से खाना चाहिए। एक स्वस्थ आदमी को 30-50 कैलोरीज व गर्भवती महिला को जरूरत के मुताबिक इसकी मात्रा बढ़ानी चाहिये।
4. स्वस्थ खाने में 65 से 75 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट 20-25 प्रतिशत वसा व 13-15 प्रतिशत प्रोटीन होता है। कार्बोहाइड्रेट में गेहूँ, घी या वेजीटेबल में तेल आते हैं।

5. हरी सब्जों

डाईबिटीज के रोगी को शराब, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू आदि का सेवन कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि यह एक जहर का काम करती है।

अन्त में सही इलाज व समय पर किया गया इलाज व सही मात्रा में खाना व बताई गई सावधानियों का ध्यान रखना रोगी के लिये बहुत आवश्यक है, जिससे कि वह इसके भयानक परिणामों से बच सके।

आओ हंसे

• किसी गांव में एक भेड़िया घुस आया। गांव में भगदड़ मच गई। एक बहुत मोटी महिला अपने पति से कहने लगी, “आओ हम भाग चलें। कहीं भेड़िया मुझे उठा कर न ले जाए।”

“वह भेड़िया है, क्रेन नहीं।” पति ने उत्तर दिया।

• पिता (पुत्र से)–“बड़े होकर तुम क्या बनोगे?”

पुत्र–“बड़ा होकर मैं मरीज बनूंगा।”

पिता–“वह क्यों?”

पुत्र–“ताकि डाक्टरों के तजुर्बों के काम आ सकूं।”

• एक व्यक्ति मैडीकल स्टोर में गया और सेल्समैन से कुछ कहने की कोशिश की मगर तभी उस पर खांसी का दौरा पड़ गया। सेल्समैन ने उसे पानी पिलाया और पूछा, आपको क्या चाहिए?”

व्यक्ति ने अपने बैग में से पिस्तौल निकाला और कड़क कर बोला, “तुम्हारे पास जो कुछ है, इस बैग में डाल दो।”

• दो बच्चे अपनी मां को भविष्य के बारे में बता रहे थे। पहले बच्चे ने कहा, “मैं जब बड़ा हूंगा तो मेरे नीचे मारुति कार होगी।”

दूसरा बच्चा–“हां जी मुझे पता है कि आप ड्राइवर ही बन सकते हैं।”

• सत्री–“पिता जी, मुझे एक नया बैट. चाहिए।”

पिता–“क्यों बेटा?”

सत्री–“मैं बहुत अच्छी क्रिकेट खेलने लगा हूं। कल ही एक मैच में अपनी सारी टीम का आधा स्कोर अकेले मैंने बनाया।”

पिता–“शाबाश बेटा, कितना स्कोर बनाया तुमने और तुम्हारी टीम ने?”

सत्री–“टीम ने चार और मैंने दो।”

संकलन-कां० अशोक कुमार 32 बटा.

रजि० न०. 47167/87



जन शक्ति याहिनी हकी टूर्नामेंट के फाइनल मैच से पूर्व बल की टीम के कोच सतेंद्र सिंह से परिचय प्राप्त करते हुए दारा सिंह।

मुख्य सम्पादक: भूदेव चक्रवर्ती। सम्पादक: सतीश खन्ना तथा अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छापाकार: सतीश खन्ना।

मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-1 सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली-110003 की ओर से भूदेव चक्रवर्ती।

मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072।

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : एलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

सी० आर० पी० एफ० समाचार

खंड-7

अंक-4

30 जून, 1994

9 आषाढ़, शक 1916



श्री ए. वी. लिट्ल के.रि.पु. बल मुख्यालय में अपर महानिदेशक का पद भार संभालते हुए।

— राय-एस. के. खन्ना

सम्पादकीय

21 मई आतंकवाद विरोधी दिवस है। यह दिन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि बल के अनेक अधिकारी व जवान देश के विभिन्न प्रांतों में आतंकवाद का मुकाबला करने के तैनात किये गये हैं। कई अधिकारियों व जवानों ने आतंकवाद का सामना करते हुए अपनी जानें गवाई हैं, किन्तु जनहित और देश की आंतरिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा दिया गया यह बलिदान व्यर्थ नहीं है, क्योंकि हम काफी हद तक आतंकवाद को कुचलने में कामयाब हुए हैं। यह दिन हमें अपने उन दिवंगत साथियों की याद दिलाता है एवं यह संकल्प दोहराने की प्रेरणा देता है कि हम आतंकवाद के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखेंगे।

अभी हाल ही में सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए 11 नए ग्रुप केन्द्रों की स्वीकृति दी है। इन्हीं में से एक ग्रुप केन्द्र का 27 मई, 1994 को येलेहंका, बंगलौर में, महानिदेशक महोदय ने उद्घाटन किया। हमें आशा है कि अन्य सभी ग्रुप केन्द्र भी शीघ्र ही बनकर तैयार हो जायेंगे जिससे कि बल के अफसर और जवानों के लिए कल्याण, चिकित्सा आवास एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

श्री ए.वी. लिडल ने 17 जून, 1994 को के.रि.पु. बल में अपर महानिदेशक का पदभार संभाल लिया। श्री लिडल एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं तथा वह पर्यावरण एवं फिल्म निर्माण में विशेष रूचि रखते हैं। आशा है केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल उनके लम्बे प्रशासनिक अनुभव एवं प्रतिभा से भरपूर लाभ उठाएगा। सी. आर.पी.एफ. समाचार उनका बल में स्वागत करते हुए उन्हें उनकी नियुक्ति पर बधाई देता है।

गत माह बल के 31 अफसरों और जवानों को शौर्य वीरता के लिए पुलिस पदकों द्वारा सम्मानित किया गया। पदक प्राप्त करने वाले सभी सदस्यों को सी.आर.पी.एफ. समाचार की ओर से हार्दिक बधाई।

के.रि.पु. बल के भूतपूर्व महानिदेशक श्री इमदाद अली का 22 जून, 1994 को मनीला, फिलीपींस में देहान्त हो गया। श्री अली, 15 दिसम्बर 1969 से 28 फरवरी, 1973 तक की अवधि में बल के महानिदेशक रहे। आपके कार्यकाल में बल के विस्तार की कई महत्वपूर्ण योजनाओं को कार्यरूप दिया गया। सेवानिवृत्ति के बाद भी आपने एक शुभचिन्तक के रूप में बल से अपना सम्पर्क बनाए रखा। आपके देहान्त के साथ के.रि.पु. बल ने अपना एक हितैषी एवं सच्चा मित्र खो दिया है। हम के.रि.पु. बल के सदस्य आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अंतिम सैल्यूट करते हैं।

श्री. ए.वी. लिडल के.रि.पु. बल के नए अपर महानिदेशक

मध्य प्रदेश काडर तथा 1963 बैच के भारतीय, पुलिस सेवा के अधिकारी श्री ए.वी. लिडल ने 17 जून, 94 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में अपर महानिदेशक (मुख्यालय) का पदभार संभाल लिया।



अपने लम्बे पुलिस जीवन में श्री लिडल कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। उनके कुछ महत्वपूर्ण पदभारों में पुलिस अधीक्षक भोपाल, उप महानिरीक्षक ग्वालियर, उत्तर पूर्व तथा हिमाचल में चार वर्ष के लिए एस.एस. बी. का कार्यकाल, आठ वर्ष तक भारत तिब्बत सीमा पुलिस में पहले श्रीनगर (जम्मू कश्मीर) में उप महानिरीक्षक फिर मुख्यालय में महानिरीक्षक (परिचालन एवं स्थापना) तथा तीन वर्ष तक मणिपुर पुलिस के महानिदेशक के पदभार शामिल हैं। के.रि.पु. बल में आने से पूर्व श्री लिडल नई दिल्ली में नेशनल इंस्टीट्यूट आफ क्रिमिनोलोजी तथा फोरेंसिक साइंस के निदेशक पद पर कार्यरत थे।

श्री लिडल को 1980 में विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक तथा 1986 में सराहनीय सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।

पर्यावरण प्रेमी श्री लिडल फिल्म निर्माण के शौकीन हैं। श्री लिडल 1986 से लगातार प्रशिक्षण से संबंधित फिल्मों का निर्माण एवं निर्देशन कर रहे हैं। ये फिल्में दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क पर दिखाई जाती रही हैं।

वी.सी.गोयल के.रि.पु. बल के नए उप निदेशक (प्रशिक्षण)

भारतीय पुलिस सेवा के 1975 बैच तथा उत्तर प्रदेश काडर के श्री वी.सी. गोयल ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में उप निदेशक (प्रशिक्षण) का पदभार संभाल लिया है।



के.रि.पु. बल में आने से पूर्व श्री गोयल इलाहाबाद पुलिस मुख्यालय में उप महानिरीक्षक पद पर कार्यरत थे। श्री गोयल की अन्य नियुक्तियों में उत्तर प्रदेश के सात जिलों में पुलिस अधीक्षक, पुलिस ट्रेनिंग कालिज में कमान्डेन्ट तथा आगरा में सी.आई.डी. व इंटेलिजेंस के पुलिस अधीक्षक के पदभार शामिल हैं।

श्री गोयल को 1991 में विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया जा चुका है।

आल इंडिया पुलिस ड्यूटी मीट

37 वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट का आयोजन कर्नाटक पुलिस की देख रेख में किया गया। इस प्रतियोगिता में बल की टीम ने प्राथमिक चिकित्सा, मोटर परिवहन, लक्ष्य भेदन, बेतार तथा गुप्त लेख विद्या स्पर्धाओं में भाग लिया।

इन प्रतियोगिताओं में के.रि.पु. बल की टीम को चौथा स्थान प्राप्त हुआ। प्राथमिक चिकित्सा टीम के 68 बटालियन के कांस्टेबल नरेंद्र नाथ तथा 55 बटालियन के कांस्टेबल होशियार सिंह ने व्यक्तिगत स्पर्धाओं में संयुक्त रूप से कांस्य पदक जीता।

आर.ए.एफ. के कार्यों की प्रशंसा

राजस्थान के ब्यावर तथा अजमेर जिलों में सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई हड़ताल तथा बंद के आयोजन के दौरान कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के किए गए प्रयासों के लिए रेपिड एक्शन फोर्स की भरपूर प्रशंसा की गई है।

इस दौरान रेपिड एक्शन फोर्स की 103 बटालियन की युनिटें इस क्षेत्र में तैनात थीं। राजस्थान पुलिस के महानिदेशक श्री के.एन. माथुर ने बल के महानिदेशक को लिखे एक पत्र में कहा है कि वे रेपिड एक्शन फोर्स के जवानों के प्रशिक्षण, नैतिक बल व साहस और अनुशासन से बेहद प्रभावित हुए हैं। 16 मार्च से 4 अप्रैल, 94 तक अपनी तैनाती के दौरान 103 बटालियन के अधिकारियों तथा जवानों ने उच्च श्रेणी की कर्तव्यपरायणता तथा कार्यकुशलता का परिचय दिया।

सम्मान शौर्य वीरता के पुलिस पदक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 31 कर्मिकों को पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में विभिन्न आतंकवादी मुठभेड़ों में दिखाई गई अतुलनीय वीरता, साहस और कर्तव्य निष्ठा के लिए राष्ट्रपति महोदय ने शौर्य वीरता के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। ये पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :—



21/C पी.आर.एन. नायर (2 बटा.)



स. कमांडेंट डी. कानन (2 बटा.)



का. महाराज बक्श सिंह (2 बटा.)



का. शेख उस्मान (81 बटा.)



स. कमा. एच.आर. चौधरी (33 बटा.)



स. कमा. विवेक वैद (33 बटा.)



इंस्पेक्टर सोम प्रकाश (33 बटा.)



इंस्पेक्टर देवेन्द्र प्रसाद सिंह (33 बटा.)



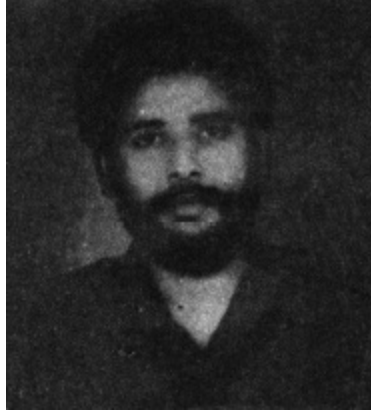
है. कां. महावीर सिंह (33 बटा.)



नामक सुभाष चंदर (33 बटा.)



ला. नायक सुरेन्द्र सिंह (75 बटा.)



कां. प्रीतम दास (73 बटा.)



है. कां. धन्ना सिंह (70 बटा.)



नायक महेश्वर सिंह (75 बटा.) मरणोपरांत



कां. एम. ए. देशमुख मरणोपरांत (73 बटा.)



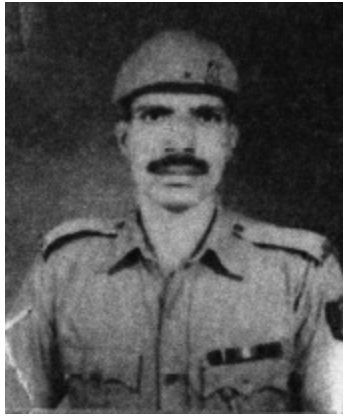
उ.नि. हरज्ञान सिंह (73 बटा.)



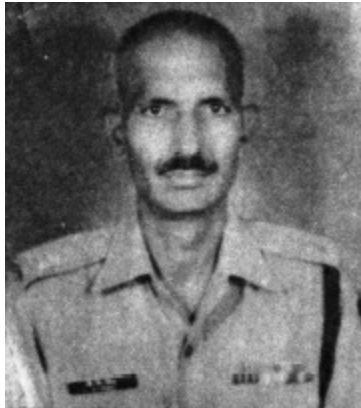
कां. हरीदास लिंडे (73 बटा.)



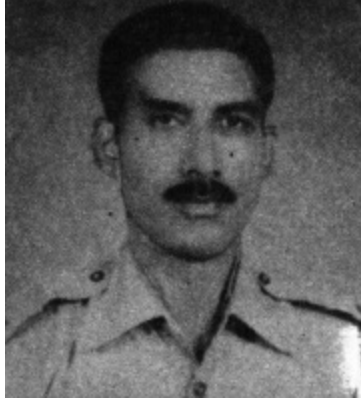
उ. कमां. रणपाल सिंह (47 बटा.)



कां. ओम प्रकाश (47 वटा.)



उ. कमां. वी.पी. सिंह (91 बटा.)



नायक रामावतार सिंह (91 बटा.)



है. कां. सुरेश सिंह (91 बटा.)



कां. प्रगट सिंह (91 बटा.)



कमांडेंट वी.डी. टोकस (47 बटा.)



उ. कमां. टी.एस. नेगी (47 बटा.)



कां. श्री भगवान (47 बटा.)



कां. संजीव कुमार (47 बटा.)

इनके अतिरिक्त 36 बटा. के नायक रघुबीर सिंह को मरणोपरांत, 93 बटा. के कां. पूसाराम, 36 बटा. के लां. ना. प्रकाश को मरणोपरांत तथा 36 बटा. के हैड कांस्टेबल एम. बोदरा को भी पदक देने की घोषणा की गई।

फोटो फीचर श्री इमदाद अली एक श्रद्धाजंलि

फोटो - एस.के. खन्ना



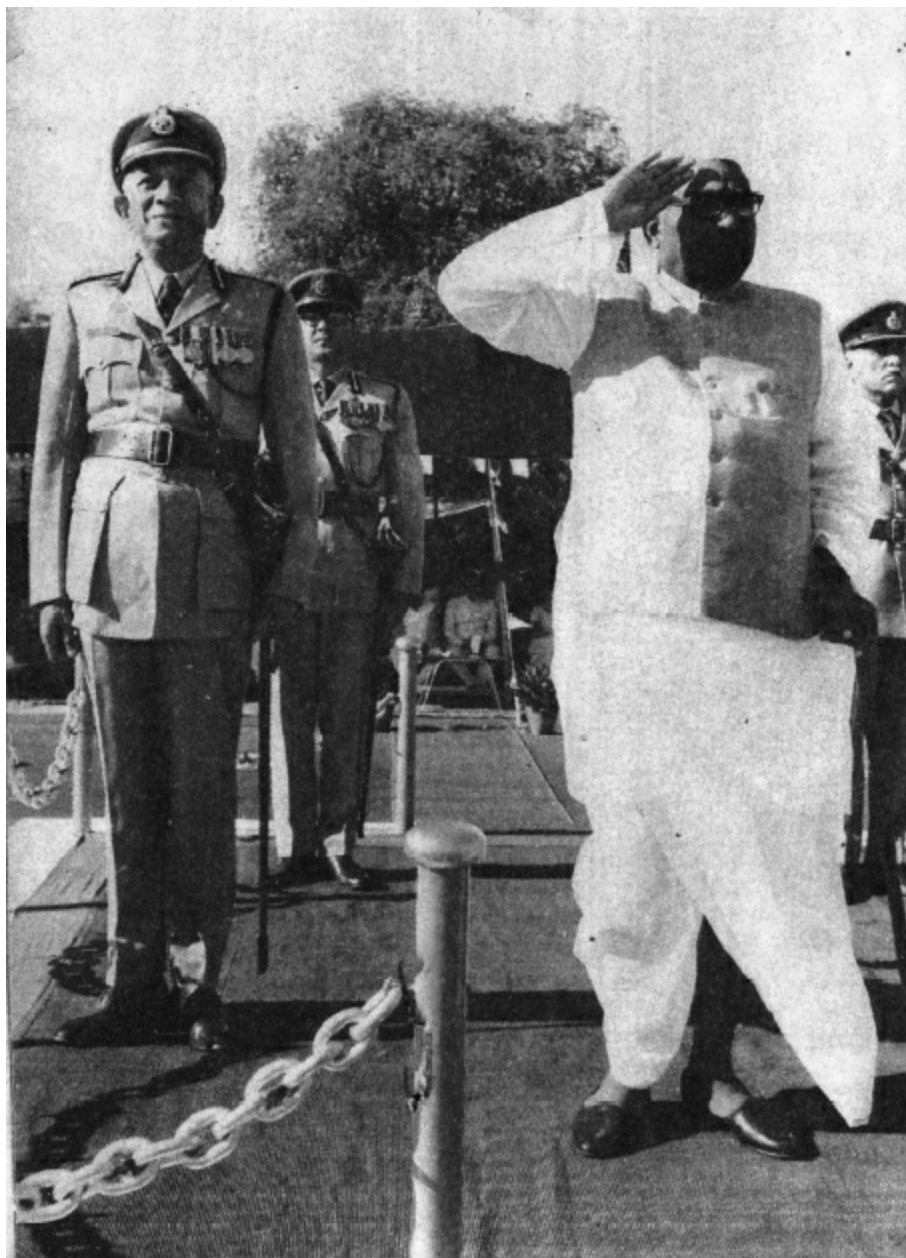
श्री इमदाद अली, तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमाते इंदिरा गांधी का पारेचय बल के उच्च अधिकारियों से कराते हुए।



श्री इमदाद अली बल के एक परिवार कल्याण केंद्र में।



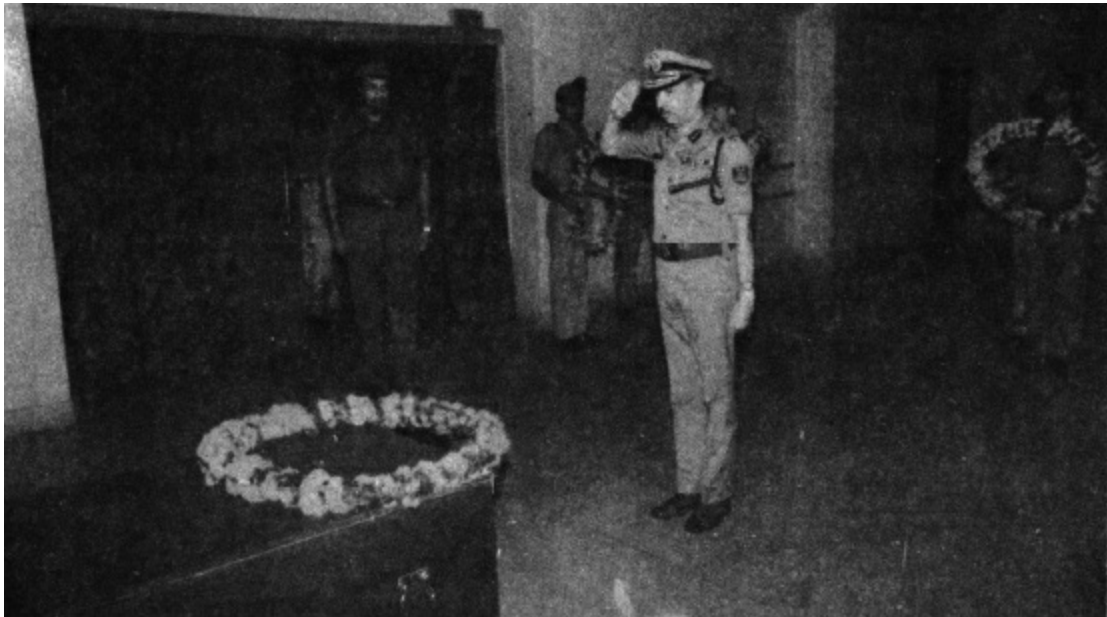
श्री इमदाद अली जवानों के साथ



बल की एक वार्षिक परेड में जगजीवन राम के साथ श्री इमदाद अली।



सेवा निवृत्ति पर श्री इमदाद अली को विदाई देते बल के अधिकारी।



श्री इमदाद अली को अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए अपर महानिदेशक श्री ए.वी. लिङ्गल।



श्री इमदाद अली के पार्थिव शरीर को वैन में चढ़ाते हुए जवान—एक गौरव पूर्ण जीवन की अंतिम यात्रा।

श्री इमदाद अली एक परिचय

—एस.सी. निरवाल



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के भूतपूर्व महानिदेशक श्री इमदाद अली का एक छोटी सी बीमारी के बाद 22 जून, 94 को मनीला, फिलीपींस में देहांत हो गया। वे वहां अपने पुत्र एवं पुत्रवधु के साथ रह रहे थे। असम तथा गुजरात के पुलिस महानिरीक्षक सहित कई महत्वपूर्ण पदों पर रहने के बाद श्री इमदाद अली 15 सितम्बर, 1969 को बल के पहले महानिदेशक श्री वी.जी. कानेटकर की सेवानिवृत्ति के बाद के.रि.पु. बल में महानिदेशक नियुक्त हुए। उस समय बल में केवल दो महानिरीक्षक हैदराबाद तथा कलकत्ता में नियुक्त थे।

स्व. श्री इमदाद अली ने जब बल को बागडोर संभाली उस समय देश के सम्मुख पंजाबी सुबे तथा चण्डीगढ़ मसले और पश्चिम बंगाल में नक्सलवादी गतिविधियों को लेकर आन्दोलन चल रहे थे।

श्री इमदाद अली 28 फरवरी, 1973 तक बल के महानिदेशक रहे, किन्तु अपने इस अल्प कार्यकाल के दौरान ही उन्होंने कई जटिल प्रशासनिक क्रियाकलापों तथा बल के विस्तार से संबंधित कार्यों को अंजाम दिया, जिनमें इण्डिया रिजर्व बटालियनों का बल में विलय तथा सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों तथा आपातकालीन कमीशन अधिकारियों की वरिष्ठता से जुड़े मुद्दे भी शामिल थे।

बल में अपनी अल्प अवधि के दौरान ही श्री इमदाद अली ने पूरे देश में फैली बल की विभिन्न युनिटों तथा नवगठित ग्रुप केन्द्रों का दौरा किया।

श्री इमदाद अली ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि उनके पूर्ववर्ती महानिदेशक श्री वी. जी. कानेटकर द्वारा इंडिया रिजर्व बटालियनों के विलय तथा केन्द्रों के निर्माण के संबंध में दिये गये निर्देशों तथा अन्य आदेशों का सटीक पालन हो।

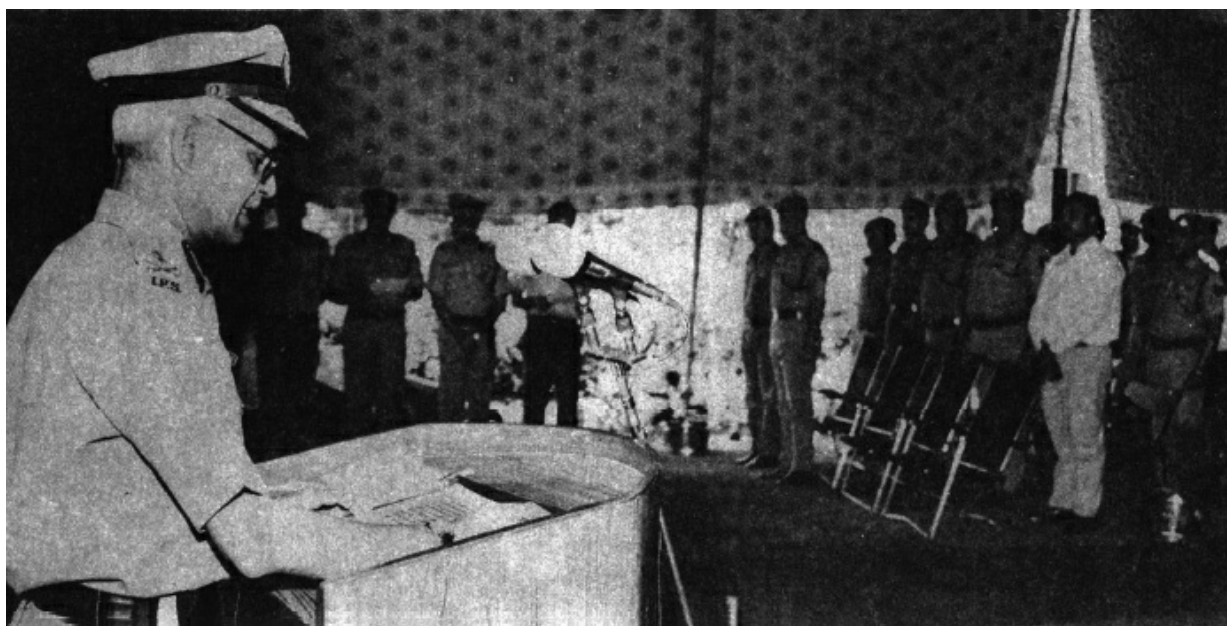
व्यक्तिगत तौर पर श्री इमदाद अली एक गंभीर, निष्पक्ष, ईमानदार, सर्वप्रिय, परिश्रमी, कार्य के प्रति समर्पित तथा दृढ़ लगन के व्यक्ति थे।

श्री इमदाद अली के समय उनका कार्यालय नार्थ ब्लॉक में हुआ करता था तथा महानिदेशालय आर. के. पुरम में स्थित था। श्री इमदाद अली ने कभी किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखी। उनके प्रति भी नहीं जिनका उनसे मत वैभिन्य था। दृढ़, अनुशासन प्रिय होने के बावजूद वह एक सहृदय व्यक्ति थे। उनके इसी गुण से संबंधित एक घटना मुझे याद पड़ती है। जिससे हमें मालूम होता है कि श्री इमदाद अली का अपने कर्मचारियों तथा साथियों के साथ कितना लगाव था। तथा वह किस प्रकार व अनजाने में हुई छोटी गलतियों को भुला देने में यकीन रखते थे। नजरअंदाज की जा सकने वाली छोटी मोटी गलतियों के लिए सजा देने के वे सख्त खिलाफ थे।

श्री इमदाद अली प्रायः दोपहर दो बजे दोपहर के खाने के लिए घर जाया करते थे तथा ठीक चार बजे तक लौट आया करते थे। यह उनका नियमित कार्यक्रम था। गर्मी की एक दोपहरी जब श्री इमदाद अली भोजन के लिए अपने घर गये, तो उनका आफिस रनर कुछ देर आराम करने के उद्देश्य से उनके वातानुकूलित कक्ष में चला गया तथा अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। दुर्भाग्य से उसकी आंख लग गई। मैं भी अपने कक्ष में कार्य में व्यस्त था। अतः मुझे भी कुछ पता न चल सका। कायदे से महानिदेशक के आने पर उनका आफिस रनर उनके लिए कार का दरवाजा खोलकर उन्हें उनके कक्ष तक लेकर आता है, किन्तु उस दिन वापिस लौटने पर गेट पर किसी को न पाकर श्री इमदाद अली चौंके, किन्तु बिना किसी से कुछ कहे वे सीधे अपने कक्ष तक आ गये मगर वहां भी कोई मौजूद ना था। श्री अली ने जब दरवाजा खोलने के लिए हैंडल घुमाया तो वह अन्दर से बंद था। अब तक कई ओर चपरासी वहां पहुंच चुके थे। मैं भी सूचना मिलने पर वहां पहुंच गया था। दरवाजा बार-बार पीटे जाने पर उस आफिस रनर ने आंखें मलते हुए दरवाजा खोला। वह भय से कांप रहा

था। यह उसकी तरफ से बरती गई एक भयंकर कोताही थी तथा हर व्यक्ति सोच रहा था कि न जाने अब क्या होगा, किन्तु श्री अली बिना किसी को कुछ कहे चुपचाप जाकर अपनी कुर्सी पर बैठ गये। कुछ समय बाद उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि कोई अन्य उचित जवान मिलने पर इस आफिस रनर को बिना परेशान किये, बिना कोई कारण बताये वापस उसकी यूनिट में भेज दिया जाये। उन्हें डर था कि उस रनर को वहां से हटाने का कारण बताने पर उसकी यूनिट उसे सजा दे सकती थी। ऐसे थ महान व्यक्तित्व के धनी श्री इमदाद अली।

के.रि.पु. बल द्वारा आतंकवाद के विरूद्ध सतत संघर्ष का प्रण



श्री त्रिपाठी महानिदेशालय के कार्मिकों को शपथ दिलाते हुए।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कर्मिकों ने 21 मई, 94 को अपनी अपनी युनिटों तथा मुख्यालय में आतंकवाद को जड़ से खत्म कर देने की अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की तीसरी पुण्य तिथि के अवसर पर देशव्यापी रूप से मनाए जा रहे आतंकवाद विरोधी दिवस के अवसर पर के.रि.पु. बल के सभी सदस्यों ने 21 मई, 94 को आतंकवाद के विरूद्ध सतत संघर्ष की प्रतिज्ञा ली।

के.रि.पु. बल मुख्यालय में कार्मिकों को यह शपथ बल के महानिदेशक श्री विलासमणी त्रिपाठी ने दिलायी। उन्होंने सदस्यों को शपथ दिलायी कि हम भारतवासी अपने देश की अहिंसा एवं सहनशीलता की परम्परा में दृढ़ विश्वास रखते हैं तथा निष्ठापूर्वक शपथ लेते हैं कि हम सभी प्रकार के आतंकवाद और हिंसा का डट कर

विरोध करेंगे। हम मानवजाते के सभी वर्गों के बीच शांति, सामाजिक सद्भाव तथा सुझबूझ कायम करने और मानवजीवन मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली और विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते हैं। बल के सेक्टर मुख्यालयों में सदस्यों को यह शपथ महानिरीक्षकों तथा बटालियनों में कमान्डेंटों ने दिलायी।

ज्ञातव्य है कि के.रि.पु. बल देश में आतंकवाद तथा देशद्रोही गतिविधियों से सीधे भिड़ने वाला सबसे बड़ा पुलिस बल है। आतंकवाद की बलिवेदी पर सर्वाधिक बलिदान भी इसी बल ने दिए हैं और आतंकवाद के बढ़ते प्रभाव पर काबू पाने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

के.रि.पु. बल ने 232 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों की माह मई, 94 के दौरान देश भर में आतंकवादियों तथा देशद्रोही तत्वों के साथ हुयी सात मुठभेड़ों तथा अन्य तलाशी अभियानों में नौ आतंकवादी मारे गये तथा 232 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया।

इस अवधि में बल के जवानों ने 37 घातक हथियार तथा भारी मात्र में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में दो ए.के. 47 राइफलें, चार वोल्ट एक्सन/303/315 बोर राइफलें, तीन कारबाईने, तीन स्टेनगने, चार पिस्तौले, एक रिवाल्वर, दो सैल्फ लोडिंग राइफलें और 18 एस.बी.बी एल/ डी.बी.बी.एल/12 बोर बन्दूकें शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के 11 कार्मिक गंभीर रूप से घायल हुए।

124 बटालियन की दीक्षांत परेड



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 124 वीं बटालियन द्वारा प्रशिक्षित 860 रंगरूटों का दीक्षांत एवं शपथ समारोह 5 मई, 1994 को जयपुर में सम्पन्न हुआ। परेड की सलामी बल के उत्तरी क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री एम.एस. यादव ने ली।

124 बटालियन का गठन अजमेर ग्रुप केन्द्र-दो के अपर उप महानिरीक्षक श्री बी.डी. सहगल की देखरेख में किया गया था। 12 नवम्बर, 92 से इस बटालियन की कमान कमान्डेन्ट पृथ्वी सिंह चौधरी के हाथ में है। लोक सभा चुनाव में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अन्य बटालियनों के साथ-साथ इस बटालियन को हरियाणा, राजस्थान, पंजाब एवं दिल्ली आदि कई स्थानों पर तैनात किया गया।

प्रशिक्षण बटालियन के रूप में स्थापित 124 बटालियन को जुलाई, 1991 में अजमेर से जयपुर के पास आमेर तहसील में रामगढ़ मार्ग पर स्थानान्तरित किया गया। इस बटालियन के जवानों को बल के अन्य रंगरूटों के समान ही आधुनिक हथियारों आदि के प्रशिक्षण के साथ-साथ विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा तथा बिना हथियार के लड़ाई का भी प्रशिक्षण दिया गया। इन प्रशिक्षित जवानों को बल की अन्य बटालियनों में रिक्त पड़े स्थानों पर स्थानान्तरित कर दिया जायेगा तथा यह बटालियन फिर से रंगरूटों की भर्ती कर उन्हें प्रशिक्षण देगी।

इस अवसर पर जवान को सम्बोधित करते हुए महानिरीक्षक श्री एम.एस. यादव ने उन्हें बल की गौरवशाली परम्पराओं की याद दिलाते हुए आह्वान किया कि वे के.रि.पु. बल के इतिहास में ओर स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ें तथा इसकी गौरवशाली

परम्पराओं को ओर विकासेत करें। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी रहे जवानों को पुरस्कार भी वितरित किए। सर्व श्रेष्ठ रंगरूट/ट्रेनी का पुरस्कार तरूण कुमार विश्वास को, इंडोर बैस्ट का खिताब देवदास दरनाल को तथा आउट डोर बैस्ट का सम्मान मनोज कुमार चौहान को प्रदान किया गया। श्रेष्ठ प्रशिक्षक का पुरस्कार हैड कांस्टेबल मनवर सिंह को दिया गया।

परेड का नेतृत्व कमान्डेन्ट पृथ्वी सिंह चौधरी ने किया। कार्यक्रम के अंत में जवानों ने शारीरिक व्यायाम तथा आत्मरक्षा आदि के करतब दिखाए।

महानिदेशक द्वारा ग्रुप केन्द्र बंगलौर उद्घाटन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री विलासमणि त्रिपाठी ने 27 मई, को येलेहंका स्थित बंगलौर ग्रुप केन्द्र का उद्घाटन किया। इस मौके पर दक्षिण क्षेत्र के अपर महानिदेशक श्री डी. आर. कार्तिकेयन भी उपस्थित थे। इस अवसर पर आयोजित किए गए भव्य समारोह में ग्रुप केन्द्र, 77, 91, 99 तथा 58 बटालियन के अधिकारियों तथा कार्मिकों ने भारी संख्या में भाग लिया। महानिदेशक महोदय ने इस मौके पर बोलते हुए ग्रुप केन्द्र के निर्माण तथा तीव्र विकास के लिए अपनी शुभकामनायें देते हुए आशा व्यक्त की कि अपर उप महानिरीक्षक श्री जगदीश चन्द्रन के नेतृत्व में ग्रुप केन्द्र के निर्माण का कार्य न केवल तेजी से पूर्ण होगा अपितु येलेहंका स्थित यह ग्रुप केन्द्र बल के लिए एक आदर्श ग्रुप केन्द्र भी साबित होगा।

इस मौके पर उन्होंने एक सैनिक सम्मेलन को भी सम्बोधित किया।

माह मई, 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

माह मई, 94 में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए।
सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

है.का. चुरूराम (113 बटा.), है.कां. /डा. भरत प्रसाद (123 बटा.), का. राजू मोती लाल खेरडे (एस.डी.जी.) है.कां. अमलदेव सिंह (आर.टी.सी. 3), कां. प्रदीप एम. खेरडे (90 बटा.), ला.ना. जनार्दन सम्पत (1 बटा.), नायक बी. एम. भट्ट (32 बटा.), है. का. मुलायम सिंह (91 बटा.), है.का. राजा राम (50 बटा.), लां ना. यामदास घीमीरे (63 बटा.), का. शिबु मुरमा (11 बटा.), ला.ना. सतबीर सिंह (53 बटा.), है.का. (रडियो मैकेनिक) सी. डी. सिंह सिंग.) कां. मनजीत घोष (40 बटा.), एस.एम.ओ.एस.जे.एस. राजोरे (एस.जी.सी.), कां. के.के. कृष्णन (ग्रु.के. हैदराबाद), कां. चंद्रा (19 बटा.), का. सेवा सिंह (14 बटा.), नायक गोपी चंद्र (81 बटा.), का. उमा शंकर (73 बटा.), का. टेलर सुनील कुमार दास (ग्रु. के. नई दिल्ली), बारबर राम कुमार (104 बटा.) तथा इंस्पेक्टर केदारनाथ (112 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त हुयी सूचना के अनुसार अप्रैल, 94 माह में 27

बटालियन के कां. आई. वाई. गोनों तथा 60 बटालियन के कां. राज कुमार | सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

जोखिम निधि लाभ

माह मई, 1994 में केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 24 मामलों में कुल 8,94,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की केन्द्रीय कल्याण निधि तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के छः मामलों में कुल 90,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये। जोखिम निधि “बी” (विशेष कल्याण निधि) से भी इसके चार सदस्यों की मृत्यु के मामलों में कुल 1,20,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

वित्त सलाहकार का ग्रुप केंद्र नई दिल्ली का दौरा



वित्त सलाहकार सुश्री आर.एस.खान, ग्रुप केंद्र नई दिल्ली के कोओपरेटिव स्टोर का दौरा करते हुए

वित्त सलाहकार सुश्री आर.एस.खान ने नई दिल्ली ग्रुप केंद्र का दौरा कर वहां स्थित विभिन्न युनिटों के कार्यभार का जायजा लिया। इस अवसर पर सुश्री खान ग्रुप केंद्र कार्यालय, बेस अस्पताल, परिवार कल्याण केंद्र, सहकारिता स्टोर तथा सी.आर.पी.एफ. प्रेस में गईं तथा उन्होंने वहाँ के कार्य में गहरी रुचि दिखाई। साथ ही उन्होंने इन विभागों की कार्यकुशलता बढ़ाने के सम्बंध में भी कई सुझाव दिये।

33 बटालियन ने कब्बडी खेताब जीता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की उत्तरी सेक्टर की प्रथम अंतर बटालियन कब्बडी प्रतियोगिता 33 बटालियन ने जीत ली। नई दिल्ली रविंद्र रंगशाला स्थित 33 बटालियन स्थल पर 23 मई, 94 को खेले गये एक रोमांचक मुकाबले में 33 बटालियन ने 54 बटालियन को 46-28 अंकों से पराजित किया।

मध्यांतर तक स्कोर 21-11 था। इस मौके पर के.रि.पु. बल के नई दिल्ली रेंज के उप महानिरीक्षक श्री बी.एम. सारस्वत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये।

33 बटालियन फाइनल मुकाबले में 14 बटा., 47 बटा., 130 बटा. तथा 71 बटा. को लीग मैचों में तथा स्पेशल ड्यूटी ग्रुप बटालियन को सेमी फाइनल मुकाबले में परास्त कर पहुंची थी। जबकि 54 बटालियन को फाइनल में पहुंचने के लिए 61 बटा., 40 बटा., ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली तथा 3 बटा. को लीग मैचों में तथा 55 बटालियन को सेमी फाइनल में पराजित करना पड़ा।

इस छः दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन 33 बटालियन के कमान्डेन्ट श्री बी.एस. नारंग ने किया। 16 मई, 94 से शुरू हुयी इस प्रतियोगिता में बल की 3, 7, 13, 14, 33, 40, 47, 54, 55, 61, 67, 71 तथा 130 बटा., ग्रुप केन्द्र एक व दो अजमेर, नई दिल्ली तथा स्पेशल ड्यूटी ग्रुप की 17 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाक आउट आधार पर खेले गए।

रजि० न०. 47167/87



उप महानिरीक्षक नई दिल्ली श्री वी.एम. सारस्वत 33 बटालियन को अंतर बटालियन कबड्डी प्रतियोगिता की ट्रॉफी भेंट करते हुए।

मुख्य सम्पादक: भूदेव चक्रवर्ती। सम्पादक: सतीश खन्ना तथा अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार: सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लाक-1 सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली-110003 की ओर से भूदेव चक्रवर्ती।
मुद्रक : सी० आर० पी० प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : फ्लेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

सी० आर० पी० एफ० समाचार

खंड-7

अंक-3

31 अगस्त, 1994

1 भाद्रपद, शक 1916



चंदन बाड़ी में तीर्थयात्रियों को सुरक्षा प्रदान करते के.रि.पु. बल के जवान

सम्पादकीय

इस वर्ष की अमरनाथ यात्रा के.रि.पु.बल की सफल कार्यशैली और कारगर भूमिका की एक और मिसाल है। इस बार कुछ आतंकवादी गुटों की लगातार धमकियों के कारण, इस वार्षिक यात्रा के प्रारंभ होने पर ही संदेह खड़ा हो गया था, किन्तु जब के.रि.पु.बल को जम्मू से चंदनबाड़ी तक तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा का दायित्व सौंपा गया, तो इस जोखिम भरी यात्रा की शुरूआत जम्मू से हुई। हालांकि आतंकवादी धमकियों के कारण इस वर्ष तीर्थयात्रियों की संख्या लगभग 40 हजार थी, जो कि पिछले वर्षों की तीर्थ यात्रियों की लगभग डेढ़ लाख की संख्या की तुलना में काफी कम थी, मगर फिर भी 40 हजार यात्रियों को इतने लम्बे व कठिन पथ पर सुरक्षा प्रदान करना एक जटिल कार्य था। मगर जटिलताओं को सुलझाना, कठिनाइयों पर हंसते-हंसते पार पाना, और चुनौतियों का सीना खोल कर सामना करना के.रि.पु.बल के जवानों की पुरानी आदत है। यात्रा के दौरान के.रि.पु.बल के जवानों ने यात्रियों की आवास, चिकित्सा, भोजन तथा अन्य मानवीय जरूरतों को पूरा कर न केवल उनका दिल जीता, अपितु उनके हृदय पर अपने सौहार्द और मैत्री की एक ऐसी मोहर अंकित की जो वर्षों तक उन्हें जवानों की सेवा की याद दिलाती रहेगी। यात्रियों के चेहरों पर उभरे कृतज्ञता के चिह्न हमारी सेवाओं का एक ऐसा इनाम है, जिसके साक्षी हमारे साथ-साथ दिल्ली से गए पत्रकारों के एक दल के सदस्य भी बने। और इस प्रकार के.रि.पु.बल ने एक बार फिर से देश के सम्मुख अपनी बहुआयामीय दक्षता और व्यवहार कुशलता का एक नमूना पेश कर दिया।

अगस्त के महीने में ही 20 तारीख को पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की स्मृति में पूरा देश सद्भावना दिवस मनाता है। इस दिन हम शपथ लेते हैं कि हम आपसी झगड़े और विवाद हल करने के लिए लड़ाई-झगड़े की जगह सौहार्दपूर्ण ढंग से बातचीत का सहारा लेते हुए संवैधानिक माध्यमों को ही सहारा बनाएंगे। इस दिवस का के.रि.पु.बल और इसके सदस्यों के लिए एक विशेष महत्त्व है। के.रि.पु.बल आतंकवाद से लड़ने वाला देश का सबसे बड़ा सैन्य बल है। हम पर दायित्व है कि हम आतंकवाद के रास्ते पर चल रहे नौजवानों का आपसी सद्भाव और सौहार्द की राह पर लाएं। हम अपने प्रयास में प्राणोपन्न से जुटे हैं। मगर पथ से भ्रष्ट हो चुके, और विध्वंस की राह पर चल रहे युवक भी इस दिवस के संदेश को ग्रहण कर सकें, तो यह इस दिवस की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

श्री डी.आर. यादव के.रि.पु. बल के नए उप निदेशक (प्रशासन)

श्री धनपत राय यादव ने 30 अगस्त, 94 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल महानिदेशालय में उप निदेशक (प्रशासन) का पदभार संभाल लिया है। इससे पूर्व श्री यादव चंडीगढ़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के उप महानिरीक्षक के रूप में तैनात थे।



डी.आर. यादव

पंजाब विश्व विद्यालय के स्नातक श्री यादव 27 सितम्बर, 1963 को सेना की रेजीमेंट आर्टिलरी में शामिल हुए तथा 23 सितम्बर, 1967 को सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारी के रूप में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में शामिल हो गए। श्री यादव अधिकारियों के उस पहले बैच में संबंध रखते हैं जिन्होंने मणिपुर में भूमिगत तत्वों से निपटने के लिए ग्राणीण स्वैच्छिक बल (विलेज वालंटियर फोर्स) को गठित तथा प्रशिक्षित किया। श्री यादव राष्ट्रीय पुलिस अकादमी हैदराबाद में सीनियर आफिसर्स तथा ट्रेनिंग आफ टेनर्स एडमिनिस्ट्रेटिव आफिसर्स कोर्स कर चुके हैं। उन्होंने दिल्ली स्थिति आई.आई.पी.ए.से मिटीरियल मैनेजमेंट इन एन इमरजेंसी कोर्स भी किया है।

श्री यादव को विशिष्ट तथा उल्लेखनीय सेवाओं के पुलिस पदकों तथा महानिदेशक के प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया जा चुका है।

सद्भावना दिवस पर के.रि.पु. बल कर्मचारियों द्वारा शपथ

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी के जन्म दिवस के अवसर पर 20 अगस्त, 94 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की सभी यूनिटों में सद्भावना दिवस मनाया गया। इस मौके पर बल के सभी सदस्यों ने देश की भावात्मक एकता और सद्भावना को बनाए रखने के लिए सतत कार्य करते रहने की शपथ ली।

नई दिल्ली स्थित बल के महानिदेशालय के कार्मिकों को बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने शपथ दिलायी, इस मौके पर बल के सदस्यों ने शपथ ली कि वे जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा का भेदभाव किए बिना भावात्मक एकता और सद्भावना के लिए कार्य करते रहेंगे। उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि वे सभी प्रकार के मतभेद चाहे वे

व्यापक हो या सामूहिक, हिंसा का सहारा लिए बिना बातचीत और संवैधानिक माध्यमों से तय करेंगे।

सिक्किम में बल के कार्य की प्रशंसा

सिक्किम में डायरेक्ट टैक्स कानूनों को लागू करने के मुद्दे पर पिछले कुछ महिनों से एक विवाद बना हुआ है। इस मुद्दे को लेकर समाज के विभिन्न वर्गों तथा समुदायों के बीच एक तनाव पैदा हो गया था। इस कठिन स्थिति में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने स्थिति को सामान्य बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बल के महानिदेशक श्री विलास मणि त्रिपाठी को लिखे एक पत्र में सिक्किम पुलिस के महानिदेशक श्री पी.एस.बावा ने कहा कि बल के जवानों तथा अधिकारियों द्वारा दिए गए सौहार्दपूर्ण सहयोग से ही वह स्थिति पर काबू पा सके।

उन्होंने कमान्डेन्ट एन.सी.भट्ट (67 बटा.), कमान्डेन्ट ए.के.छिब्बर (69 बटा.), कमान्डेन्ट सुरेन्द्र पाल (62 बटा.) तथा द्वितीय कमान अधिकारी अमर सिंह (84 बटा.) के सहयोग की विशेष रूप से सराहना की है।

अनमोल वचन

- घृणा पर घृणा के द्वारा कभी भी विजय नहीं प्राप्त की जा सकती, प्रेम के द्वारा की घृणा पर विजय पाई जा सकती है।

महात्मा गांधी

- मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है।

प्रेमचंद

- जो दूसरे को स्वतंत्रता से वंचित रखते हैं, वे स्वयं भी उसके अधिकारी नहीं हैं।

लिनकन

- आसूँ करूणा की बूंद है।

बायरन

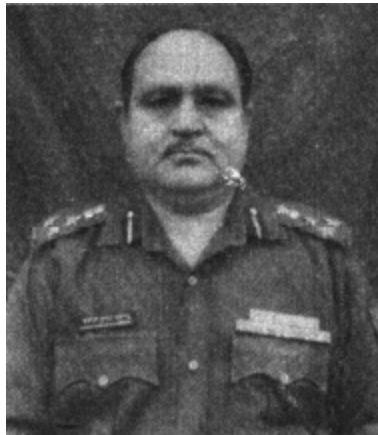
- धीरज सारे आनंदों और शक्तियों का मूल है।

- प्रसन्नता स्वास्थ्य है, इसके विपरीत उदासी रोग है।

स्वतन्त्रता दिवस सम्मान

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर भारत के राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 31 कार्मिकों को पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से चार कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए तथा 27 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किये हैं। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं—

विशिष्ट सेवाओं के लिए पुलिस पदक



उप महानिरीक्षक (श्रीनगर) एस.के. महेंद्रू



अपर उप महानिरीक्षक (ग्रुप केन्द्र आवडी) वाई. एन. कश्यप



अपर उप महानिरीक्षक (उत्तर-पश्चिम जोन) आर.एस. गिल



द्वितीय कमान अधिकारी (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद) एम.एम. खान

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



उप निदेशक (स्थापना) डा० दीपा मेहता (महानिदेशालय)



अपर उप महानिरीक्षक बी.एस. रेखी (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद)



सी.एम.ओ. डा० पी. कौशल (बेस अस्पताल नई दिल्ली)



सहायक निदेशक ए.एस. राठौर (आं. सु. अकादमी)



कमांडेंट पी.के. शर्मा (9 बटा.)



कमांडेंट एन.एन. मिश्रा (1 बटा.)



द्वितीय कमान अधिकारी प्रताप सिंह (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद)



उ. कमांडेंट छेदी सिंह (62 बटा.)



उ. कमां. एम.एस. नेगी (महानिदेशालय)



स. कमां. गुरनाम सिंह (31 बटा.)



स. कमां. रामा शंकर राम (99 बटा.)



एस.एम.वी. कुजू (91 बटा.)



नि. राजेंद्र सिंह (ग्रु.के. गांधी नगर)



नि./रे. आपरेटर ओ.पी. पाणीकर (1 सिग.)



एस.एम.पी.एस. नाम्बीसन (उ.प. जोन)



नि.(एम.) रमेश चंद दूध पुरी (स्पेशल सेक्टर)



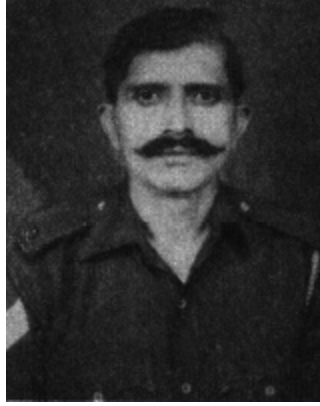
नि. (एम.) एम. के. नागाप्पन पिल्ले (महानिदेशालय)



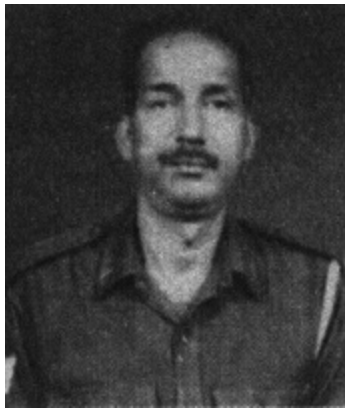
उ. नि. सुखदेव सिंह (88 बटा.)



उ. नि. अजीत सिंह (107 आर.ए.एफ.)



है. कां. मुहम्मद रफीक (10 बटा.)



है. कां. पी. एस. नायर (13 बटा.)



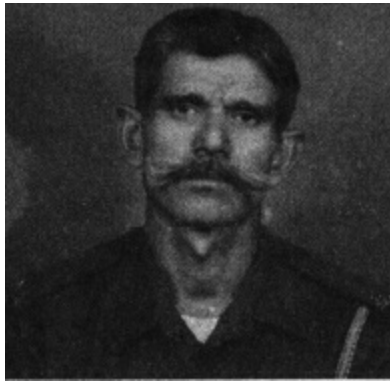
है. कां. जसोद सिंह (40 बटा.)



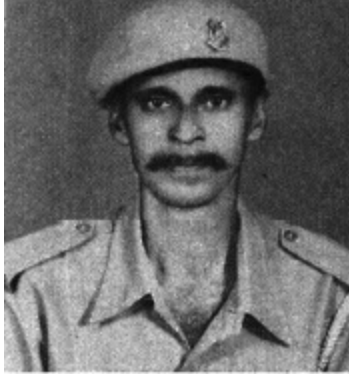
है. का. जय प्रकाश यादव (सिगनल ग्रुप केन्द्र)



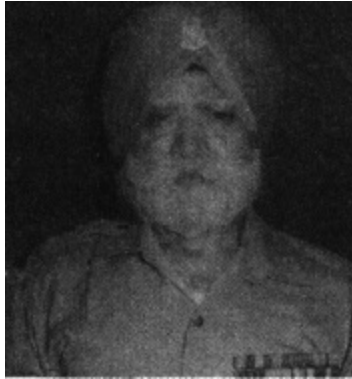
नायक/डा. राजेंद्र सिंह (89 बटा.)



का. राम सिंह ग्रुप.के.-2 अजमेर



स.क. भाष्करन नायर (ग्रप केन्द्र पल्ली पुरम)

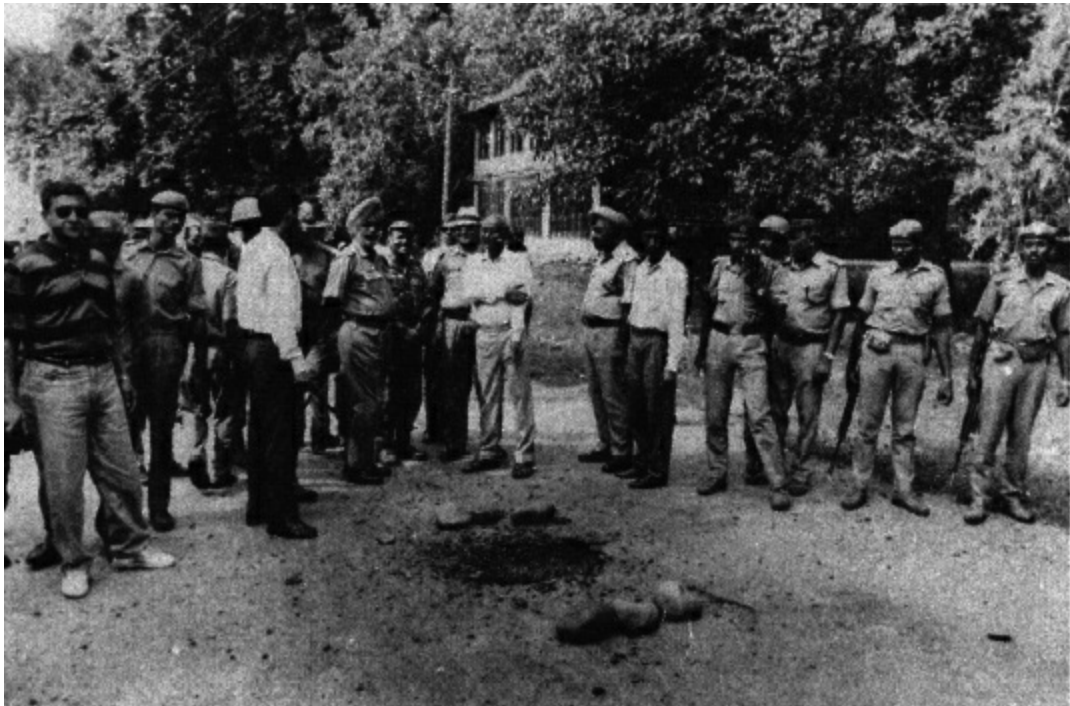


कुक करम सिंह (108 आर.ए. एफ)

**अमरनाथ यात्रा याद रहेगा सी.आर.पी.एफ.
का सहयोग**



श्रीनगर में डल झील के किनारे तैनात बल का एक जवान



पत्रकारों के मार्ग में फटी एक माईन स्थल पर अपर महानिदेशक श्री डी.डी. गुप्ता पत्रकारों के साथ हरकत उल अंसार सहित कई उग्रवादी संगठनों की धमकी के बावजूद वार्षिक अमरनाथ यात्रा 21 अगस्त 94 को शांतिपूर्वक संपन्न हो गई।

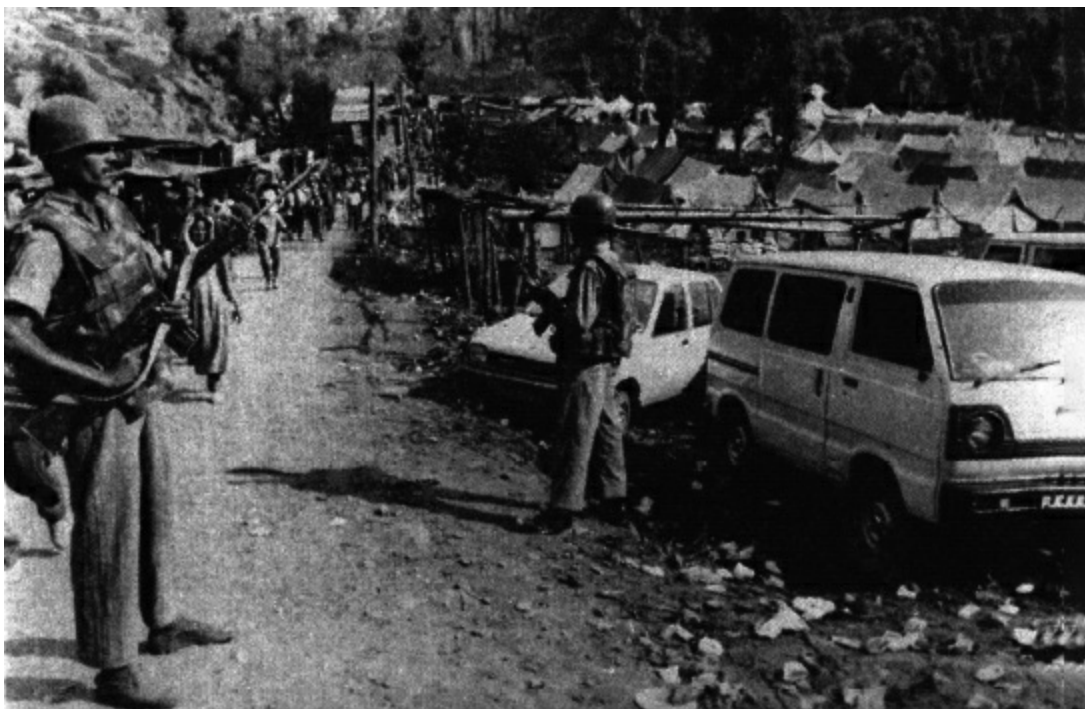
उग्रवादी संगठनों की धमकी के कारण अमरनाथ यात्रा में इस बार तीर्थयात्रियों

को संख्या पिछले वर्षों को तुलना में कम अवश्य रही लोकेन सेना, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा बी.एस.एफ. की निरन्तर चौकसी और प्रबन्ध ने आतंकवादियों के मसूबों पर पानी फेर दिया ।

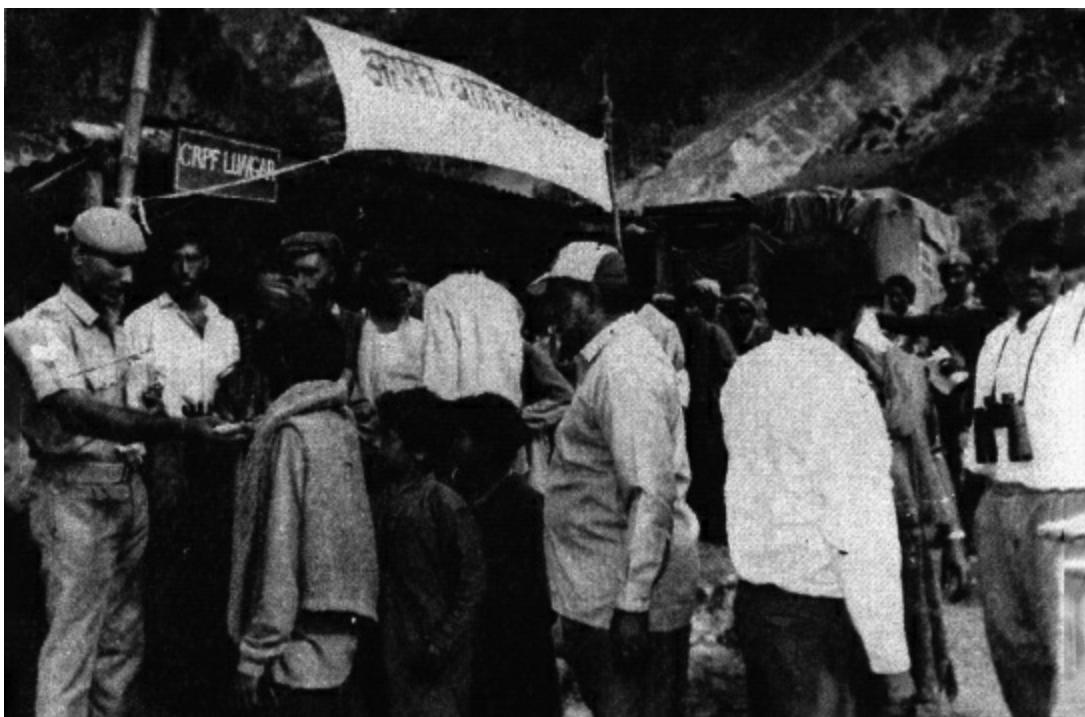
इस यात्रा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा तीर्थयात्रियों की सुरक्षा तथा अन्य प्रबन्धों के बारे में जानकारी देने के लिए दिल्ली से पत्रकारों तथा दूरदर्शन टीम के एक छोटे से दल को दिल्ली से चंदनबाड़ी ले जाया गया । इन पत्रकारों से बात करते हुए अपर महानिदेशक श्री डी.डी गुप्ता ने बताया कि आतंकवादियों की धमकियों के कारण इस वर्ष केवल 40 हजार तीर्थ यात्री ही अमरनाथ यात्रा पर आये, जबकि पिछले वर्ष इनकी संख्या लगभग एक लाख बीस हजार थी ।

उन्होंने बताया कि उग्रवादियों की धमकी तथा स्थानीय लोगों के असहयोग को दृष्टि रखते हुए तीर्थ यात्रियों को जम्मू से चंदनबाड़ी तक सुरक्षित ले जाने तथा उनके ठहरने व खाने-पीने की समुचित व्यवस्था का दायित्व के.रि.पु.बल को सौंपा गया ।

श्री गुप्ता ने बताया कि एक समय स्थिति ये थी कि इस यात्रा का प्रारम्भ होना ही संदिग्ध लग रहा था । यह लगने लगा था कि लोग यहां आएंगे ही नहीं । पहलगाम तथा चंदन बाड़ी में तीर्थ यात्रियों को ठहराने के लिए के.रि.पु.बल को भी श्रीनगर, जम्मू तथा अन्य स्थानों से बड़ी संख्या में टैन्ट मंगवाने पड़े । यहां तक कि उनके लिए कम्बल, भोजन आदि का प्रबंध भी बल को अपने स्रोतों से ही करना पड़ा । श्री गुप्ता ने बताया कि तीर्थ यात्रियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बल ने चंदनबाड़ी में एक अस्थायी अस्पताल की व्यवस्था की, जिसमें हजारों तीर्थयात्रियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई, बीमारों की संख्या इतनी अधिक थी कि कुछ ही दिनों में अस्पताल की दवाईयां समाप्त होने लगी तब उन्हें अन्य स्थानों से दवाईयां की व्यवस्था करनी पड़ी ।



चंदन बाड़ी कैम्प बल के जवानों की निगरानी में



के.रि.पु. बल द्वारा तीर्थ यात्रियों के लिए चलाया जा रहा लंगर



तीर्थ यात्रियों को बल द्वारा उपलब्ध चिकित्सा सुविधा

चंदनबाड़ी में तम्बुओं में अपने चार वर्षीय नाती के साथ ठहरी देवरिया की अस्सी वर्षीय लालमति का कहना था कि मैं काफिले के साथ पहलगाम तक तो आ गई लेकिन अगर सी.आर.पी.एफ. के जवान सहयोग न देते तो मैं यहां तक हरगिज नहीं पहुंच सकती थी।

करीब 250 तम्बुओं में विश्राम कर रहे तीर्थ यात्रियों में से कई ने अमरनाथ यात्रा पर उग्रवादियों द्वारा लगाई गई रोक का जिक्र करते हुए कहा कि धमकी का डर तो था लेकिन यहां आने पर उन्हें डरने वाली कोई बात नजर नहीं आ रही, क्योंकि के.रि.पु.बल तथा अन्य सुरक्षा बलों के प्रबन्ध इतने जबरदस्त हैं कि आतंकवादी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

यात्रियों के खाने पीने की व्यवस्था करने के लिए आरंभ में के.रि.पु. बल को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बल के उप महानिरीक्षक सतीश कुमार महेंद्र ने बताया कि खाना पकाने के लिए रसोई गैस और रसोईयों की व्यवस्था के लिए श्री नगर और जम्मू स्थित बटालियनों की मदद लेनी पड़ी। श्री महेंद्र ने बताया कि शुरू में तो तीर्थ यात्रियों को खिलाने की सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर थी, लेकिन बाद में दिल्ली, हरियाणा और पंजाब से यहां आ कर धार्मिक संस्थानों और लोगों द्वारा लंगर लगाने के बाद थोड़ी राहत मिली।

कई तरह की कठिनाइयों का सामना करने वाले कई तीर्थयात्रियों ने कहा कि उन्हें कठिनाइयां अवश्य हुईं लेकिन यदि के.रि.पु.बल की सहायता प्राप्त न होती, तो वे यात्रा कर ही न पाते।

महानिदेशक का रामपुर ग्रुप केन्द्र का दौरा



महानिरीक्षक श्री एस.सी. चौबे को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

बल के महानिदेशक श्री विलास मणि त्रिपाठी तथा उनकी पत्नी श्रीमति इंदु त्रिपाठी ने 13 अगस्त 94 को के.रि.पु.बल के ग्रुप केन्द्र रामपुर का दौरा किया।

श्री त्रिपाठी ने ग्रुप केन्द्र में आयोजित भव्य समारोह में एक नाइन होल गोल्फ कोर्स का उद्घाटन किया। यह कोर्स रामपुर में अपनी तरह का पहला कोर्स है तथा यह सार्वजनिक व्यक्तियों के लिए भी खोल दिया गया है। इस नाइन होल कोर्स को बढ़ाकर शीघ्र ही अट्टारह होल कोर्स बनाने की योजना है। उपमहानिरीक्षक रामपुर श्री जे.एस.नेगी, जो स्वयं एक अच्छे गॉल्फ खिलाड़ी हैं, ने गोल्फ कोर्स की स्थापना के लिये बहुत रूचि ली है।

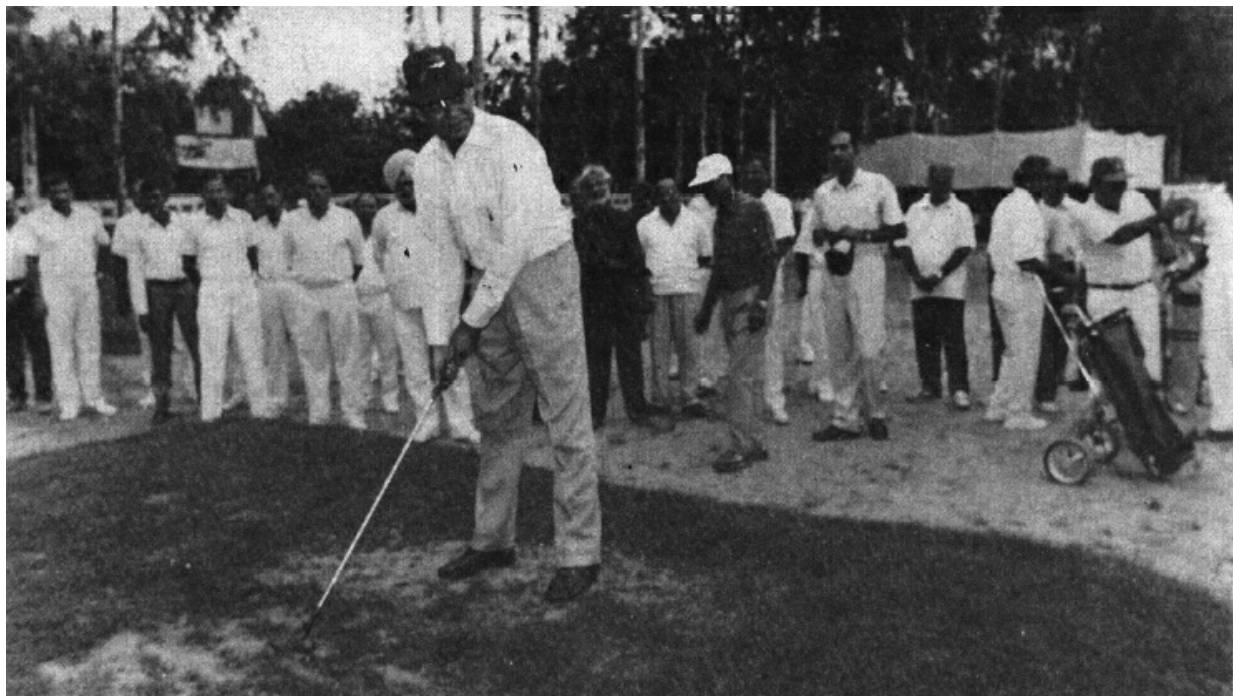
श्री त्रिपाठी ने बाद में ग्रुप केन्द्र के उन व्यक्तियों के लिए 101 नये बनाये गये टाइप-एक फेमिली क्वार्टरों का भी उद्घाटन किया, जिनकी बटालियनें इस समय उत्तर-पूर्वी राज्यों में विद्रोह का मुकाबला कर रही हैं।

के.रि.पु.बल के अधिकारियों तथा जवानों के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक महोदय ने देश की एकता तथा अखण्डता की रक्षा करने हेतु राष्ट्र के

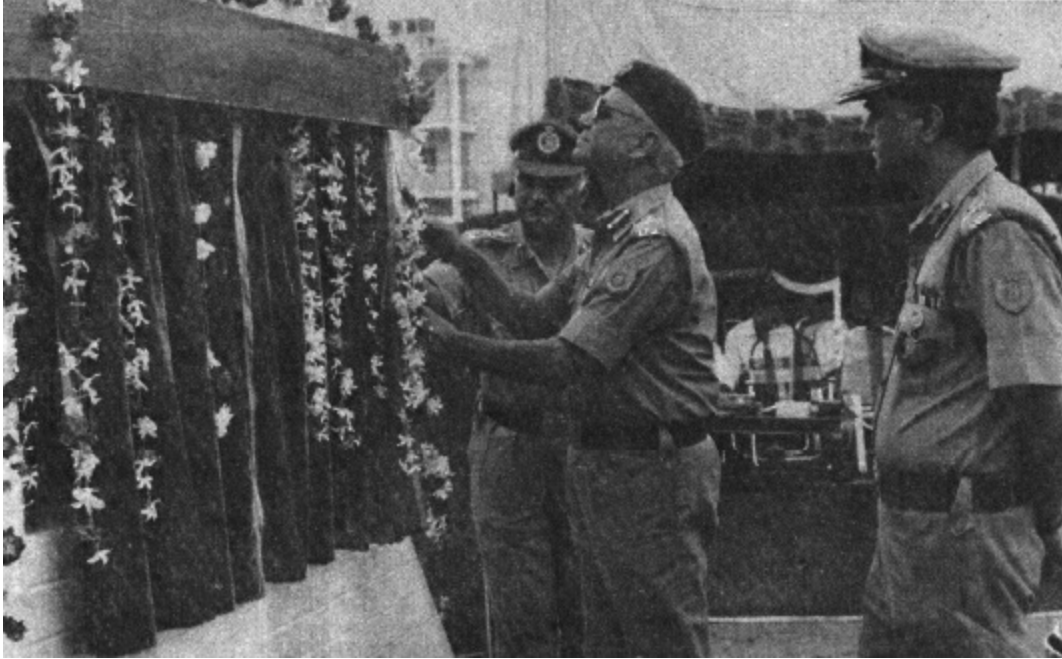
शांति रक्षक के रूप में उनकी सराहनीय भूमिका के लिए उन्हें बधाई दी ।
के.रि.पु.बल की सुनहरी परंपराओं अर्थात् राष्ट्रवादी अभिविन्यास, धर्मनिरपेक्षता,
ईमानदारी तथा राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ समन्वय का स्मरण कराते हुए
उन्होंने उनसे आवश्यक व्यावसायिकता के साथ अपनी भूमिका तथा उत्तरदायित्व
निभाने के लिये कहा ।

श्री त्रिपाठी ने बल के 15 कार्मिकों को विभिन्न क्षेत्रों में उनके उल्लेखनीय योगदान
के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क से भी सम्मानित किया ।

ये सम्मानित कार्मिक हैं—श्री एस.सी. चौबे पुलिस महानिरीक्षक केन्द्रीय सेक्टर, श्री
ओ.पी.एस.मलिक पुलिस उप महानिरीक्षक इलाहबाद, श्री एस.सी.शर्मा सहायक
निदेशक (केन्द्रीय सेक्टर), श्री मुख्तयार सिंह कमान्डेंट 132 बटा., श्री आर.एस.विक्रम
कमान्डेंट 72 बटा., श्री के. के. शिव प्रसाद द्वितीय कमान अधिकारी 104 बटा., श्री
वी.के.शर्मा द्वितीय कमान अधिकारी ग्रुप केन्द्र रामपुर, श्री एम.सी. सक्सेना प्रशासन
अधिकारी ग्रुप केन्द्र रामपुर, सूबेदार मेजर बी.एम. मिश्रा (केन्द्रीय सेक्टर), इंस्पेक्टर
बी.सी. कुल्ब (पु.उ.म. कार्यालय रामपुर), इंस्पेक्टर हरगगन सिंह 22 बटालियन, हेड
कांस्टेबल के.एन. द्विवेदी ग्रुप केन्द्र रामपुर, हेड कांस्टेबल बहादुर सिंह ग्रुप केन्द्र
रामपुर, हेड कांस्टेबल कश्मीरा सिंह 22 बटालियन तथा कांस्टेबल प्रह्लाद सिंह ग्रुप
केन्द्र रामपुर ।

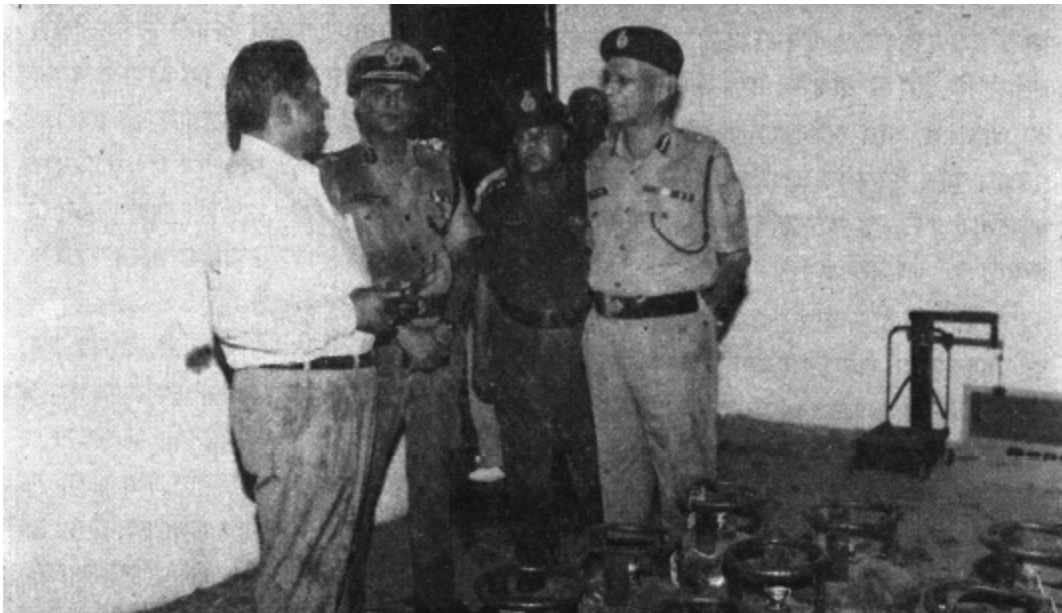


रामपुर में नवनिर्मित गोल्फ कोर्स में महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी



नवनिर्मित टाइप-3 आवासों का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक

इसी दिन एक दूसरे भव्य समारोह में केन्द्रीय कल्याण बोर्ड, के.रि.पु.बल की अध्यक्ष श्रीमति इंदु त्रिपाठी ने लगभग 600 परिवारों की सुविधा के लिए एक एल.पी.गैस एजेंसी का उद्घाटन किया। गैस एजेंसी की सुविधाएं सार्वजनिक व्यक्तियों को भी दी गई हैं।



गैस एजेंसी में महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी एवं महानिरीक्षक श्री एस.सी. चौबे श्री एस.सी.चौबे, पु.म.नि., मध्य क्षेत्र लखनऊ, श्री जे.एस.नेगी, पु.उ.म.नि., के.रि.पु.बल, रामपुर तथा ओ.पी.एस.मलिक, पु.उ.म.नि.के.रि.पु.बल, इलाहाबाद भी

इस अवसर पर उपास्थित थे ।

रेपिड एक्शन फोर्स

विशिष्ट परिस्थितियों के लिए एक विशिष्ट बल



पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

केन्द्रीय रिजर्व बल की रेपिड एक्शन फोर्स को मानवाधिकार के उल्लंघन से बचने के लिए पूरा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रेपिड एक्शन फोर्स का गठन खासकर साम्प्रदायिक दंगों से निपटने के लिए किया गया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री विलास मणि त्रिपाठी ने 1 अगस्त, 94 को आर. ए.एफ. मुख्यालय में संवादाताओं को बताया कि कि रेपिड एक्शन फोर्स के लोगों को जेनेवा सम्मेलन और मानवाधिकार से जुड़े विभिन्न पहलुओं से अवगत कराने के लिए बुनियादी स्तर पर प्रशिक्षण के विशेष प्रबन्ध किये गये हैं। उन्होंने बताया कि देश के विभिन्न भागों में साम्प्रदायिकता की दृष्टि से अति संवेदनशील स्थानों पर रेपिड एक्शन फोर्स की आठ बटालियनों की तैनाती का काम पूरा हो गया है जबकि दो बटालियनों की तैनाती की जा रही है।

श्री त्रिपाठी ने बताया कि रेपिड एक्शन फोर्स को प्रशिक्षण देते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा जा रहा है कि आवश्यकता पड़ने पर यह बल न केवल सुरक्षा प्रबन्ध में मददगार हो बल्कि राहत कार्यों में भी उनकी भूमिका सराहनीय साबित हो। उन्होंने बताया कि रेपिड एक्शन फोर्स की एक-एक बटालियन साम्प्रदायिक दृष्टि से अति

संवेदनशील हैदराबाद, अहमदाबाद, इलाहाबाद, दिल्ली, अलोगढ़, जमशेदपुर, भोपाल और मेरठ में स्थायी रूप से तैनात हैं। जबकि दो बटालियनों की बेलगाम और तिरुवनंतपुरम में स्थाई रूप से तैनाती का काम प्रगति पर है।

मानवाधिकार से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में श्री त्रिपाठी ने बताया कि सी.आर.पी.एफ. में जवानों को प्रशिक्षण देते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि वे कश्मीर अथवा मिजोरम सहित अन्य संवेदनशील क्षेत्रों में अपना आचरण कैसा रखें। इसके लिए उन्हें इन क्षेत्रों की विशेष परिस्थितियों से उनकी तैनाती से पहले पूरी तरह अवगत कराया जाता है। श्री त्रिपाठी ने कहा कि जहां तक देश में मानवाधिकारों की रक्षा का प्रश्न है उसके लिए हमारे संविधान में पूरी व्यवस्था है। कानूनों की भी कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि सी.आर.पी.एफ. इनका कड़ाई से पालन करने के लिए पूरे प्रयास कर रही है।

अपने गठन के बाद से आर.ए.एफ. को विभिन्न परिस्थितियों में सीतामढ़ी, बिहार, बम्बई, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र तथा अहमदाबाद में तैनात किया गया है। इन सभी स्थानों पर आर.ए.एफ. के कार्यों की व्यापक स्तर पर सराहना की गई।

के.रि.पु. बल ने 228 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह जुलाई, 1994 में देशभर में 228 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई नौ मुठभेड़ों में पाँच आतंकवादी मारे गए।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 32 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में गोली बारूद बरामद किया। बरामद हथियारों में दो ए.के.47 राइफल, एक ए.के.56 राइफल, एक दो इंच मोर्टार, सात पिस्तौल, एक 38 रिवाल्वर तथा पांच एस.बी.बी.एल गन शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के दो जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 12 गंभीर रूप से घायल हुए।

माह जुलाई, 94 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जुलाई, 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक के. प्रभाती लाल (121 बटा.), कां. शिववचन राम (ग्रु.के. हैदराबाद), कां. आर.सोमेन नायर (5 बटा.), कां. सिकंदर सिंह (18 बटा.), हैड कां. एच.आर. घेराले (22 बटा.), वाशर मैन मुनीस्वामी (आर.टी.सी.2), ला. नायक नया दत्त सिंह (119 बटा.), कां. एस.एन.जेना (128 बटा.), उ.नि. गोविंद सिंह (26 बटा.), सफाई कर्मचारी

यादेइया (ग्रु.के. बंगलौर), कां.तारा सिंह (63 बटा.), कां. कुदो राम (83 बटा.), कां. शानमुगप्पा (119 बटा.), नि.एस.मोहन दास (120 बटा.), कां. बशीर अहमद (76 बटा.) तथा कां./आर्मरर डी.रवि (57 बटा.)

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह जुलाई, 94 में मृत्यु के कुल 20 मामलों में कुल 7,25,500 रूपए देने स्वीकृत किए गए। इन में प्रति मामला केन्द्रीय कल्याण निधि की 10,000 रूपए की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार जोखिम निधि “बी” (स्पेशल कल्याण निधि) से भी इस के छः सदस्यों की मृत्यु के मामलों में कुल 1,80,000 रूपए देने स्वीकृत किए गए।



आसूचना ब्यूरो के निदेशक श्री वैद्य की सेवा निवृत्ति के अवसर पर उन्हें स्मृति चिह्न भेंट करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

नागपुर ग्रुप केन्द्र में बाल उद्यान

उप महानिरीक्षक श्री टी.एस.बाहद ने 18 जून, 94 को ग्रुप केन्द्र नागपुर में एक बाल उद्यान का उद्घाटन किया। इस अवसर पर ग्रुप केन्द्र के अपर उप महानिरीक्षक श्री ए.गुहाराय भी उपस्थित थे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में मौजूद बल के अधिकारियों, जवानों तथा उनके परिवारजनों को बाल उद्यान के निर्माण तथा उसके रखरखाव के विषय में विस्तार से बताया गया। इस अवसर पर बच्चों के लिए कुछ प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

के.रि.पु.बल इंटर सेक्टर बालीबाल आर.ए.एफ. ने खिताब जीता

रेपिड एक्शन फोर्स ने महाबीर नगर स्थित के.रि.पु. बल की 89 बटा. स्थल पर खेली जा रही चौथी इंटर सेक्टर बालीबाल प्रतियोगिता जीत ली। 14 जुलाई, 94 को

खेले गए एक संघर्ष पूर्ण मुकाबले में रोपेड एक्शन फोर्स ने उत्तर पूर्वी सेक्टर को 15-17, 15-12, 15-0 तथा 15-6 से पराजित किया। इस मौके पर बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी.लिडल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

इस मौके पर बोलते हुए श्री लिडल ने प्रतियोगिता में शामिल टीमों को पूरी प्रतियोगिता के दौरान भाई चारे की भावना को बनाए रखने के लिए बधाई दी। उन्होंने फाइनल में पहुँची आर.ए.एफ. तथा उत्तर पूर्वी सेक्टर की टीमों को उनके प्रदर्शन के लिए विशेष रूप से बधाई दी। ज्ञातव्य है कि, इस प्रतियोगिता का उद्घाटन मैच भी इन्हीं दोनों टीमों के बीच खेला गया था, मगर वह मैच उत्तर पूर्वी सेक्टर ने जीत लिया था। श्री लिडल ने मौसम साफ रहने पर हर्ष व्यक्त किया, क्योंकि खराब मौसम की वजह से पूरी प्रतियोगिता के दौरान कई मैच स्थगित कर आगे बढ़ाने पड़े थे।

100 बटालियन को 25,000 रुपये का अनुदान

हाल ही में गुजरात के मुख्य मंत्री ने रेपिड एक्शन फोर्स की 100 बटालियन के जवानों के कल्याण के लिए 25,000 रुपये का अनुदान प्रदान किया है। मुख्य मंत्री ने यह अनुदान अहमदाबाद में स्वतंत्रता दिवस परेड में भाग लेने वाली आर.ए.एफ. की 100 बटालियन की टुकड़ी के आकर्षक टर्न आउट, ड्रिल तथा प्रदर्शन से प्रभावित हो कर दिया है।



रामपुर में एल.पी. गैस एजेंसी का उद्घाटन करती हुयी के.रि.पु. बल केंद्रीय परिवार कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमति इंदु त्रिपाठी

मुख्य सम्पादक: भूदेव चक्रवर्ती। सम्पादक: सतीश खन्ना तथा अनिल गुप्ता। वरिष्ठ छायाकार: सतीश खन्ना।
मुद्रक तथा प्रकाशक: महानिदेशक के० रि० पु० बल, ब्लॉक-1 सी० जी० ओ० काम्पलेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली-110003 की ओर से भूदेव चक्रवर्ती।

महक : सी०, असा० सी०, प्रेम सहयोग कक्षा नई दिल्ली-110003।

राजभाषा अंक

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-7

अंक-6

30 सितंबर, 1994

8 आश्विन, शक 1916



विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता महानिदेशक श्री एस.बी.एम. त्रिपाठी के साथ

छाया-डी.एन. तिवारी

सम्पादकीय

सी.आर.पी.एफ. समाचार का यह अंक राजभाषा अंक के रूप में आपके सम्मुख है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसका जितना उत्थान विकास हो राष्ट्र उतना ही गौरवान्वित होगा। सितम्बर के महीना आते ही सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों में तेजी लाई जाती है। इसी महीने हम हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह भी मनाते हैं। इस दौरान बार-बार इस बात पर जोर दिया जाता है कि हिन्दी को प्रोत्साहन देने की जरूरत है। यह बात करते समय हम यह भूल जाते हैं कि हिन्दी विश्व की सशक्ततम भाषाओं में से एक है। उसे अपने विकास के लिए किसी प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं है। दरअसल हिन्दी हमारी प्राथमिकताओं में ही नहीं है। यदि हम हिन्दी को प्रोत्साहन देने की अपेक्षा उसे प्राथमिकता देने पर जोर दें, तो संभवतः हमारा यह हिन्दी पर बड़ा भारी उपकार होगा।

हिन्दी को प्राथमिकता देने के सवाल पर अकसर तर्क दिया जाता है कि हिन्दी के माध्यम से तकनीकी अभिव्यक्ति कठिन है। यह तर्क अपने आप में जितना लचर है उतना ही खोखला भी। हिन्दी की ग्राह्यता बेमिसाल है। इसमें अंग्रेजी या अन्य किसी भी भाषा की तकनीकी शब्दावली को हूबहू अपने सांचे में ढालने की अदुभत शक्ति है। विश्व की किसी अन्य भाषा में यह गुण नहीं मिलता। हर चार कोस के बाद इसका स्वरूप बदल जाता है। मेरठ की हिन्दी और लखनऊ की हिन्दी, हैदराबाद की हिन्दी और पटना की हिन्दी। कहीं भी देखिये, हिन्दी स्थानीय रूप में ढली लिपटी मिलेगी। न यह हैदराबाद में अपरिचित बनकर पहुँचती है न बम्बई और लखनऊ में। हर जगह यह अपने लिए स्थान बनाती आई है।

हिन्दी आज भी जन-जन की भाषा है, किन्तु अंग्रेजी हमारे यहां फैशन एवं आधुनिकता का प्रतीक बन बुरी तरह से हमारे मानस से चिपट कर रह गई है। हम अंग्रेजी के विरोधी नहीं हैं, अंग्रेजी विश्व भाषा के रूप में तेजी से उभरी है, हम इसकी भाव क्षमता एवं वैज्ञानिक स्वरूप की प्रशंसा करते हैं। हम यह भी मानते हैं कि वर्तमान स्थिति में उच्च शिक्षा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के लिए उसका ज्ञान अति आवश्यक है। हम अंग्रेजी को उसके स्थान से हटाना नहीं चाहते, किन्तु यह अवश्य चाहते हैं कि अंग्रेजी को यह सम्मान अपनी मातृभाषा की कीमत पर न दिया जाये। हिन्दी अपने विकास, सार्वजनिक स्वरूप एवं जनहृदय साम्राज्ञी के पद से संतुष्ट है। मगर उसे अपमानित तभी होना पड़ता है जब वह हमारे घरों, खेतों खलिहानों, बसों और रेल के डिब्बों से निकलकर शहरों की विशालकाय इमारतों में स्थित भव्य दफ्तरों में पहुँचती है। हिन्दी अगर अपमानित होती है, तो इन्हीं दफ्तरों में और अगर उसे प्रोत्साहन देने की फैशननुमा कोशिश की जाती है, तो वह भी इन्हीं दफ्तरों में, जबकि इन दफ्तरों में काम करने वाले अधिकांश लोग प्राथमिकता के नाम पर अंग्रेजी की सतही जानकारी रखने के बावजूद “नोटशीट” अंग्रेजी में ही तैयार करते

हैं। इसी वगैरे को जो अपने बुजुर्गों से बात तो हिन्दी में करता है, मगर उन्हें सरकारी नोटिस अंग्रेजी में भेजता है, हम याद दिलाना चाहेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि यह फिरंगी भाषा एक दिन हमें हम से ही छीन ले, और भाषीय व सांस्कृतिक रिवालीयपन के कगार पर ला खड़ा करे।

सी.आर.पी.एफ. समाचार के माध्यम से अपने पाठकों के साथ यह मेरा पहला परिचय है। मैं इसी माह आपके इस परिवार में शामिल हुआ हूँ। आशा करता हूँ भविष्य में हमारा यह परिचय और प्रगाढ़ होगा। इन संबंधों में हमारे और आपके बीच का यह सम्पर्क सूत्र “सी.आर.पी.एफ. समाचार” और अधिक सुचारू, सुन्दर, ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी बनेगा, इसका मुझे विश्वास है।

जी.सी. द्विवेदी

अंग्रेजी की हवा

गांधी जी का पत्र गुरुदेव के नाम

“गुरुदेव की तरह मुझे भी खुली हवा पर श्रद्धा है। मैं नहीं चाहता कि मेरा घर सब तरफ खड़ी हुई दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दी जाएँ। मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आसपास देश-विदेश की संस्कृति की हवा बहती रहे, पर मैं यह नहीं चाहता कि उस हवा में जमीन पर से मेरे पैर उखड़ जायें और मैं औधें मुँह गिर पड़ूँ। मैं दूसरे के घर में अतिथि, भिखारी या गुलाम की हैसियत से रहने के लिए तैयार हूँ। झूठे घमंड के वश होकर, या कही जाने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए मैं अपने देश के भाई-बहनों पर अंग्रेजी का नाहक बोझ डालने से इन्कार करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के जवान लड़के-लड़कियों को साहित्य में रस हो तो वे भले ही दुनिया की दूसरी भाषा की तरह अंग्रेजी जीभर कर पढ़ें। लेकिन मैं उनसे आशा रखूँगा कि वे अपने अंग्रेजी पढ़ने के लाभ डा. बोस राय और खुद गुरुदेव की तरह हिन्दुस्तान को और दुनिया को दें। लेकिन मुझसे यह नहीं बर्दाश्त होगा कि हिन्दुस्तान का एक भी आदमी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हंसी उड़ाए या उससे शर्माए या उससे यह भी लगे कि वह अपने अच्छे विचार अपनी भाषा में नहीं रख सकता।

(13-2-1921 को प्रकाशित “हिन्दी नवजीवन” में महात्मा गांधी द्वारा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को लिखे पत्र का अंश)।

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी उतनी

दूसरी चीज से नहीं।

—नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

हिन्दी दिवस

रिपोर्ट—एस.एन. सिंह



हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी के साथ

14 सितम्बर, 1994 को महानिदेशालय सहित बल के अन्य कार्यालयों व यूनिटों द्वारा हिन्दी दिवस मनाया गया तथा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

14 सितम्बर, 94 का दिन देश के इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो चुका है। इसी दिन हिन्दी को राजभाषा का मुकुट पहना कर ताजपोशी की गई थी तथा देश ने खोई हुई अपनी अस्मिता पुनः प्राप्त की थी। संविधान सभा के 324 सदस्यों में से 312 ने राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने व उसके विकास के लिए प्रयत्न करने की कसम लेकर उसे राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने का नागरिकों को आश्वासन दिया था।

14 सितम्बर, 1994 को महानिदेशालय में आयोजित समारोह में महानिदेशक महोदय ने आह्वान किया कि हिन्दी देश की आत्मा है, हम सभी के विचारों के आदान-प्रदान की भाषा है। अपने देश की भाषा का प्रयोग हमें गर्व के साथ करना चाहिए। चाहे हम कितना भी कहें कि अंग्रेजी के बिना हम ज्ञान-विज्ञान व संसार के बारे में अनजान रह जाएंगे, यह सही नहीं है क्योंकि ज्ञान विज्ञान के लिए अंग्रेजी केवल एक

खेड़कों भर का काम दे सकती है, किन्तु दरवाजा कभी नहीं बन सकती। अगर ज्ञान-विज्ञान का दरवाजा बन सकती है तो अपने देश की भाषा ही बन सकती है। आमतौर पर हम अंग्रेजी लिखते समय हमेशा यह महसूस करते हैं कि जो हम अपनी भाषा में अपने दिमाग में सोच रहे हैं उसे अंग्रेजी में अभिव्यक्त करने के नजदीक तो पहुंच रहे हैं, किन्तु मूल को ज्यों का त्यों नहीं उतार पा रहे हैं। इसलिए अपने देश की भाषा में काम करना अंग्रेजी की अपेक्षा अधिक सरल व बोधगम्य है। राजभाषा के विकास व वृद्धि के लिए अनेक नियम बनाए गये हैं, अतः हम सभी ने केवल संगोष्ठियां या सम्मेलन कर के ही राजभाषा की सेवा के नाम पर स्वयं को धन्य नहीं समझ लेना है, बल्कि अपने संपूर्ण कार्य को हिन्दी में करना है। सरकार के अधिनियम व नियमों का अक्षरशः पालन कर के ही हम स्वयं को सरकार के सत्यनिष्ठ कर्मचारी साबित कर सकते हैं।

अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपना सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिन्दी दिवस के अवसर पर विभिन्न आयोजन किए गए। महानिदेशालय के अधिकारियों को राजभाषा अधिनियम, उसके अन्तर्गत बनाए गए नियमों तथा सरकार की राजभाषा नीति से संबंधित अन्य आदेशों/अनुदेशों की जानकारी देने के लिए दिनांक 13 सितम्बर, 94 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में अनुभाग अधिकारियों से लेकर उप-निदेशक अर्थात् पुलिस उप महानिरीक्षक स्तर के 35 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में व्याख्यान रेल मंत्रालय के निदेशक (राजभाषा) डा. महेश चन्द्र गुप्त ने दिया।

हिन्दी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्रभाषा है।

—चक्रवर्ती राजगोपालचारी

बल के सभी अधीनस्थ कार्यालयों के अतिरिक्त महानिदेशालय के कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

इन प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 11 कर्मचारियों को 14 सितम्बर, 94 को महानिदेशालय में आयोजित एक समारोह में बल के महानिदेशक श्री विलासमणि त्रिपाठी ने नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार उप निरीक्षक राम ब्यास राय को, हिन्दी नोटिंग ड्राफ्टिंग का प्रथम पुरस्कार उप निरीक्षक अनुरूप सिंह को तथा हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार सहायक उप निरीक्षक दिनेश सिंह धनिक को दिया गया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष 6 अगस्त से 7 सितम्बर, 94 तक हिन्दी माह का आयोजन भी किया। जिसमें अधिकारियों को हिन्दी डिक्शनरी प्रतियोगिता सहित अन्य कई प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं।

पल्लीपुरम में हिन्दी प्रतियोगिताएं



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तिरुवनंतपुरम के अध्यक्ष से हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता का पुरस्कार ग्रहण करते हुए सुरेंद्र कुमार मलिक

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-3, के.रि.पु.बल पल्लीपुरम के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिन्दी दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम द्वारा आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनन्तपुरम के तत्वाधान में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। प्रशिक्षण केन्द्र के श्री सुरेन्द्र सिंह मलिक, उप कमान्डेन्ट ने हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता में प्रथम तथा स.उ.नि.(मं.) रीना पीडी ने हिन्दी टंकण प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर बल का गौरव बढ़ाया। स.उ.नि.(मं.) रीना पीडी ने “केरल हिन्दी प्रचार सभा” द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय हिन्दी टंकण प्रतियोगिता में भी तृतीय स्थान पाया। ग्रुप केन्द्र स्तर पर आयोजित हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में हवलदार मुंशी सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषा रूपी फलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा।

—डॉ. जाकिर हुसैन

स्पेशल सेक्टर में हिन्दी पखवाड़ा



कमांडेंट एस.एन. यादव को हिंदी शील्ड प्रदान करते हुए श्री आई.जे. सिंह

बल के स्पेशल सेक्टर के दिल्ली स्थित मुख्यालय में 14 सितम्बर, 94 से 28 सितम्बर, 94 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन स्पेशल सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री जी.झा ने किया। जबकि पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री आई.जे.सिंह ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये।

इस पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में इस सेक्टर की दिल्ली स्थित बटालियनों के 107 कार्मिकों ने भाग लिया। उनमें से 23 कार्मिकों को 6,700 रुपये की नकद पुरस्कार राशि प्रदान की गई। इसी पखवाड़े के दौरान 6,000 से अधिक शब्दों की हिन्दी में डिक्टेशन देने पर सेक्टर के 5 अधिकारियों को प्रोत्साहन स्वरूप मानदेय राशि प्रदान की गई।

हिन्दी में कार्य के लिए अधिकारी सम्मानित

01 अप्रैल, 93 से 31 मार्च, 94 तक बल में अधिकारियों के लिए चलाई गई हिन्दी डिक्टेशन प्रतियोगिता के तहत “ख” क्षेत्र के बल की 23 बटालियन के द्वितीय

कमान आधिकारी चरणजीत सिंह होरा तथा 84 बटालियन के उप कमान्डेन्ट एम.करूणाकरण को प्रथम पुरस्कार प्रदान किये गए हैं। इनके अतिरिक्त कमान्डेन्ट गुरचरण सिंह (128 बटा.) कमान्डेन्ट धूम सिंह पुंडीर (78 बटा.), कमान्डेन्ट एस.आर.साहनी (24 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी अमर सिंह (84 बटा.) द्वितीय कमान अधिकारी आर.के. सिंह (121 बटा.) तथा उप कमान्डेन्ट आर.सी.बहुगुणा (126 बटा.) को भी इस प्रतियोगिता के अर्न्तगत पुरस्कार प्रदान किये गये। इनके अतिरिक्त 23 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी चरणजीत सिंह को 10 अगस्त, 93 से 09 सितम्बर 1993 तक हुई इसी प्रतियोगिता के लिए दुबारा पुरस्कृत किया गया।



द्वितीय कमान अधिकारी चरणजीत सिंह होरा

सरलता और शीघ्र सीखी जाने योग्य भाषाओं में हिन्दी सर्वोपरि है।

—लोकमान्य तिलक

संघ की सरकारी भाषा नीति

हंसराज गुगनानी

1. राजभाषा से संबंधित संवैधानिक व्यवस्था

भारत के संविधान में निम्नलिखित विषयों के संबंध में अलग-अलग व्यवस्था है :
(क) संघ की सरकारी भाषा, (ख) संसद में कार्य-संचालन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा, और (ग) कानून बनाने के लिए और उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा।

राजभाषा आयोग एवं संसदीय समिति

राजभाषा आयोग की स्थापना 1955 में हुई। आयोग ने अपनी रिपोर्ट 1956 में दी।

आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए 1957 में संसदीय समिति बनाई गई। आयोग और संसदीय समिति, दोनों का विचार था कि 1965 के बाद भी “सह-राजभाषा” के रूप में अंग्रेजी का प्रयोग चलता रहे।

2. राजभाषा से संबंधी कानूनी व्यवस्था

अंग्रेजी के प्रयोग को चालू रखने के बारे में राजभाषा आयोग और संसदीय समिति की सिफारिशों पर अमल करने की दृष्टि से 1963 में राजभाषा अधिनियम पास किया गया, जिसका 1967 में संशोधन हुआ। संशोधित राजभाषा अधिनियम के कुछ मुख्य उपबन्ध इस प्रकार हैं—

(1) अधिनियम की धारा 3 के अनुसार

(क) संघ के उन सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए, जिनके लिए 26 जनवरी, 1965 से तत्काल पूर्व अंग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा था और

(ख) और संसद में कार्य निष्पादन के लिए 26 जनवरी, 1965 के बाद भी हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखा जाए।

(2) केन्द्रीय सरकार और हिन्दी को राजभाषा के रूप में न अपनाने वाले किसी राज्य के साथ पत्राचार अंग्रेजी में होगा, बशर्ते कि उस राज्य ने इसके लिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी के प्रयोग को स्वीकार न किया हो।

(3) केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों आदि के बीच पत्र-व्यवहार के प्रयोजन के लिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन जब तक कि संबंधित कार्यालयों आदि के कर्मचारी हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर न लें, तब तक पत्र का दूसरी भाषा में अनुवाद उपलब्ध कराया जाता रहेगा।

(4) अधिनियम की धारा 3 (3) के अनुसार निम्नलिखित कागज-पत्रों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों का ही प्रयोग अनिवार्य है:—

(क) संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक या अन्य रिपोर्टें तथा प्रेस विज्ञप्तियां।

(ख) संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट और सरकारी कागज-पत्र।

(5) समिति में 20 सदस्य लोकसभा के और 10 सदस्य राज्य सभा के हैं। यह समिति संघ के प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की जांच करती है। संसदीय राजभाषा समिति अपने प्रतिवेदन के 5 खंड राष्ट्रपति को प्रस्तुत कर चुकी है।

वर्तमान द्विभाषिक दौर और राजभाषा नीति का कार्यान्वयन

सरकार को राजभाषा नीति के पारेणामस्वरूप एक लम्बी द्विभाषिक नीति शुरू हुई है। इस द्विभाषिक नीति की सफलता के लिए यह बहुत जरूरी है कि हिन्दी नहीं जानने वाले केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को हिन्दी सिखाई जाए, ताकि वे हिन्दी में लिखे गए नोटों और मसौदों को पढ़ सकें। इसके लिए समुचित व्यवस्था भी की गई है। वार्षिक कार्यक्रम इन मुद्दों को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं।

राजभाषा अधिनियम की धारा 8 (2) के अधीन बनाए गए नियम—

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग की दिशा में राजभाषा अधिनियम की धारा 8 (2) के अधीन, नियमों का जारी किया जाना एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। राजभाषा नियम की कुछ महत्वपूर्ण व्यवस्थाएं इस प्रकार हैं—

- (क) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से पत्र आदि हिन्दी भाषी राज्यों को (जिन्हें “क” क्षेत्र के राज्य कहा गया है) या ऐसे राज्यों में किसी अन्य कार्यालय या व्यक्ति को हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि किसी खास मामले में कोई पत्र इन्हें अंग्रेजी में भेजा जाता है, तो उसका हिन्दी में अनुवाद भी साथ में भेजा जाएगा।
- (ख) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से पत्रादि पंजाब, गुजरात और महाराष्ट्र के राज्यों तथा चण्डीगढ़ संघ शासित क्षेत्र के प्रशासनों को (जिन्हें “ख” क्षेत्र में शामिल किया गया है) सामान्यतः हिन्दी में भेजे जाएंगे। यदि उन्हें कोई पत्र अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसका हिन्दी अनुवाद भी साथ में भेजा जाएगा। लेकिन इन राज्यों किसी व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्रादि हिन्दी या राज्यों में किसी व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी, दोनों में से किसी भाषा में भेजे जा सकते हैं।

यदि हम भारत को राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा हो सकती है।

—महात्मा गांधी



राजभाषा संसदीय समिति के सदस्यों का ग्रुप केन्द्र पल्लिपुरम में स्वागत करते बच्चे

- (ग) अन्य अहिन्दी भाषी राज्यों (जिन्हें “ग” क्षेत्र कहा गया है) के किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में भेजा जाएगा। इन राज्यों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से “क” अथवा “ख” क्षेत्र की सरकारों, उनके कार्यालयों आदि को पत्रादि हिन्दी अथवा अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।
- (घ) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्र-व्यवहार हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकता है। केन्द्रीय सरकार के मंत्रालय/विभाग और “क” क्षेत्र में स्थित सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्र-व्यवहार हिन्दी में ऐसे अनुपात में होगा, जिसे सरकार निर्धारित करेगी। वर्ष 1994-95 के लिए यह अनुपात 100 प्रतिशत निर्धारित किया गया है। “क” क्षेत्र में स्थित अन्य केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्र-व्यवहार हिन्दी में होगा।
- (ङ) हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर हिन्दी में दिए जाएंगे।
- (च) राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाएं प्रयोग में लाई जाएंगी।
- (छ) केन्द्रीय सरकार का कोई कर्मचारी फाइलों में हिन्दी या अंग्रेजी में टिप्पणी या प्रारूप लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।
- (ज) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और अन्य प्रक्रिया संबंधी साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी, दोनों में (द्विभाषिक रूप में) तैयार

किए जाएंगे। सभी फार्मों और रजिस्ट्रों के शोष, नामपट्ट, सूचना-पट्ट तथा स्टेशनरी आदि की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में होंगी।

(झ) जिन कार्यालयों में 80 प्रतिशत या उससे अधिक लोगों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है, उन्हें भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया जाएगा और इन कार्यालयों में से कुछ को विनिर्दिष्ट (स्पेसीफाई) किया जा सकता है, ताकि उनमें काम करने वाले हिन्दी में प्रवीण कर्मचारियों को नोटिंग, ड्रफ्टिंग आदि में केवल हिन्दी का इस्तेमाल करने के लिए कहा जा सके।

(ट) प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और इन नियमों का समुचित रूप से अनुपालन किया जाता है।

इन नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए कोशिश की जा रही है और इसके लिए आवश्यक प्रशासनिक प्रबन्ध करने के लिए और अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी ट्रेनिंग देने के लिए कार्रवाई की जा रही है।

देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है।

—सुभाष चंद्र बोस

कार्मिक अपनी क्षमताओं को बढ़ाएं

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने बल के अधिकारियों और जवानों में शारीरिक क्षमता का उच्च स्तर बनाये रखने का आहवान किया है। उन्होंने कहा कि इसे सबसे अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए।

श्री त्रिपाठी 28 सितम्बर, 94 को नई दिल्ली में हुई कमान अधिकारियों की तिमाही बैठक में अधिकारियों को सम्बोधित कर रहे थे।

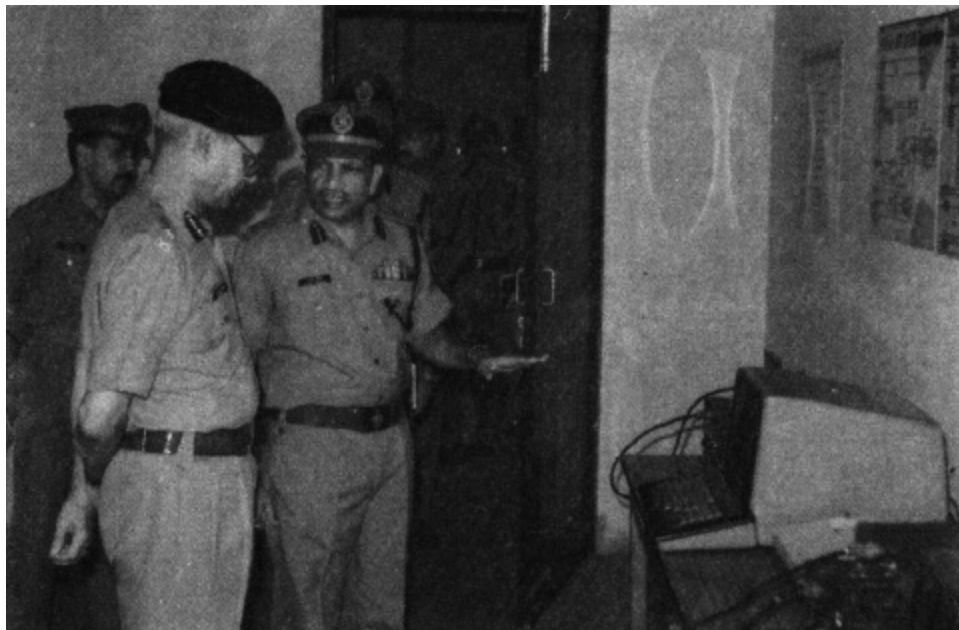
श्री त्रिपाठी ने कहा है कि शारीरिक क्षमताओं में सुधार करने की लगातार जरूरत है क्योंकि हमारा कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा है। यदि हमारी शारीरिक क्षमताओं में कमी रही तो हम अपना कर्तव्य पूरी तरह नहीं निभा पाएंगे।

श्री त्रिपाठी ने अधिकारियों को सलाह देते हुए कहा है कि यद्यपि अधीनस्थ कर्मचारियों की सब कठिनाइयों का निराकरण नहीं किया जा सकता लेकिन सामने लाई गई ऐसी सब कठिनाइयों को पूरी तरह देखा जाना चाहिए, उन्हें हल करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए और फिर भी यदि हल न हो सके तो यह जानकारी संबंधित कर्मचारी को दे देनी चाहिए।

श्री त्रिपाठी ने जवानों और अधिकारियों को फायर करने की क्षमता को उच्च स्तर का बनाये रखने को कहा। जिनकी क्षमताएं इस मामले में कम हो उन्हें सुधारने का

हर संभव प्रयास करना चाहिए। इस विषय में निधारेत नियमों का अक्षरशः पालन किया जाना चाहिए।

महानिदेशक द्वारा सिगनल ग्रुप केन्द्र का दौरा



महानिदेशक महोदय को तकनीकी यंत्रों की जानकारी देते हुए उपनिदेशक संचार श्री श्याम प्रसाद बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 2 और 3 सितम्बर, 94 को रांची (बिहार) स्थित बल के सिगनल ग्रुप केन्द्र का दौरा किया। महानिदेशक महोदय ने यहां केन्द्रीय प्रशिक्षण केन्द्र (संचार) तथा संचार ग्रुप केन्द्र में बल के तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के जवानों को दिए जा रहे तकनीकी प्रशिक्षण में विशेष रुचि ली। उप निदेशक (संचार) ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) श्री श्याम प्रसाद ने महानिदेशक महोदय को यहां चलाए जा रहे विभिन्न तकनीकी कोर्सें तथा अन्य गतिविधियों से अवगत कराया। इस मौके पर महानिदेशक महोदय ने एक सैनिक सम्मेलन को भी संबोधित किया।

माह अगस्त, 94 में मृत बल के कार्मिक

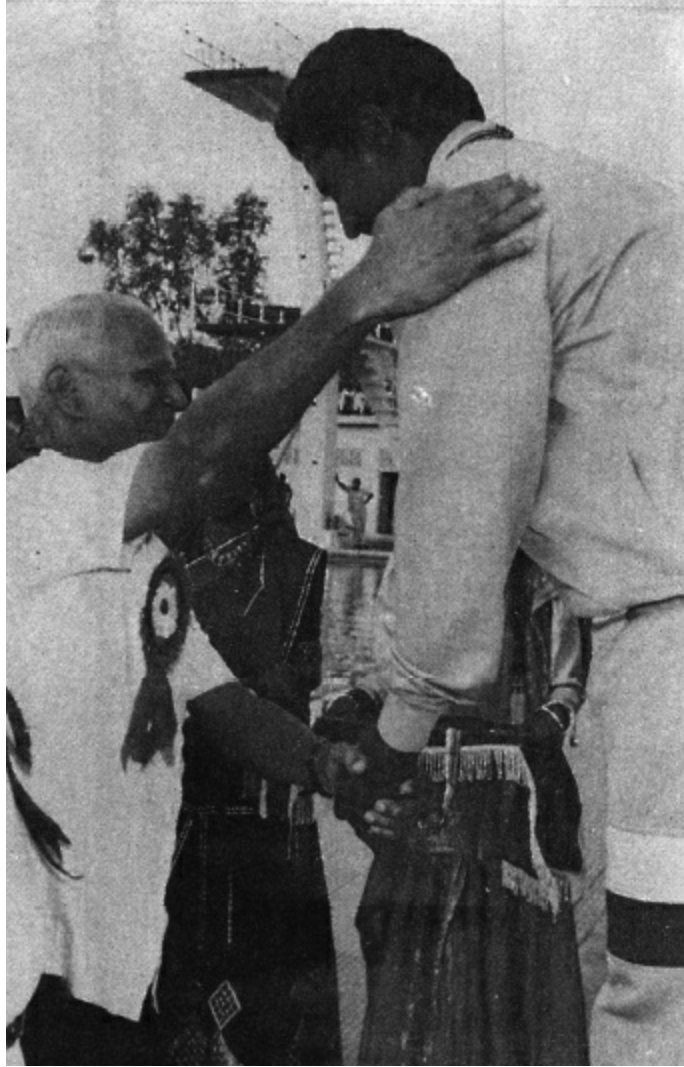
माह अगस्त, 94 में बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हैड कांस्टेबल विनसेंट मिंज (69 बटा.), नायक/डाइवर अब्दुल कैदर (127 बटा.), है.कां. अमीन खान (24 बटा.), लांस नायक जगदीश प्रसाद (112 बटा.), कां./ड्रा. विक्रम सिंह (90 बटा.), इंस्पेक्टर/आर्मरर ब्रिज लाल (ए.डब्ल्यू.एस.6), कां.सुरेंद्र (98 बटा.), कुक राम प्रसाद (50 बटा.), नायक बलदेव सिंह (53 बटा.), कुक जीतन सिंह

(ग्रु. के.रामपुर), कां.पुरुषोत्तम लाल (126 बटा.), कां. राजकुमार राणा (109 बटा.), कां. गोपाल सिंह (37 बटा.), है.कां. कांशीराम (सी.टी.सी.1), इंस्पेक्टर (एम) एम.एल.सौदानी (ग्रु.के.नई दिल्ली), है. कां.परमजीत सिंह (62 बटा.), कां.डी. अश्वनी कुमार (42 बटा.), कां. सिराजूल इस्लाम (6 बटा.), कां.वाई.एस.नारायण (68 बटा.), सब इंस्पेक्टर (एम) मंगल सिंह (ग्रु. के. गुवाहाटी) तथा नायक/रेडियो आपरेटर रफीकुल बिश्वास (4 सिग बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह जुलाई, 94 में 83 बटा. के कां. जी.सी.बरिक तथा 2 बटा. के बारबर रविंद्र कुमार भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताएं के.रि.पु.बल ने खिताब जीता



200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक का स्वर्ण पदक हासिल करते हुए राधाकृष्णन

19 से 23 सितम्बर, 94 तक जयपुर में हुई अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता की चैंपियनशिप केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने जीत ली। इसी प्रतियोगिता की क्रॉस कंट्री दौड़ में भी के.रि.पु. बल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता में शामिल बल के तैराकों की विभिन्न मुकाबलों में स्थिति इस प्रकार रही—

सहायक कमान्डेन्ट प्रेमजीत सिंह

100 मीटर फ्री स्टाइल

— कांस्य

400 मीटर व्यक्तिगत मेडले

— कांस्य

4X200 मीटर फ्री स्टाइल रिले

– स्वर्ण

200 मीटर फ्री स्टाइल

– रजत

400 मीटर फ्री स्टाइल

– रजत

4X100 मीटर फ्री स्टाइल रिले

– रजत

4X100 मीटर मेडले रिले

– स्वर्ण

सहायक कमान्डेन्ट एस.राधाकृष्णन

200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक

– स्वर्ण

100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक

– स्वर्ण

4X100 मीटर मेडले रिले

– स्वर्ण

सहायक कमान्डेन्ट खजान सिंह

50 मीटर फ्री स्टाइल

– स्वर्ण

4X100 मीटर फ्री स्टाइल

– रजत

4X100 मीटर मेडले रिले

– स्वर्ण

इंस्पेक्टर एच.रंजीत सिंह

4X200 मीटर फ्री स्टाइल

– स्वर्ण

1500 मीटर फ्री स्टाइल

– कांस्य

400 मीटर फ्री स्टाइल

– कांस्य

4X100 मीटर फ्री स्टाइल रिले

– रजत



तैराकों द्वारा प्रस्तुत मार्चपास्ट का अवलोकन करते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

इंस्पेक्टर राजा राम

100 मीटर बैक स्ट्रोक

– स्वर्ण

400 मीटर व्यक्तिगत मेडले

– रजत

200 मीटर बैक स्ट्रोक

– रजत

4X200 मीटर फ्री स्टाइल

– स्वर्ण

1500 मीटर फ्री स्टाइल

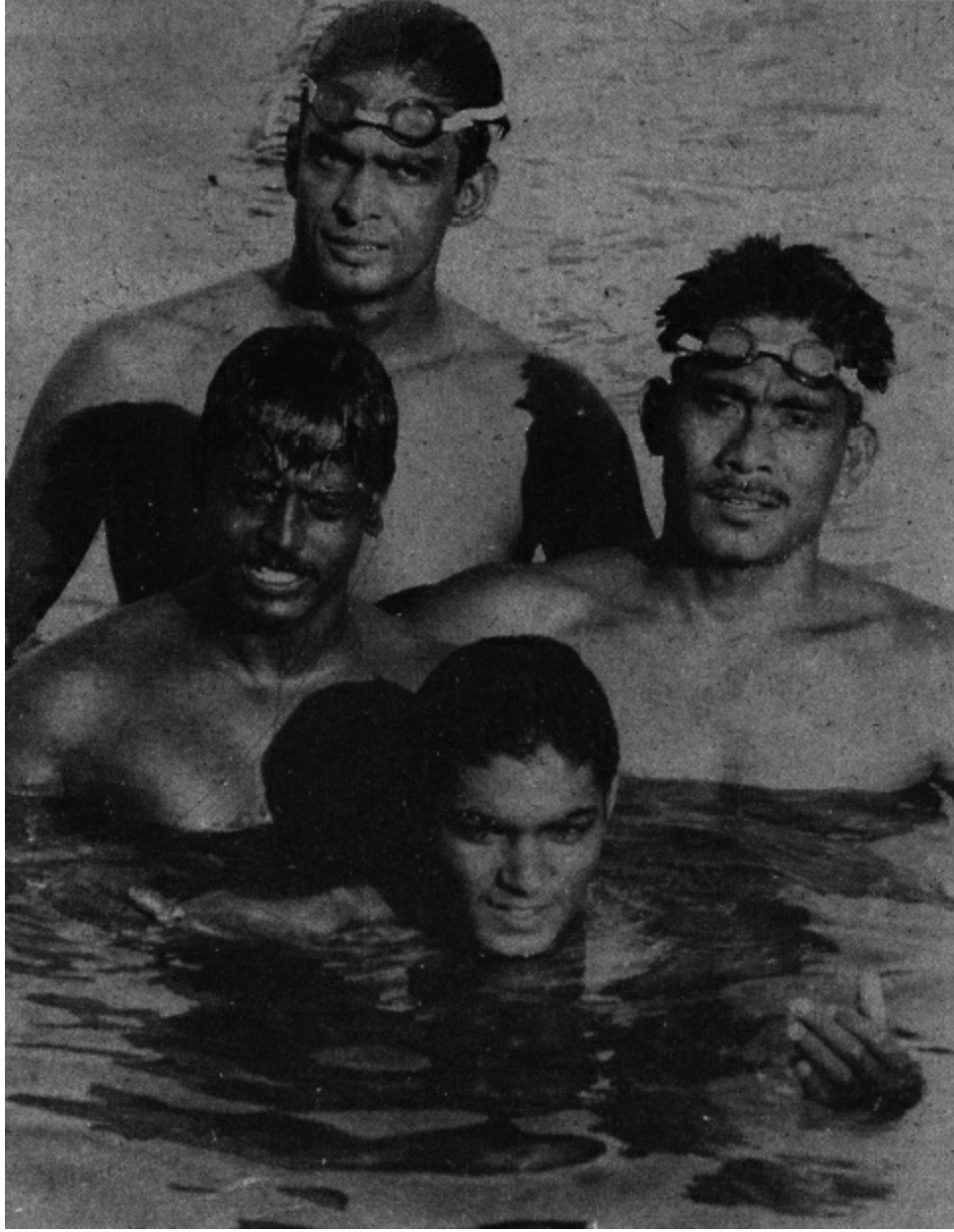
– रजत

200 मीटर बटरफ्लाय

- रजत
- 200 मीटर व्यक्तिगत मेडले
- स्वर्ण
- 100 मीटर बटरफ्लाय स्ट्रोक
- स्वर्ण
- 4X100 मीटर मेडले रिले
- स्वर्ण

सब इंस्पेक्टर प्रदीप राणा

- 4X200 मीटर फ्री स्टाइल रिले
- स्वर्ण
- 4X100 मीटर फ्री स्टाइल रिले
- रजत



4X100 मीटर की स्वर्ण पदक विजेता बल की टीम

बल के तैराकों ने पदक जीते

5 से 7 अगस्त, 1994 तक हुई एशिया पैसेफिक ऐज ग्रुप तैराकी प्रतियोगिताओं में बल के तैराक भी शामिल थे। इस प्रतियोगिता में बल के इंस्पेक्टर राजाराम ने तीन स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक जीता।

बल के तैराकों ने पणजी गोवा में हुई 39वीं राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं में भारतीय पुलिस टीम के सदस्यों के रूप में भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं में इंस्पेक्टर राजाराम ने तीन रजत तथा तीन कांस्य पदक, सहायक कमान्डेन्ट प्रेमजीत सिंह ने

एक रजत तथा एक कांस्य पदक तथा सब इंस्पेक्टर कैलाशनाथ ने एक रजत पदक जीता।



प्रतियोगिता की विजेता बल की टीम महानिदेशक महोदय के साथ

बहनों ने सी.आर.पी.एफ. जवानों को राखी बांधी



विधायक लक्ष्मी कांता चावला से राखी बंधवाते हुए 40 बटालियन के कमांडेंट श्री डी.आर. पाठक

23 अगस्त, 1994 को रक्षा बंधन के अवसर पर अमृतसर की शक्ति महिला संगठन से संबद्ध महिलाओं व बालिकाओं ने विधायक प्रोफेसर लक्ष्मी कान्ता चावला के नेतृत्व में 40 बटालियन के मुख्यालय में जवानों तथा अधिकारियों को राखी बांधी। इस अवसर पर पंजाब सरकार के सलाहकार लैफ्टनेण्ट जनरल बी.के. एन. छिब्बर ने भी सी.आर.पी.एफ. के जवानों की देश के प्रति समर्पित सेवाओं के लिए प्रशंसा की। बटालियन के कमान्डेन्ट श्री डी.आर.पाठक ने बहनों को बल के जवानों के प्रति विश्वास व्यक्त करने के लिए धन्यवाद दिया तथा उनके स्नेह व प्रेम को अक्षुण्ण रखने का वचन देते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर को राजभाषा पुरस्कार

भुवनेश्वर स्थिति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ग्रुप केन्द्र को 1992-93 के दौरान पूर्वी क्षेत्र के अधीन आने वाले “ग” क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है। 13 अगस्त, 94 को भुवनेश्वर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में उड़ीसा के राज्यपाल ने बल को यह सम्मान प्रदान किया।

महानिदेशक का प्रशंसा पत्र

महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर के द्वितीय कमान

आधिकारी श्री प्रताप सिंह को महानिदेशक के प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया है। उन्हें यह सम्मान महानिदेशालय में संयुक्त सहायक निदेशक (विधि) के पद पर रहते हुए उनके द्वारा दी गई सेवाओं के बदले दिया गया है। उनके अथक प्रयासों से कई अधर में लटके जटिल मामलों को आगे बढ़ाने में मदद मिली।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नये जन सम्पर्क अधिकारी

श्री गिरीश चन्द्र द्विवेदी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के नए जन सम्पर्क अधिकारी नियुक्त हुए हैं। उन्होंने 16 सितम्बर, 94 को बल के मुख्यालय में अपना कार्यभार ग्रहण किया।

श्री द्विवेदी इससे पहले पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली में सूचना अधिकारी (प्रेस सुविधा) थे। वह उससे पहले प्रे. सू. का., जयपुर में कई वर्ष तक सूचना अधिकारी रह चुके हैं।

श्री द्विवेदी सी.आर.पी.एफ. समाचार पत्रिका के मुख्य संपादक भी होंगे।

के.रि.पु.बल के प्रति आभार

बल के पूर्व महानिदेशक श्री इमदाद अली के निधन पर के.रि.पु.बल द्वारा व्यक्त किए गए शोक तथा भारत में उनके अंतिम संस्कार में दिए गए सहयोग के लिए स्व. इमदाद अली के पुत्र इफजाल अली ने बल के प्रति आभार व्यक्त किया है।

मनीला, फिलीपीन्स से बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी के नाम लिखे एक पत्र में श्री इफजाल अली ने कहा है कि बल द्वारा व्यक्त की गई संवेदना एवं सहानुभूति ने उन्हें दुख की इस घड़ी को सहने की शक्ति प्रदान की है।

श्री इमदाद अली का शव फिलीपीन्स से दिल्ली पहुंचने पर बल के सदस्यों द्वारा उसकी आगवानी तथा आगे उसे गुवाहाटी तक पहुंचाने में दिए गए सहयोग के प्रति भी उन्होंने कृतज्ञता व्यक्त की है।

श्री अली ने अपने पत्र में लिखा है कि के.रि.पु.बल की स्मृतियां उनके पिता के हृदय में हमेशा बनी रहें। उनके कार्यकाल में के.रि.पु.बल द्वारा की गई प्रगति को उन्होंने हमेशा गर्व के साथ याद किया। अंत में श्री इफजाल अली ने आशा व्यक्त की है कि ये बल यों ही प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता हुआ भारत की सेवा करता रहेगा।

के.रि.पु.बल ने 306 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अगस्त, 94 में देश के विभिन्न हिस्सों में आतंकवादियों के साथ हुयी 18 मुठभेड़ों तथा अन्य तलाशी अभियानों में 306 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया।

इस अवधि में बल के जवानों ने 27 घातक हथियार तथा भारी मात्रा में गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में एक ए.के.56 राइफल, तीन ए.के.47

राइफलें, एक सेल्फ लोडिंग राइफल, सात पिस्तौलें/रेवाल्वरें तथा दो 2 इंच मोटार शामिल हैं।

इन मुठभेड़ों में बल के दो जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 18 गंभीर रूप से घायल हुए।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह अगस्त, 94 में मृत्यु के 15 मामलों में कुल 5,55,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

इसी प्रकार जोखिम निधि “बी” स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके छः सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 1,90,000 रुपए देने स्वीकृत किए गए।

मलेरिया पीड़ितों का उपचार

असम के गोलाघाट जिले के हरूपानी क्षेत्र में फैले मलेरिया के गंभीर प्रकोप के कारण कई लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे। आस-पास कोई स्वास्थ्य केन्द्र न होने के कारण स्थानीय लोगों में काफी भय व्याप्त था। इस स्थिति में 63 बटालियन के डाक्टर पी.आर.जयदेवन ने स्थानीय प्रशासन के साथ सम्पर्क स्थापित कर उनके तथा अपने डाक्टरों के सहयोग से मलेरिया प्रभावित क्षेत्रों में तीन दिन का एक चिकित्सा शिविर लगाया तथा सैकड़ों लोगों को इस जानलेवा बीमारी से मुक्ति पाने में मदद दी। डाक्टरों के अथक प्रयासों से इस महामारी पर शीघ्र ही काबू पा लिया गया। डाक्टरों के इस प्रयास की स्थानीय प्रशासन तथा नागरिकों ने भरपूर प्रशंसा की है।

आर.ए.एफ. इंटर बटालियन दौड़कूद प्रतियोगिता

104 बटालियन ने चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती



104 बटालियन को चैंपियनशिप शील्ड प्रदान करती हुयी श्रीमति लिड्ल

नई दिल्ली छत्रसाल स्टेडियम में खेली गई केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के रेपिड एक्शन फोर्स की अंतर बटालियन प्रतियोगिता की चैंपियनशिप 104 बटालियन ने 221 अंक प्राप्त कर जीत ली। 103 बटालियन 203 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही। 9 सितम्बर, 94 को प्रतियोगिता के अंतिम दिन पुरूष वर्ग में सर्वश्रेष्ठ धावक की ट्राफी 103 बटालियन के सब इंस्पेक्टर ए.डी.गणपति को प्रदान की गई, जबकि महिला वर्ग में यह ट्राफी 99 बटालियन की कां. लाईजमा को प्रदान की गई।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी.लिड्ल इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्रीमति लिड्ल ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए तथा खिलाड़ियों को पूरी प्रतियोगिता के दौरान खेल भावना बनाए रखने के लिए बधाई दी।

33 बटालियन ने ट्राफी जीती

झड़ौदा कलां, नई दिल्ली स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ग्रुप केन्द्र स्टेडियम में खेली गई के.रि.पु.बल के उत्तर सेक्टर की दौड़कूद प्रतियोगिताओं की ट्राफी 33 बटालियन ने 159 अंक प्राप्त कर जीत ली। 67 बटालियन 145 अंक प्राप्त कर दूसरे स्थान पर रही। 40 बटालियन के हैड कांस्टेबल एच.एम. महातो को सर्वश्रेष्ठ एथलीट घोषित किया गया। प्रतियोगिता के अंतिम दिन 22 सितम्बर, 94 को के.रि.पु.बल के अपर महानिदेशक श्री ए.वी.लिड्ल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने खिलाड़ियों को पूरी प्रतियोगिता के दौरान खेल भावना बनाए रखने के लिए बधाई दी।

संस्मरण

रंगरूट

—भूदेव चक्रवर्ती

“नीमच नाम का कोई स्थान नहीं है”, कलकत्ता स्थित पर्यटन विभाग के कर्मचारी से सूचना पाकर प्रशिक्षण के लिए पहुंचने की आशा में लगभग छोड़ चुका था, तभी एक अन्य कर्मचारी ने मुझे तसल्ली दी और नई आशा का संचार करते हुए कहा कि मैं पहले दिल्ली पहुंचकर मीटर गेज लाइन की गाड़ी से अजमेर पहुंच जाऊँ। अजमेर से मीटर गेज लाइन की पैसेन्जर गाड़ी खंडवा तक जाती है। इसी लाइन पर नीमच है।

1963 की गरमी का मौसम था। काफी लम्बी रेल यात्रा करने के बाद एक मनोरम सुबह में मैं नीमच पहुंचा। जब मैं पश्चिमी शैली में बनीं एक भव्य इमारत में पहुंचा तो पहले से ही वहाँ आए कुछ और नौजवानों से मेरी मुलाकात हुई। इस विशाल भवन का नाम ऑक्टरलोनी हाउस था जो प्रसिद्ध अंग्रेज जनरल डेविड ऑक्टरलोनी के नाम पर रखा गया था। वहाँ बुश-शर्ट व चौड़ी मोहरी की पैन्ट पहने एक अर्धे उम्र के व्यक्ति ने हमारा स्वागत किया और हम बड़े सहज भाव से उनसे बातें करते रहे। बाद में हमें पता चला कि वह व्यक्ति कोई और नहीं, प्रशिक्षण कालेज के प्रिंसिपल ले. कर्नल सांवल सिंह थे जिनकी देख-रेख में हमें प्रशिक्षण लेना था। उन्होंने हमें बताया कि अगले ही दिन से हमारा प्रशिक्षण शुरू हो जाएगा।

हममें से अधिकांश लोगों को यह नहीं मालूम था कि प्रशिक्षण किस तरह होगा। हालांकि मैंने विद्यालय में डिल की कक्षाओं में भाग जरूर लिया था पर वे प्राथमिक स्तर की थीं। वहाँ हमें यह भी मालूम हुआ कि सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों को पहली बार नीमच में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मुझे नीमच एक उनींदा शहर लगा। अफीम की फैक्ट्रियों के लिए जाना जाने वाला शहर नीमच पहले मालवा में ब्रिटिश प्रशासन का मुख्यालय रह चुका था। अब भी “नीमच कैन्ट” या “नीमच छावनी” कहा जाता है। गर्मी प्रारंभ हो चुकी थी पर मालवा के पठार पर बसा यह शहर बहुत गर्म नहीं था। रात भर चलने वाली मालवा की ठण्डी बयार उसकी मोहकता में चार चाँद लगाती थी।

अगले दिन सुबह केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज में हमारा प्रशिक्षण शुरू हुआ। हम ग्यारह अधिकारी-सुब्बाराव, तिवारी, सचदेवा, बक्शी, सन्तानम, नारायण, कर्ण, धर, रामबाबू और मैं साइकिलों से परेड ग्राउंड पहुंचे।

शारीरिक व्यायाम से दिन को शुरूआत हुई। छोटे कद व गठोले बदन के हवलदार गुरबख्श सिंह एवं लम्बे और पतले हवलदार गुरवचन सिंह हमारे शारीरिक व्यायाम प्रशिक्षक थे। दोनों ही बड़े फुर्तीले, व्यावसायिक और शान्त प्रकृति के इंसान थे। थोड़ा व्यायाम करने के उपरान्त जब रस्सा चढ़ने की बारी आयी तो हमने इसका विरोध किया पर उनकी प्रेरणा से हम सफलता पूर्वक रस्सा चढ़े। दोनों प्रशिक्षकों की लगन ने पी.टी. को हमारे प्रशिक्षण का एक आनंद दायक पहलू बना दिया था।

पी.टी. के बाद हमारी डिल होती थी जिसके लिए हमारी पोशाक होती थी खाकी कमीज, खाकी निकर, बेवबैल्ट, पट्टी, एम्पुनिशन बूट, और बैरेट कैप। फौजियों की तरह कटे हमारे बाल बैरेट कैप से बाहर नहीं झाँकते। हमारे इन्फेन्ट्री ट्रेनिंग के प्रशिक्षक थे हवलदार सोहना सिंह, हवलदार पोखर सिंह और हवलदार प्रताप सिंह। सूबेदार जवाहरलाल मुख्य प्रशिक्षक थे। हमारी डिल लम्बी होती थी तथा ये लाल बजरीवाली सख्त जमीन पर होती थी। मध्यावकाश के समय बबूल के पेड़ों की शीतल छाया में अपनी थकान दूर करना अभी भी स्मृति पटल पर इसी प्रकार ताजा है। डिल का यह सिलसिला दोपहर लंच की छुट्टी के बाद भी जारी रहता था और शाम को हम नौजवान सिपाहियों के साथ कई तरह के खेल खेलते थे।

फुट डिल के बाद आर्म्स डिल होने लगी थी। उसके बाद प्लाटून डिल, कंपनी डिल और लघु शस्त्रों के साथ प्रशिक्षण के नित नए आयाम जुड़ते रहे। भीड़ नियंत्रण, रायट डिल और अश्रु गैस की सिखलाई के साथ ही प्रशिक्षण एक नए मोड़ पर आ गया।

इसी बीच हमारे मुख्य प्रशिक्षक सूबेदार जवाहर लाल की जगह आए डोगरा रेजीमेंट के एक बहुत ही सख्त सूबेदार ब्रिजलाल। अब गरमियों का मौसम विदाई ले रहा था। और आगमन हो चुका था हरियाली बिखेरती बरसात का। हमारी परेड ग्राउंड में भी अब हरी-हरी घास खेल आई थी। अन्ततः बारिशों का मौसम भी विदा हो गया।

अब प्रारम्भ हुआ ट्रेनिंग का एक और महत्वपूर्ण दौर-फायरिंग का। इसकी शुरूआत अजमेर-खंडवा रेलवे लाइन के पास बने मिनिएचर रेंज पर .22 की फायरिंग से हुई। मिनिएचर रेंज से हम दूर-दूर तक फैली उबड़-खाबड़ जमीन का नजारा लेते थे। जल्द ही हमने लौंग रेंज पर .303 रायफल और ब्रेनगन से फायरिंग के रोमांचकारी अभ्यास किये। उसके साथ-साथ बायनट फाइटिंग। समीपी लड़ाई तथा पिस्टल फायरिंग हमारे ट्रेनिंग दिनों को यादगार बनाती है।

नायक चंद्रिका प्रसाद द्वारा संचालित मैप रीडिंग की दिलचस्प कक्षाएं जो प्रकृति की गोद में लगती थी आज भी हमारे मानस पटल पर छाई हुई हैं। हमने सूरज, चाँद और तारों से मार्गदर्शन सीखा। नाविकों की तरह दिशा की खोज के लिए कम्पास का इस्तेमाल, मानचित्र में अपनी स्थिति को तलाशते हुए हम स्वयं को अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के घने बरसाती जंगलों में भ्रमण करने वाले रोमांचक यात्रियों से कम महसूस नहीं करते।

सिगनल प्रणाली की बुनियादी जानकारी और मोर्स कोड से सिगनल भेजे जाने की

विोधे भी हमसे अच्छी नहीं रहें हमने उन्हें भी आत्मसात किया।

के.रि.पु.बल और बल प्रशासन से अनभिज्ञ हम लोगों को एक ओर बी.बी. मिश्र भा.पु. अधिकारी, पुलिस उप महानिरीक्षक, के.रि.पु. बल अजमेर, ने बल के इतिहास और नियमों से अवगत कराया तो दूसरी ओर प्रिंसिपल ले. कर्नल सांवल सिंह ने अधिकारियों के लिए वांछित गुणों का ज्ञान हमें दिया। सहायक प्रिंसिपल श्री एल.ओके ने हमें रेजिमेंटल जीवन का पाठ पढ़ाया। निम्न रैंक से पदोन्नत श्री ओके का सदैव गर्व से कहना कि वे एक क्लास III पाइप वादक रहे थे—हमें पद की गरिमा और जीवन में सफलता की ऊंचाईयों को छूने का पाठ अनायास ही दे जाते थे।

नीमच में प्रथम बटालियन, दूसरी बटालियन और छठी बटालियन, अर्थात् तीन बटालियनों के मुख्यालय स्थित थे। हमें बटालियन और कंपनी प्रशासन का व्यवहारिक प्रशिक्षण इन बटालियनों में दिया गया। श्री जे.एस. वाजपेयी प्रथम बटालियन के और श्री आर.एन. शिवपुरी दूसरी बटालियन के कमांडेंट थे। वे दोनों ही भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी थे। छठी बटालियन की कमान सेना से सेवानिवृत्त ले. कर्नल शिवचरण दास के पास थी।

नीमच में के.रि.पु.बल का एक अस्पताल भी था। यहां के सभी डॉक्टर सिविलियन थे और हमारे साथ उनका काफी दोस्ताना संबंध था। हम प्राथमिक चिकित्सा आरोग्य एवं स्वच्छता के पाठ के लिए वहाँ जाते थे। अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को चिकित्सा अधीक्षक एवं स्टाफ सर्जन कहते थे। एक मिलनसार बंगाली सज्जन डा.टी.पी. मुखर्जी चिकित्सा अधीक्षक एवं स्टाफ सर्जन थे।

सभी बैरकें, कार्यालय, अस्पताल और अन्य संस्थाएं पत्थरों से निर्मित थीं। बैरकों को रानी विकटोरिया के नाम पर विकटोरिया बैरक कहा जाता था। कई इमारतें पाश्चात्य वास्तुकला के खास नमूने थे।

के.रि.पु.बल के आरंभिक कमांडेंटों में से एक श्री एच.ओसबोर्न, एक पक्के अंग्रेज, नीमच में ही बस गए थे तथा अधिकारी मेस में नियमित रूप से आते थे। रेजिमेंटल रात्रिभोजों और वरिष्ठ अधिकारियों के आगमन पर होने वाले रात्रिभोजों में हमारा रस्मी पोशाक में शामिल होना एक अनूठा अहसास दिला जाता था। याद आता है वो दिन जब श्री वी.जी.कनेटकर आई.पी., दौरे पर आए थे। परिवारों का मिलना-जुलना कितना घरेलू वातावरण की छटा बिखेर जाता था। एक बार अधिकारियों की पत्नियों ने हम सभी प्रशिक्षार्थियों को सामूहिक गान के लिए कहा। हमने महिलाओं की ओर देखते हुए एक हिट फिल्मी गीत गाया था।—“तेरी प्यारी-प्यारी सूरत को किसी की नजर न लगे, चश्मे बंदूदर, इस पर सभी खिलखिलाकर हंस पड़े थे।

जब मौसम सुहावना हो गया, शीतल हवाएं बहने लगीं तो हमारा जंगल टेनिंग का समय हो आया। सुआ खेड़ा में जंगल कैप लगा। तम्बुओं में रहना और रोशनी के लिए लालटेन का सहारा लेना सचमुच अनोखा और अनूठा अनुभव था। फील्ड क्राफ्ट और रणनीति पर सूबेदार ब्रिजलाल के लेक्चर तथा के.प्र.का. की प्लाटून के प्रदर्शन अनुकरणीय होते थे। जंगल कैम्प के अंतिम दौर में फील्ड फायरिंग के लिए हम

बावल गए। बावल-सूदूर एक छोटा सा आदेवासी गाँव। जमीनों गड्डों में से हथगोले फेंकना और फेंककर छुपना बड़ा सकून देता था। जंगल कैम्प में हमारे साथ जे.सी.सी. के प्रशिक्षित भी थे जिनसे हमारा सानिध्य और सौहार्द प्रगाढ़ हो गया था।

जंगल कैम्प से वापस नीमच आने पर प्रिंसिपल महोदय ने जब यह सूचना दी कि सभी को गहन प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय पुलिस प्रशिक्षण कालेज माउन्ट आबू जाना है, तो हमारे चेहरे खिल उठे। हम खुश थे कि कठिन इन्फेन्ट्री ट्रेनिंग के बाद थोड़ा आराम मिलेगा।

कुछ महीनों के बाद नीमच आने पर ऐसा लगा मानों अपने घर वापस आ गए हों। इन महीनों में नीमच की बहुत याद आयी। वापस आने पर प्रिंसिपल महोदय ने अपने कमरे में बुलाकर हमें बताया कि हमारा प्रशिक्षण पूरा हो गया है, और हम अपनी अंतिम परीक्षा के लिए तैयार हो जाएं। हमने उतनी मेहनत पहले कभी नहीं की थी जितनी इस अंतिम परीक्षा में तैयारी की। परीक्षा समाप्त हुई। हमारे प्रशिक्षक जिन्होंने अपनी लगन, निष्ठा और परिश्रम से हमें गढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी अनवरत प्रेरणा स्रोत बने रहे और उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए हमें प्रेरित करते रहे। हमारा प्राथमिक चिकित्सा टेस्ट भी बड़ा दिलचस्प रहा। प्राथमिक चिकित्सा परीक्षा के परीक्षक ले. कर्नल शिवचरण दास ने केवल एक ही प्रश्न तैयार किया था कि कीड़े के काटने का इलाज क्या है? सौभाग्य से हमें इसका उत्तर पता था और हम परीक्षा में सफल रहे।

हम आठों के पास-आउट होने के साथ ही बुनियादी प्रशिक्षण समाप्त हुआ। रामबाबू, कर्ण और धर प्रशिक्षण को बीच में ही छोड़ कर चले गए थे। जब हमने फोर्स में कदम रखा तो बहुत सी आशंकाओं और जिज्ञासाओं से भरा था हमारा मन, पर जैसे-जैसे प्रशिक्षण के दिन बीतते गए हमारी आशंकाएं समाप्त होती गईं और जिज्ञासाएं शांत होती चली गईं। प्रशिक्षण ने हमें एक नया आत्मविश्वास, व्यक्तित्व की दृढ़ता और आत्मविश्वास दिया। अब हम कठिन से कठिन बाधाओं का मुकाबला हिम्मत के साथ कर सकते थे। हम अपने प्रिंसिपल महोदय और प्रशिक्षकों के अभारी हैं। जिन्होंने हमें एक सामान्य सिविलियन से एक सधा हुआ पुलिस अधिकारी बनाया। प्रशिक्षण के लिए पहली बार जब नीमच आये थे तब से लगभग एक वर्ष पूरा होने को था। अन्ततः वह दिन भी आ ही पहुँचा। जब हमने अजमेर के लिए पेसेन्जर गाड़ी से प्रस्थान किया। रेलगाड़ी नीमच स्टेशन से रवाना हुई। हमने चलती हुई गाड़ी से विक्टोरिया बैरकों व अपने परेड ग्राउंड को एक फिर नमन किया। गाड़ी गति पकड़ती जा रही थी, बैरक और नीमच के चिर-परिचित दृश्य एक-एक कर क्षितिज में विलीन होते जा रहे थे।



अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं की ट्रॉफी ग्रहण करते हुए उपनिदेशक (प्रशिक्षण) श्री वी.सी. गोयल

मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी । सम्पादक : अनिल गुप्ता । बरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के.रि.पु. बल, ब्लाक-1 सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी ।
मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : पलेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-7

अंक-7

30 नवंबर, 1994

9 अग्रहायण, शक 1916



के. रि. पु. बल अभियान गंगा सागर की नावें इलाहाबाद से गुजरती हुई

सम्पादकीय

21 अक्टूबर पुलिस स्मारक दिवस है, अपने शहीदों की याद में श्रद्धा से शीश नवाने का दिवस। मगर शहीदों पर बात करें उससे पहले एक वाक्या-नई दिल्ली में 7 अक्टूबर, 1994 को रेपिड एक्शन फोर्स की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर एक शानदार परेड की सलामी लेने के बाद केन्द्रीय आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट ने एक वाक्या सुनाया। श्रीनगर कश्मीर में आतंकवादियों ने एक छोटे से दस बारह साल के लड़के को एक बम देकर उसे सामने से आती सुरक्षा कर्मियों की जीप पर फेंकने को कहा। किस्मत का मारा वह अबोध बच्चा न जाने कितने दिनों का भूखा था, या न जाने किस मजबूरी में सौ पचास रुपये के लालच में उस जीप पर वह बम फेंकने को तैयार हो गया। वह नहीं जानता था कि उसके हाथ में जो वस्तु दी गई है वह मिट्टी का डला नहीं, बम का गोला है। बिड़बना देखिए जो बम सुरक्षा कर्मियों की जीप पर फेंका जाना था, वह उस बच्चे के हाथ में फट गया और उस बम के धमाके के साथ-साथ उस अभागे का वह हाथ उड़ गया। उस जीप के सुरक्षाकर्मियों ने उस बच्चे की जान अपना खून देकर बचायी, जिसे एक वक्त की रोटी का लालच दिखा कर बरगला लिया गया था।

एक पल को सोचिए वह बम उस बच्चे के हाथ में न फट कर जीप पर गिर कर भी फट सकता था। फिर क्या होता, न जाने कितने जवान मारे जाते। मगर हम क्यास भी क्यों लगाएं, हम तो इस तरह की नियति के प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। हमारे न जाने कितने जवान इस तरह के, या इससे मिलते-जुलते हादसों में पंजाब और उत्तर पूर्वी राज्यों में मारे जाते रहे हैं।

संयोग से इसी महिने 21 अक्टूबर को पुलिस स्मारक दिवस भी पड़ता है। देश की सेवा करते हुए इस तरह के या अन्य किसी भी तरह के हादसे में अपने प्राण गंवा बैठे हमारे जवानों को हमारा श्रद्धावत् नमन। आज हमारे पास अपने इन बहादुर साथियों की स्मृति के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं है। किन्तु यह स्मृति एक अमूल्य धरोहर है। यह हमें बताती है कि हमारा लहू जो हमारी धमनियों में प्राण बन दौड़ रहा है, इस देश की थाती है। इतिहास गवाह है, जब जब जरूरत पड़ी है, लदाख में हाट सिंगज से लेकर श्री लंका में जाफना तक, कच्छ में सरदार पोस्ट से लेकर, सात बहनों के आंचल पूर्व नेफा तक में हमारे साथियों ने स्वेच्छा से अपनी अंजुरी भर-भर कर रक्त दिया है। ये रक्त चाहे आतंकवाद की तपिश पर सावन के पहले मेघ की फुहार बन कर गिरा हो, या फिर मृत्यु से जूझते किसी मानव के शरीर में प्राण बनकर संचारित हुआ हो, इसका मकसद कभी व्यर्थ नहीं गया। परिणाम सामने है, असम आज शांत है, पंजाब में पहले सी हलचल दिखायी नहीं देती, उत्तर पूर्व में हमारे जवानों के जाबांज कारनामे आज भी विद्रोहियों के दिल में निश्चित दहशत की लहर भर देते होंगे, जम्मू कश्मीर में स्थिति कुछ विकट है, मगर वहाँ भी शांति शीघ्र ही कायम

होगी, हमें ऐसी आशा ही नहीं विश्वास है और इस विश्वास का आधार है हमारी प्रतिबद्धता, हमारी शपथ और हमारी गर्व भरी परंपराएं।

और पुलिस स्मारक दिवस पर अपने साथियों को हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि इसी प्रतिबद्धता, इसी शपथ और इन्हीं परंपराओं का पुनः स्मरण होगा। किंतु हमें एक बात और नहीं भूलनी है, वो जो चले गए हैं राष्ट्र सेवा के पथ पर हमसे दूर, हमेशा के लिए, वे हमारे ही परिवार का एक हिस्सा थे और अब हमें ध्यान रखना है कि सहारे के अभाव में उनके परिवार टूटे न, बिखरे न, कहीं ऐसा न हो कि परिस्थितियां और जीवन का संघर्ष उनका वही विश्वास तोड़ दें, जिनकी, खातिर उनके खेवनहार अपने प्राणों तक की बाजी लगा बैठे थे। इन परिवारों को संभाल लेना, हमारी, आपकी, समाज और सरकार की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और 21 अक्टूबर हमें एक बार फिर से साल दर साल इस जिम्मेदारी का अहसास भी कराता है।

—जी. सी. द्विवेदी

के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल के छात्रावास का उद्घाटन



के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल छात्रावास इमारत का उद्घाटन करते हुए महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी

22 अक्टूबर, 1994 को दिल्ली स्थित के.रि.पु. बल पब्लिक स्कूल की छात्रावास इमारत का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि, उच्चतर माध्यमिक स्तर का एक और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पब्लिक स्कूल हैदराबाद में खोला जायेगा। इस स्कूल के लिए 15 एकड़ भूमि खरीद ली गई है। बल के कार्मिकों के बच्चों के लिए देश में यह बल का अपना दूसरा स्कूल होगा।

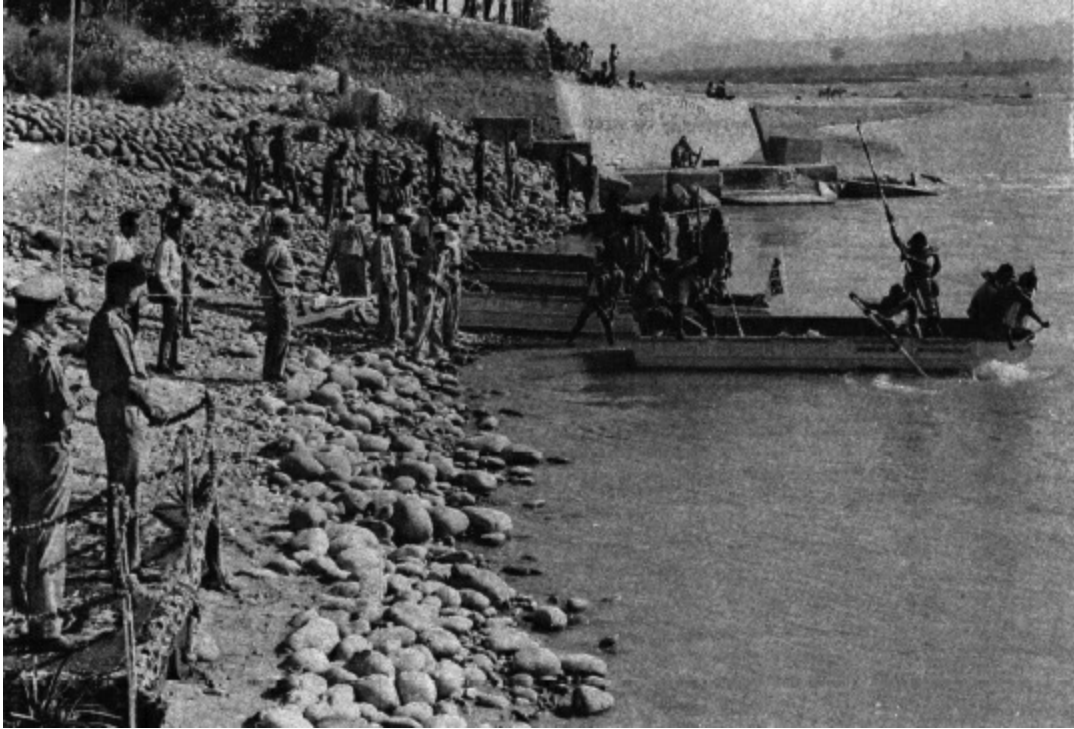
श्री त्रिपाठी ने कहा कि हमारा उद्देश्य बल के कार्मिकों तथा उनके बच्चों के जीवन में एक स्थायित्व लाना है। नई दिल्ली रोहणी स्कूल में छात्रावास का प्रारंभ इस दिशा में एक ओर कदम है। श्री त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को उनके अच्छे प्रदर्शन के लिए बधाई दी और कहा कि उनकी उपलब्धि में अभिभावकों तथा अध्यापकों की बराबर की भागीदारी है। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वह उनके मार्ग में आने वाली उपलब्धियों से भरमाये नहीं तथा समस्याओं और अतिरिक्त दबाव व तनाव से घबराएं नहीं। उन्होंने आगे कहा कि वह अपने जीवन में प्रत्येक इच्छित मंजिल पाने में सक्षम हैं।

प्रारम्भ में महानिदेशक महोदय ने स्कूल के छात्रावास की इमारत का उद्घाटन किया। पूर्ण हो जाने पर इस छात्रावास की इमारत के 4 खंड होंगे, जिनमें कुल मिलाकर 250 छात्र रह सकेंगे। इनमें से एक खंड छात्राओं के लिए होगा।

शुरू में स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने अतिथियों को स्कूल की गतिविधियों तथा छात्रों की उपलब्धियों की जानकारी दी। महानिदेशक महोदय ने इस मौके पर अपने विषयों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कार भी प्रदान किये। ऑल राउन्ड बेस्ट स्टूडेंट का अवार्ड भारतभूषण को प्रदान किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने अभिमन्यु तथा वन्दर वर्ल्ड आफ डोल्ल्स नृत्य नाटिकाएं भी प्रस्तुत कीं। उपनिदेशक (प्रशासन) श्री डी.आर. यादव ने प्रबंध कमेटी की तरफ से अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया।

अभियान गंगा सागर

पानी के रोमांचक खेलों में के.रि.पु. बल का पहला प्रयास



हरिद्वार में अभियान के शुभारम्भ के मौके पर महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी गंगा में प्रवेश करती नावों को देखते हुए।



अभियान पर निकलने से पूर्व तैयारियों पर अंतिम दृष्टि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम नौका अभियान “अभियान गंगा सागर” की

चारों नौकाएं अपने पूरे उत्साह और उमंग के साथ कलकत्ता की तरफ बढ़ रही हैं। यह लेख लिखे जाने तक ये नौकाएं पटना तक पहुंच चुकी थीं। हर जगह इस अभियान दल का अपूर्व स्वागत हो रहा है।

इन नौकाओं को 16 अक्टूबर, 94 को बल के महानिदेशक एस.वी.एम. त्रिपाठी ने हरिद्वार से झंडी दिखाकर विदा किया था। रेपिड एक्शन फोर्स की 105 बटालियन के सहायक कमान्डेन्ट डी.कलेमेंट के नेतृत्व में इस अभियान दल की नौकाएं 61 दिन बाद 15 दिसम्बर, 94 को कलकत्ता पहुंचेगी।

हरिद्वार में नौकाओं को विदा करने से पूर्व आयोजित एक समारोह में बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य रोमांचक खेलों को बढ़ावा देने तक ही सीमित नहीं है, अपितु इस अभियान दल के सदस्य गंगा नदी की प्रकृति तथा इसके प्रदूषण का भी अध्ययन करेंगे ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि के.रि. पु.बल किस प्रकार इस प्रदूषण को रोकने तथा पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी कर सकता है।

श्री त्रिपाठी ने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण बहुत पहले से बल का उद्देश्य रहा है। के.रि.पु.बल ने उड़ीसा में भी भवनेश्वर के नजदीक 25,000 हैक्टेयर क्षेत्र में फैले बरबरा वन के संरक्षण तथा संवर्धन का जिम्मा प्रदेश सरकार से लिया है।

इस मौके पर बोलते हुए महानिरीक्षक (प्रशिक्षण) श्री सुरेश राय ने बताया कि के.रि.पु.बल के इस “अभियान गंगा सागर” में 26 सदस्यों की एक टीम भाग ले रही है। इनके अतिरिक्त छः सदस्य रिजर्व में रखे गए हैं। ये सदस्य प्रतिदिन 40 किलोमीटर का सफर तय कर हरिद्वार से कलकत्ता तक का 2151 किलोमीटर का सफर 61 दिन में पूरा करेंगे। के.रि.पु.बल के इस अपनी तरह के पहले अभियान के सदस्य रास्ते में बचाव तथा राहत कार्यों का प्रशिक्षण लेने के अतिरिक्त गंगा के तटवर्ती इलाकों के संबंध में आंकड़े भी एकत्र करेंगे ताकि बाढ़ आदि के दौरान इन इलाकों में बल की तैनाती के समय इनका उपयोग किया जा सके।

इससे पहले बल के मध्य-क्षेत्र के महानिरीक्षक श्री एस.सी.चौबे ने अतिथियों का स्वागत किया तथा उप निदेशक (प्रशिक्षण) श्री वी.सी. गोयल ने समारोह में शामिल अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।



इलाहाबाद में अभियान दल का स्वागत अवर महानिदेशक श्री ए.वी लिङ्ल ने किया, और उसके बाद
इलाहाबाद से प्रस्थान



आर.ए.एफ. की दूसरी वर्षगांठ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी ख्याति बनाये रखे

—राजेश पायलट



श्री राजेश पायलट, आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री परेड का निरीक्षण करते हुए।

रेपिड एक्शन फोर्स की द्वितीय वर्षगांठ 7 अक्टूबर, 1994 को नई दिल्ली वजीराबाद स्थित 103 बटालियन स्थल पर मनायी गई। इस अवसर पर केन्द्रीय आंतरिक सुरक्षा राज्य मंत्री श्री राजेश पायलट मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने जो इज्जत कमाई है, उस ख्याति और अपनी उपलब्धियों को वे बनाये रखें।

वह इस अवसर पर आयोजित रस्मी परेड में जवानों और अधिकारियों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर प्रस्तुत एक भव्य परेड की सलामी भी ली। बाद में उपस्थित समुदाय को सम्बोधित करते हुए उन्होंने इस बल की सराहना करते हुए कहा कि इसकी इकाइयां जहां भी लगाई गई शान्ति व सुरक्षा का माहौल बन गया है।

श्री पायलट ने कहा कि देश में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। हर राज्य द्वारा इसकी मांग की जाती रहती है और इस बल की इकाइयां तत्काल एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती हैं।

मंत्री महोदय ने कहा कि जिन राज्यों में इस बल की बटालियनों को भूमि नहीं मिली है, वहां शीघ्र ही राज्य सरकार या केन्द्र सरकार द्वारा भूमि उपलब्ध कराई जायेगी। देश में चारों तरफ बल के चार मुख्य जोनल सेन्टर खोले जायेंगे और इकाइयों को उनमें रखा जायेगा। इससे उन्हें एक से दूसरे स्थान पर ले जाने में सुविधा रहेगी और खर्चा कम आयेगा। श्री पायलट ने कहा कि वह के.रि.पु.बल की समस्याओं का शीघ्र ही निराकरण करेंगे।

इससे पूर्व बल के महानिदेशक श्री विलासमणि त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए मंत्री महोदय को आर.ए.एफ. की तैनाती के दौरान वितरण के लिये दवाइयों तथा अन्य सामग्रियों आदि में आने वाली दिक्कतों से अवगत कराया। बाद में मंत्री महोदय ने आश्वासन दिया कि वे शीघ्र ही इस समस्या का समाधान करेंगे।

इस अवसर पर प्रस्तुत परेड में आर.ए.एफ. की महिला टुकड़ी सहित चार टुकड़ियां शामिल थीं। परेड का नेतृत्व उप कमांडेन्ट राकेश यादव ने किया।

बाद में आर.ए.एफ. के जवानों ने निहत्थे लड़ाई, मार्शल आर्ट्स तथा दंगों के समय उन पर काबू पाने के अपने कौशल का प्रदर्शन किया। देश के विभिन्न भागों में स्थित आर.ए.एफ. की बटालियनों ने अपने अपने क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली झांकियों तथा सांस्कृतिक नृत्यों का भी प्रदर्शन किया।



परेड में 105 बटालियन की एक झांकी



दंगों पर काबू पाने के अपने जौहर का प्रदर्शन करते हुए आर.ए.एफ. के सदस्य।

इंटर सेक्टर दौड़कूद प्रतियोगिता-1994 आर.ए.एफ. ने खिताब जीता

नई दिल्ली झड़ौदा कलां स्थित बल के ग्रुप केंद्र में 24 से 27 अक्टूबर 1994 तक सम्पन्न हुयी बल की चौथी अंतर सेक्टर दौड़कूद प्रतियोगिता में बल के नौ सेक्टर तथा एक जोन की 10 टीमों के 543 धावकों ने 22 मुकाबलों में अपनी प्रतिभा के जौहर दिखाए। इस प्रतियोगिता में 88 महिला बटालियन तथा रेपिड एक्शन फोर्स की महिला टीमों भी शामिल थीं।

रेपिड एक्शन फोर्स ने कुल 151 अंक प्राप्त कर चैंपियनशिप ट्राफी जीत ली। उत्तर पश्चिम जोन ने 170 अंकों के साथ पुरुष वर्ग की चैंपियनशिप तथा उत्तर सेक्टर ने 282 अंकों के साथ महिला वर्ग की ट्राफी जीत ली। प्रतियोगिता में दो महिलाओं सहित 6 धावकों को सर्वश्रेष्ठ धावक घोषित किया गया। ये सम्मान प्राप्त करने वाले धावक हैं :- सब इंस्पेक्टर परमजीत सिंह (उत्तर पश्चिम जोन), सब इंस्पेक्टर रामकरण (बिहार सेक्टर) लांस नायक डी.टोपो (बिहार सेक्टर), कांस्टेबल जीतभान ओरन (बिहार सेक्टर), नायक/महिला जैसी पी.ए. (उत्तर सेक्टर) तथा कांस्टेबल/महिला शैली

पी.एम. (उत्तर सेक्टर)।

बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने 24 अक्टूबर, 94 को प्रतियोगिता का उद्घाटन किया जबकि 27 अक्टूबर, 94 को एक भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुई इस प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार श्रीमति इंदु त्रिपाठी ने प्रदान किए।

इस चार दिवसीय प्रतियोगिता में 18 नए मीट रिकार्ड बनाए गए। जिनमें से पांच रिकार्ड पुरुष प्रतियोगियों ने स्थापित किए जबकि 13 रिकार्डों की स्थापना महिला प्रतियोगियों ने की। इस प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ धावकों में से अगले वर्ष होने वाली अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता के लिए बल की टीम हेतु धावकों का चयन किया जायेगा।



आर.ए.एफ. की विजता टीम महानिदेशक महोदय के साथ



प्रेमजीत सिंह को सर्वश्रेष्ठ धावक का पुरस्कार प्रदान करती हुयी श्रीमति इंदु त्रिपाठी
इस प्रतियोगिता के दौरान रिकार्ड स्थापित करने वाले धावक तथा उनके द्वारा
स्थापित रिकार्ड इस प्रकार हैं :

पुरुष वर्ग

इंस्पेक्टर राजेन्द्र सिंह (दक्षिण सेक्टर)-110 मी. बाधा दौड़-14.80 सेकेण्ड। सब-
इंस्पेक्टर प्रेमजीत सिंह (उत्तर पश्चिम जोन)-400 मी. दौड़-47.04 । इंस्पेक्टर प्रभजोत
सिंह (दक्षिण सेक्टर)-पोल वाल्ट-4.45 मीटर। सब-इंस्पेक्टर राकेश कुमार (केन्द्रीय
सेक्टर)-जैवलीन थ्रो-67. 96 मीटर। हैड कांस्टेबल गोकुल चन्द्र मोहन्ता (पूर्वी सेक्टर)-
हाई जम्प-2 मीटर।

महिला वर्ग

कांस्टेबल एस. सुब्बा (उत्तरी सेक्टर)-100 मीटर दौड़-12.87 सैकेण्ड। नायक
पी.ए. जैसी (उत्तरी सेक्टर)-200 मीटर दौड़-27.68 सैकेण्ड। नायक पी.ए. जैसी
(उत्तरी सेक्टर)-400 मीटर दौड़-1.04.20 सैकेण्ड। लांस नायक जयसम्मा जोर्ज
(उत्तरी सेक्टर)-800 मीटर दौड़-2.30.40 सैकेण्ड, कांस्टेबल पी.के. अनुराधा
(आर.ए.एफ.)-1500 मीटर दौड़-5.25.20 सैकेण्ड, कांस्टेबल एम.सी. बिन्दु
(आर.ए.एफ.)-100 मीटर बाधा दौड़-17.39 सैकेण्ड। नायक बिनामा जोसेफ (उत्तरी

सेक्टर)-400 मीटर बाधा दौड़-1.10.72 सैकेण्ड। उत्तरी सेक्टर, 4×100 मीटर रिले-52.83 सैकेण्ड, कांस्टेबल रिजी कुरिया कोसे (उत्तरी सेक्टर) लॉग जंप-4. 75 मीटर। कांस्टेबल गीता के.के. (आर.ए. एफ.) हाई जम्प-1.50 मीटर। कांस्टेबल पी. एम. शैली (उत्तरी सेक्टर) डिस्कस थ्रो-30.68 मीटर। नायक एन. नागरंगबी (उत्तरी सेक्टर)-जैवलीन थ्रो-31.64 मीटर।

“जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह किसी अच्छे कार्य में लगाया जाए”

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

“तीन वस्तुएं सोच कर उठाओ—कदम, कलम और कसम”

—कालीदास

“जो दूसरों के लिए जीता है उसे कभी निराशा नहीं मिलती”

—टालस्टाय

के.रि.पु.बल का श्वान दस्ता

गृह मंत्रालय ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए 3 श्वान दस्तों (डाग स्कैड्स) की स्वीकृति प्रदान की है। बल की परिचालन दक्षता में सुधार लाने के लिए एक लम्बे अरसे से श्वान दस्तों की जरूरत महसूस की जा रही थी।

प्रत्येक श्वान दस्ते में 2 श्वान तथा 2 संचालक होंगे। संबंधित पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) अपने परिचालन नियंत्रणाधीन यूनिटों में से अपने निरीक्षण में एक एन.सी.ओ. को श्वान दस्ते के प्रभारी के रूप में नियुक्त करेंगे।

श्वान दस्ते, संबंधित परिचालन पुलिस उप महानिरीक्षक के परिचालनिक नियंत्रण में होंगे। किन्तु सभी श्वान दस्तों का मूल नियंत्रण महानिरीक्षक परिचालन के पास होगा।

के.रि.पु. बल ने 143 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने माह अक्टूबर, 94 में देशभर में आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 143 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई 13 मुठभेड़ों में सात आतंकवादी मारे गए।

इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 49 घातक हथियार भी बरामद किए, जिनमें चार ए.के. 47 रायफलें, एक एस.एल. आर., एक कारबाइन, तीन स्टेनगन, नौ पिस्तौलें, एक रिवाल्वर तथा दो रायफलें भी शामिल हैं।

मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के सात जवान वीर गति को प्राप्त हुए तथा 18 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

33 बटालियन ने बास्केट बाल प्रतियोगिता जीती

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दिल्ली स्थित बटालियनों की अंतर बटालियन बास्केट बाल प्रतियोगिता 33 बटालियन ने जीत ली। नई दिल्ली रविंद्र रंगशाला स्थित 97 बटालियन स्थल पर 19 अक्टूबर, 1994 को खेले गए एक रोमांचक मैच में 33 बटालियन ने 93 बटालियन को 63-31 से पराजित कर यह प्रतियोगिता जीती। मध्यान्तर तक स्कोर 32-20 था।

विजेता टीम के लिये सर्वाधिक 18 अंक सहायक कमाडेन्ट नरेन्द्र सिंह ने तथा 16-16 अंक इंस्पेक्टर सुरेन्द्र सिंह तथा हैड कांस्टेबल सुजान सिंह ने बटोरे। जबकि पराजित टीम के लिए लांस नायक वासुदेव ने 20 अंक हासिल किये।

इस चार दिवसीय प्रतियोगिता में बल की दिल्ली स्थित बटालियनों की 13 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के मैच लीग कम नाक आउट आधार पर खेले गए।

प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला देखने के लिए बल के महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री सुरेश राय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि खेल के.रि.पु.बल के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और हाल में शुरू किए गए अभियान गंगा सागर के माध्यम से बल ने पानी के रोमांचक खेलों में भी अपनी भागीदारी शुरू कर दी है।

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल केन्द्रीय जोखिम निधि से माह अक्टूबर, 1994 में मृत्यु के कुल 30 मामलों में कुल 11,02,500 रुपये देने स्वीकृत किए गए। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की केन्द्रीय कल्याण निधि की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के कुल 8 मामलों में कुल 1,20,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि (पार्ट-बी) स्पेशल कल्याण निधि योजना से भी इसके 6 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 2,10,000 रुपये देने स्वीकृत किए गए।

माह अक्टूबर, 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अक्टूबर, 1994 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

कुक प्रेम चन्द्र (40 बटा.), नायक अब्दुल सलाम शाह (20 बटा.), का.एस. जी. बगुल (64 बटा.), कां. ब्रिज लाल (130 बटा.), हवलदार/रेडियो मैकेनिक टी. एस. जोसेफ (द्वितीय सिगनल), हवलदार सूरत सिंह (80 बटा.), इंस्पेक्टर रणबीर सिंह (27 बटा.), कां. पुष्पराज (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), लांस नायक संत राम (11 बटा.), कां मंगल

पाटेल (86 बटा.), कां. अंगद राम (86 बटा.), कां. ए.के.दास (86 बटा.), हैड कां/ रेडियो आपरेटर चंदन सिंह रावत (द्वितीय सिगनल), कुक संदानंदन (ग्रुप केन्द्र गुवाहटी), -हैड कां. रत्नाकर कोनाई (31 बटा.), कां. अजीत सिंह (68 बटा.), नायक ओम प्रकाश (91 बटा.), कुक के. पुरषोत्तमन (78 बटा.), लांस नायक सोमदत्त (61 बटा.), कां. शिव शंकर यादव (तृतीय सिगनल), लांस नायक बी. दिगाल (75 बटा.), नायक रामाधर यादव (सिगनल ग्रुप केन्द्र), कां.जी. टी. गोटे (129 बटा.), कां./ड्राईवर बी.एस. नारायण (12 बटा.), कां. लिंग राय प्रधान (75 बटा.), कां. दलजीत सिंह (111 बटा.), तक कां. रोशन लाल (74 बटा.)

कविताएं

जवान

तू शान है मेरे देश की, तुझे जानता ये जहान है,
तू आन है मेरे देश की, तू सी.आर.पी.एफ. का जवान है।
तू कर्मवीर बना रहे, तू धर्मवीर बना रहे,
तू रणवीर बना रहे, तू शूरवीर बना रहे,
तू धीरवीर बना रहे, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम है।
तू शान है मेरे देश की, तुझे जानता ये जहान है ॥

तुझ पर हमारी है नजर, तुमको हमारी है खबर,
हर भेदभाव से दूर तू, हर जोखिमों से बेअसर
तेरा हर कदम है जलजला, तेरी मुठियों में तूफान है।
तू आन है मेरे देश की, तू सी.आर.पी. का जवान है।
तेरे पास तेरा कर्म है, तेरा कर्म ही तेरा धर्म है,
तू हर घड़ी सजग रहे, निष्ठा में तो तू प्रथम है,
तू शान से बढ़ता रहे, मंजिल तेरी आसान है,
तू आन है मेरे देश की, तू सी.आर.पी. का जवान है।

इस देश का वैभव है तू, इस देश का गौरव है तू,
इस देश की माटी का भी, एक सजग प्रहरी है तू,
तिरंगा कभी झुके नहीं, तेरा लक्ष्य भी महान् है,
तू आन है मेरे देश की, तू सी.आर.पी.का जवान है।

—स.उ.नि. (मि.) ओम प्रकाश
पाठक/उ.म.नि.
कार्यालय अजमेर

अबला से बनी सबला

संज्ञा वीरांगना की पायी,
के.रि.पु.बल की महिलायें,
सबला बनकर यह दिखलायीं,
जो कहलाती थी अबलाएं ॥

निष्पक्ष भाव का फर्ज लिए,
ये सेवा कठिन निभाती हैं,
काबा हो चाहे हो काशी
सर्वत्र सभी डट जाती हैं. ॥

ये ही रानी दुर्गावती हैं,
ये ही झांसी की रानी।
कर्तव्यपरायणता के पथ पर,
इनकी भी अमिट कहानी है ॥

भारत के कोने-कोन में,
फैली ये जंगी सबलायें।
अब किसी अराजक ताकत की,
चलती ही नहीं मनमानी है ॥

कर उग्रवाद को दफन यहां,
एक सुखद समय ले आयीं ॥
नेता सुभाष का यह भारत,
गांधी की पूर्ण निशानी हैं ॥

भारत ध्वज माथे पर रखकर,
बल का गौरव दिखलाती हैं।
भारत की नारी नहीं! नर हैं,
भारत के लिए दिवानी हैं ॥

सामर्थ्य नहीं कोई शत्रु देश,

इनके रहते कुछ कर जायें।
यह हवलदार सिंह की कविता,
बस उनकी रचित जुबानी है ॥

सि. हवलदार सिंह
9 बटा.

रजि. नं. 4767/87



आर.ए.एफ. की द्वितीय वर्षगांठ के अवसर पर एक लोक नृत्य प्रस्तुत करते हुए आर.ए.एफ. के जवान

मुख्य सम्पादक : जी.सी. द्विवेदी । सम्पादक : अनिल गुप्ता । चरिष्ठ छायाकार : सतीश खन्ना ।
मुद्रक तथा प्रकाशक : महानिदेशक के.रि.पु. बल, क्लक-1 सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड
नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी ।
मुद्रक : सी.आर.पी. प्रेस, झड़ौदा कला, नई दिल्ली-110072 ।
कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग : फ्लेम ग्राफिक्स, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

सी. आर. पी. एफ. समाचार

खंड-7

अंक-8

31 दिसंबर, 1994

10 पौष, शक 1916

55वें
वार्षिकोत्सव पर
विशेष



अभियान गंगा सागर की समाप्ति पर कलकत्ता में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल
श्री के.वी. रघुनाथ रेड्डी अभियान दल के नेता श्री डी. क्लेमेंट को ट्राफी भेंट करते हुए।



हाल ही में सम्पन्न हुए कुछ राज्यों के विधान सभा चुनावों के दौरान के.रि.पु. बल की मौजूदगी चुनावों को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने में सहायक रही।

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड-VII अंक-8
31 दिसंबर, 1994
10 पौष, शक 1916

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र संकलन एवं प्रथम आवरण
सतीश खन्ना

अन्य आवरण
डी.एन. तिवारी

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु.बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली-110003 की ओर से जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ. प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
फ्लेम ग्राफिक, बी-3/16, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-110016 फोन : 6117452, 606451

विषय-सूची



सम्पादकीय

संदेश

के.रि.पु.बल इतिहास और वर्तमान

बरबरा वन-के.रि.पु.बल के प्रकृति प्रेम का प्रतीक

पूर्ति

वर्ष 1994 के पदक विजेता

उत्तर पश्चिम जोन

1994-एक झलक

खेल एवं प्रशिक्षण

रेपिड एक्शन फोर्स

अमरनाथ यात्रा

सूरत में आर.ए.एफ.

अभियान गंगा सागर

के.रि.पु.बल स्वर्ण कप बास्केटबाल प्रतियोगिता

के.रि.पु.बल में हिंदी

उत्तर सेक्टर

दक्षिण सेक्टर

जम्मू कश्मीर

के.रि.पु.बल में संचार व्यवस्था

होम्योपैथी-एक परिचय

कविताएं

सम्पादकीय

जाता हुआ वर्ष हमेशा अपने पीछे कुछ ऐसे निशान छोड़ जाता है, जो या तो आने वाले वर्षों के लिए एक सबक होते हैं, या फिर प्रेरणा के स्रोत। 1994 भी इसका अपवाद नहीं है। परंपरा रही है कि जाते वर्ष के अंतिम छोर पर खड़े हो कर हम अपने पिछले पूरे साल पर एक नजर डालें, अपने साल भर के काम का आकलन करें और फिर उसके प्रकाश में अगामी वर्ष में प्रवेश करें।

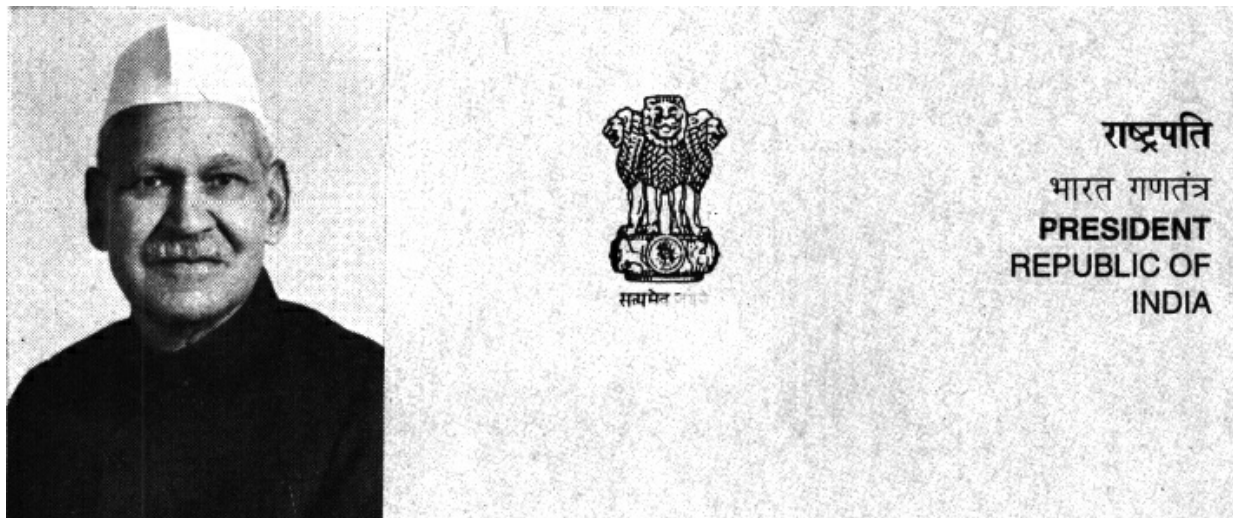
सी.आर.पी.एफ. समाचार का यह अंक इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है। पिछले पूरे एक साल में हमने क्या खोया, क्या पाया। इसका संक्षिप्त लेखा-जोखा हमने इस अंक में जुटाने का प्रयास किया है, दिसम्बर का महीना हमारे लिए एक और कारण से भी महत्त्व रखता है। दिसम्बर का महीना हमारी वर्षगांठ का महीना है। इस वर्ष के.रि.पु.बल अपनी 55वीं वर्षगांठ मना रहा है। यह मात्र एक वार्षिक उत्सव नहीं, संकल्प दिवस है। जो अब तक शहीद हुए हैं, उनकी अमर शहादत को स्मरण कर, उनसे प्रेरणा लेकर, उनके द्वारा स्थापित परंपरा को ऊँचा रखने और आगे ले जाने का संकल्प दोहराने का दिवस।

पिछले एक वर्ष में हमारे जो साथी हमसे बिछुड़ गए हैं, उनकी याद में नम आँखों से, हमने जो उपलब्धियाँ हासिल की हैं, उन पर गर्व से सीना ताने हुए और हमारी कुर्बानियों के एवज में हमें जो तमगे मिले हैं, उस सम्मान से सिर उठाए हुए हम 1995 में प्रवेश कर रहे हैं। ईश्वरीय आलोक हमारा पथ प्रशस्त करे, हमें अपने मकसद में कामयाबी हासिल हो, देश में अमन व शांति कायम हो, सेवा और भक्ति के अपने उद्देश्य वाक्य पर हम प्राणोपठन से डटे रहें, नव वर्ष की पूर्व बेला पर हमारी यही मंगल कामना है।

शुभागमन 1995

अभिलाषाएं आकृति पाएं, यत्न बनें उपलब्धि,
जीवन में अभिनंदनरत हो श्वास श्वास समृद्धि,
सुख सुविधाओं का हर पल हो जाए आयुष्मान,
यही कामना नव संवत्सर लाए स्वर्ण विहान।

देश की सेवा में आंतरिक सुरक्षा, शांति व व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात, बल के हर सदस्य, उनके परिजनों एवं हितैषियों को नववर्ष की पूर्व बेला पर कोटि-कोटि शुभकामनाएं।



संदेश

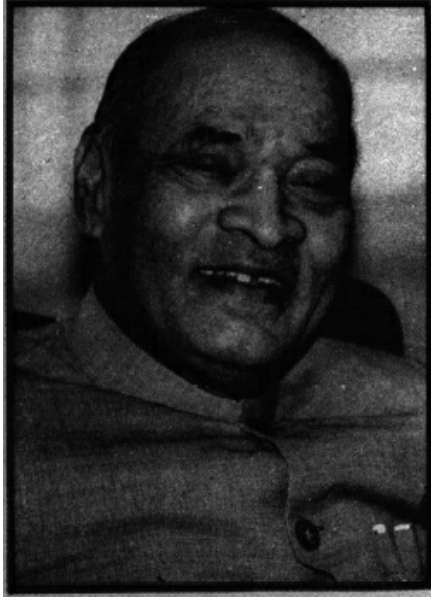
मुझे यह जानकारी प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल 28 दिसम्बर, 1994 को अपना 55वां वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस अर्द्ध-सैनिक बल के जवानों ने अपनी देशभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा तथा कार्यकुशलता के द्वारा राष्ट्र का विश्वास जीतने में सफलता पाई है। महिला बटालियन तथा द्रुत कार्य बल के शामिल होने से यह और मजबूत हुआ है तथा इसकी परिचारिक क्षमता एवं विश्वसनीयता अधिक प्रखर हुई है।

मैं, बल के सभी अधिकारियों एवं जवानों तथा उनके परिवारों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(शंकर दयाल शर्मा)

नई दिल्ली
22 दिसम्बर, 1994



प्रधानमंत्री
भारत सरकार

संदेश

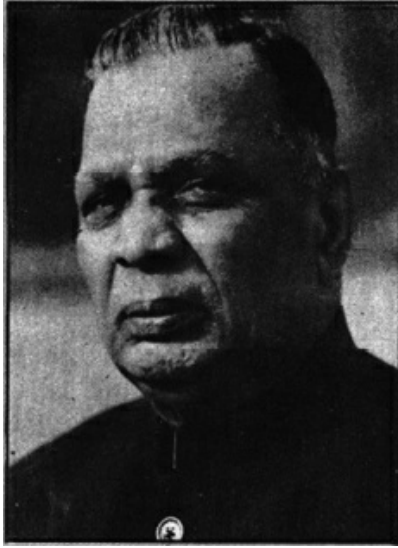
मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि इस देश का सबसे पुराना अर्द्ध-सैनिक बल, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल दिनांक 28 दिसम्बर, 1994 को अपना 55वां वार्षिकोत्सव मना रहा है।

के.रि.पु.बल इस विशाल देश में कानून एवं व्यवस्था तथा आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। यह बल कठोर से कठोर कार्यों को बड़े से बड़ा बलिदान देकर तथा पूरी समर्पण भावना व प्रतिबद्धता से पूरा करने के लिए विख्यात है।

साम्प्रदायिक दंगों तथा इस प्रकार की अन्य स्थितियों से निपटने के लिए अति कार्यकुशल एवं विशेष रूप से प्रशिक्षित द्रुत कार्य बल के जुड़ जाने से इस बल के प्रति जन-मानस में और अधिक विश्वास पैदा हुआ है।

खुशी के इस अवसर पर मैं बल के सभी सदस्यों और उनके परिवारों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

ह.
(पी.वी.नरसिम्हा राव)



गृह मंत्री
भारत

संदेश

मैं, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सभी अधिकारियों, जवानों तथा परिवारों को बल की दिनांक 28 दिसम्बर, 1994 को 55वीं वर्षगांठ के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने कठिन परिस्थितियों में हमारे देश की आंतरिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए विघटनकारी तथा घातक-तत्वों से निपटने में त्रुटिहीन कार्यकुशलता का परिचय दिया है। जब कभी भी देश में प्राकृतिक आपदाएं जैसे- महाराष्ट्र में लाटूर में भूकम्प तथा सूरत (गुजरात) में प्लेग का प्रकोप फैला, इस महान बल ने सक्रियता से अपना योगदान दिया है।

पिछले दो वर्ष में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के विशेष रूप से प्रशिक्षित विंग द्रुत कार्य बल ने भी साम्प्रदायिक तत्वों से निपटने तथा इस दिशा में सद्भावना बनाए रखने में अति-सराहनीय कार्य किया है। बल की महिला विंग ने देश के अन्दर तथा बाहर अपनी प्रशंसनीय कार्यकुशलता द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के मस्तक और भी ऊंचा कर दिया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में बल और अधिक मजबूत होकर सामने आएगा।

(शंकरराव चव्हाण)



गृह राज्य मंत्री
(आंतरिक सुरक्षा)
गृह मंत्रालय
भारत

संदेश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की शांति और आंतरिक सुरक्षा कायम रखने में सहयता करने की भूमिका प्रशंसनीय है। इस बल का एक बहुत बड़ा हिस्सा कठिन स्थितियों में जम्मू-कश्मीर, पंजाब व पूर्वोत्तर राज्यों में विद्रोही गतिविधियों का मुकाबला करने में लगा हुआ है। यह बल अपने बहु-आयामी कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पित है और अमरनाथ यात्रा के लिए प्रबन्ध करने व चुनावों के कुशल संचालन हेतु केन्द्रीय सशस्त्र बलों की तैनाती में समन्वय कार्य की अपनी भूमिका को इसने उत्कृष्टतापूर्वक निभाया है। संयुक्त राष्ट्र के अभियानों हेतु कम्बोडिया तथा मोज़ाम्बिक में नियुक्त की गई इस बल की एक टुकड़ी ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इसके अतिरिक्त, उड़ीसा के बारबेरा वन का संरक्षण कर यह बल पर्यावरण का विकास करने में भी सक्रिय रहा है।

महिला बटालियन के समावेश तथा द्रुत कार्य बल की बटालियनों की स्थापना से इस बल की जनता का मित्र होने की इसकी छवि में और अधिक वृद्धि हुई है। मुझे विश्वास है कि इस बल के अधिकारी व जवान बल का गौरव बढ़ाने के लिए सतत कार्य करते रहेंगे तथा इसके उद्देश्यों एवं उत्कृष्ट कार्यों में व्यक्त जनता के विश्वास को और मज़बूत करेंगे।

मैं, 55वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर अधिकारियों, जवानों और उनके परिवारों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

ह.
(राजेश पायलट)



संदेश

यह जानकर बहुत ही हर्षोल्लास हुआ है कि केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल दिनांक 28.12.94 को अपना 55वां वार्षिकोत्सव मनाएगा तथा इस अवसर पर सी.आर.पी.एफ. समाचार का एक विशेष अंक प्रकाशित किया जाएगा।

देश की सुरक्षा व कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में के.रि.पु.बल ने एक विशिष्ट भूमिका अदा की है। इस बल ने साहस दृढ़ विश्वास एवं समर्पण भावना की ऊंची मिसालें कायम की हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में भी बल अपनी शानदार परंपराओं के अनुरूप इसी प्रकार जोश व उत्साह के साथ देश की लगातार सेवा करता रहेगा।

मैं, बल के 55वें वार्षिकोत्सव के अवसर अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

ह.
(के.पद्मनाभैया)



महानिदेशक
के.रि.पु.बल

संदेश

के.रि.पु.बल की 55वीं वर्षगाँठ के अवसर पर मैं बल के अधिकारियों, जवानों, अन्य कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, साथ ही उन सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा तथा सम्मान व्यक्त करता हूँ जिन्होंने देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। देश के विभिन्न भागों में शांति एवं व्यवस्था कायम करने के लिए बल के जवानों ने बड़ी संख्या में बलिदान दिए हैं और आज भी अपूर्व साहस, वीरता और देश-भक्ति की भावना मन में लिए अपने कर्तव्य पथ पर डटे हैं।

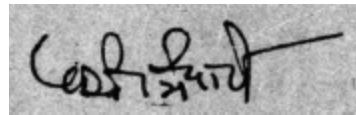
यह हमारे लिए बड़े गर्व एवं संतोष की बात है कि देश में आतंकवादी या अन्य हिंसात्मक गतिविधियों की रोकथाम के लिए इस बल को शांतिदूत के रूप में तैनात किया जाता है। समाज तथा शासन का हमारे ऊपर अटूट विश्वास व आस्था हमारे लिए अमूल्य है। बल ने उच्च कोटि की कटिबद्धता, सेवा व निष्ठा की गौरवशाली परम्पराएं स्थापित की हैं। हमें इन परम्पराओं को और सुदृढ़ करना है तथा अपनी अखिल भारतीय तथा धर्म-निरपेक्ष छवि को और निखारना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमने प्रशिक्षण, व्यवसायिक क्षमता तथा मानव अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के व्यापक प्रयास किए हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष अमरनाथ यात्रा को शांतिपूर्वक आयोजित करने में और असम में उल्फा आतंकवादियों की गतिविधियों को नियंत्रित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। हाल ही में कुछ राज्यों में हुए विधान सभा चुनावों को शांतिपूर्वक सम्पन्न कराने में बल की भूमिका अत्यंत सराहनीय तथा प्रमुख रही। इस वर्ष भी महिला कार्मिक तथा रैपिड एक्शन फोर्स की भूमिकाओं की सर्वत्र सराहना की गई है। बल ने प्राकृतिक आपदाओं की संकटपूर्ण घड़ियों में भी देशवासियों को अपूर्व सहयोग दिया है। साथ ही पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व कार्य किया है।

इस पावन अवसर पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के हम सभी सदस्य देश में

एकता, अखण्डता शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए कृत संकल्प हों। बल के सभी सदस्यों के लिए यह मेरी शुभकामनाएं हैं।

जय हिन्द!



(श्री वि.म. त्रिपाठी)

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल गौरवपूर्ण अतीत और चुनौती भरा भविष्य



सरदार पटेल बल को ध्वज प्रदान करते हुए।

55 वर्ष पहले 27 जुलाई, 1939 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का जन्म नीमच में हुआ। अतः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रत्येक सदस्य का नीमच के साथ एक भावनात्मक लगाव होना स्वाभाविक है। यह स्थान तथा इसके आस-पास के स्मारक हमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के गौरवपूर्ण इतिहास की याद दिलाते हैं, जिसके हम एक अंग हैं।

इसी नोमच शहर में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की स्थापना 27 जुलाई, 1939 को क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव पुलिस के नाम से हुई थी। इस बल का मुख्य कार्य कानून और व्यवस्था बनाए रखने में रजवाड़ों की सहायता करना था। जर्मनी तथा इटली के युद्धबंदियों की चौकसी करने, हुरों के आतंक से निपटने, मध्य भारत में डाकुओं के विरुद्ध अभियान चलाने आदि में भी इस बल का उपयोग किया गया।

देश आजाद होने पर सी.आर.पी. के जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया और 1949 में संसद के एक अधिनियम द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के रूप में इसका पुनः नामकरण किया गया। इस अधिनियम में के.रि.पु. की संरचना संघ के एक सशस्त्र बल के रूप में की गई। तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने नव-स्वतंत्र देश की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप इस बल की बहु-आयामी भूमिका की पहले से कल्पना कर ली थी।

इस बल की मांग में निरंतर वृद्धि होते रहने के कारण बल का भी विस्तार होता रहा। भुज, पेप्सू तथा चंबल घाटी में के.रि.पु.बल की टुकड़ियों के कार्य की अधिकारियों तथा लोगों ने सब जगह प्रशंसा की। हॉट स्पिंग्स (लद्दाख) में चीनी आक्रमण का प्रथम झटका केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने ही झेला था। 21 अक्टूबर 1959 को के.रि.पु.बल की एक छोटी से गश्ती टुकड़ी पर चीनियों के बहुत बड़े दल के द्वारा घात लगाई थी। इस मुठभेड़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 10 जवानों ने अपने प्राणों की बलि दी थी, जिसकी याद में प्रत्येक वर्ष 21 अक्टूबर का दिन संपूर्ण देश में “पुलिस स्मृति दिवस” के रूप में मनाया जाता है।

वर्तमान में बल की संख्या 1.5 लाख से अधिक है जिसमें 129 बटालियन (123 ड्यूटी बटालियन, 5 सिगनल बटालियन और एक स्पेशल ड्यूटी ग्रुप बटालियन), 30 ग्रुप केन्द्र, 7 प्रशिक्षण संस्थान, 3 बेस अस्पताल तथा कई अन्य सहायक तत्व हैं। इन वर्षों में इसकी भूमिका में कई और किस्मों के कार्य जुड़ गए हैं।

महिला बटालियन

देश में यही एक अर्द्ध-सैनिक बल है जिसे महिला बटालियन प्राप्त होने का गर्व प्राप्त है। महिला बटालियन ने मार्च 1987 में अपना प्रशिक्षण पूरा किया था। सर्वप्रथम इसने मेरठ के दंगों में प्रशंसा अर्जित की और इसके बाद श्रीलंका में बेहतरीन कार्य के लिए इसे प्रशंसा मिली।

द्रुत कार्य बल

साम्प्रदायिक तथा अन्य सामाजिक तनावों से पैदा होने वाले दंगों और दंगों जैसी स्थितियों से निपटने के लिए 1992 में द्रुत कार्य बल (आर.ए.एफ.) का गठन किया गया। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विद्यमान बटालियनों में से मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा उनके सर्विस रिकार्डों की जांच के बाद आर.ए.एफ. के कार्मिकों को चुना गया

हैं। आर.ए.एफ. को प्रत्येक बटालियन के साथ एक माहेला प्लाटून भी है। द्रुत कार्य बल खड़ा करने का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि दंगों की घटना के समय संबंधित समुदाय के साथ बर्ताव के लिए इस बल के पास निष्पक्ष और तटस्थ अधिकारी तथा जवान हों। इसका उद्देश्य यह भी था कि विभिन्न प्रकार के दंगों से निपटने के लिए और अधिक संख्या में व्यावसायिक तौर पर कुशल अधिकारी तथा जवान उपलब्ध हों। इस बल को अधिक गतिशील बनाने का प्रयास किया गया है ताकि कम-से-कम समय में यह बल हरकत में आ सके।

परिचालन उपलब्धियां

जनवरी, 1994 से अब तक के.रि.पु.बल ने पूरे देश में 2706 उग्रवादियों/आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा इस अवधि में देश भर में आतंकवादियों के साथ हुई कुल 117 मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 60 आतंकवादी मारे गए। तथा इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 408 घातक हथियार बरामद किए। जिनमें 85 पिस्तौले, 17 राइफलें, 18 ए.के.47 रायफलें, 11 ए.के.56 रायफलें, 14 स्टेन कारबाइन, तीन जी.पी.एम.जी., एक राकेट लांचर तथा 159 अन्य हथियार शामिल हैं। मगर इस सारी प्रक्रिया में बल के 22 जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 178 गंभीर रूप से घायल हुए।

प्रतिविद्रोही तथा आतंकवादी गतिविधियों के विरूद्ध कार्रवाई

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्य रूप में पंजाब, जम्मू कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों तथा उत्तरप्रदेश के तराई क्षेत्र में प्रतिविद्रोही तथा आतंकवादी गतिविधियों के विरूद्ध कार्रवाई में लगा है।

पंजाब पिछले कई वर्षों से हमारे जवानों की मुख्य कार्यस्थली रहा है। आंकड़े बताते हैं कि हमारे सतत प्रयास तथा कुर्बानियाँ रंग लायी हैं और आज पंजाब के नागरिक शांत, मुक्त और भयरहित वातावरण में सांस ले रहे हैं। 1988 से लेकर अब तक आतंकवादियों के साथ हमारी कुल 2030 मुठभेड़ें हो चुकी हैं कि 2551 आतंकवादी मारे गए, 12,996 को गिरफ्तार किया गया तथा 5,694 घातक किस्म के हथियार बरामद किए गए। मगर ये सब हासिल करने के लिए हमारे 191 वीर जवानों को आतंकवाद की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी तथा 500 गंभीर रूप से घायल हुए। इस वर्ष हमारे जवानों की पंजाब में आतंकवादियों के साथ कुल तीन मुठभेड़े हुईं, जिसमें नौ घातक हथियार बरामद किए गए।



पंडित जवाहर लाल नेहरू नीमच में बल की परेड का निरीक्षण करते हुए

पंजाब में शांति स्थापना के बाद हमारी सर्वाधिक व्यस्तता कश्मीर में बढ़ी है। 1988 से लेकर अब तक जम्मू कश्मीर में हमारे जवानों की आतंकवादियों के साथ 2,397 मुठभेड़ें हो चुकी हैं, जिनमें 219 आतंकवादी मारे तथा 1589 को गिरफ्तार किया गया। इन अभियानों में बल के जवानों ने 1095 घातक हथियार बरामद किये। मगर इस सारी प्रक्रिया में हमारे 130 बहादुर साथियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा तथा 1238 गंभीर रूप से घायल हुए।

अकेले इसी वर्ष तक जम्मू-कश्मीर में हमारे जवानों की आतंकवादियों के साथ 50 मुठभेड़ें हो चुकी हैं, जिनमें 8 आतंकवादी मारे गए तथा 349 को गिरफ्तार किया गया। इन मुठभेड़ों में हमने 55 घातक हथियार बरामद किये। मगर इस सारी प्रक्रिया में हमारे सात वीर जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 86 गंभीर रूप से घायल हुए।

देश का उत्तरपूर्वी भाग भी आतंकवादी तथा प्रतिविद्रोहात्मक गतिविधियों से ग्रस्त है। इस क्षेत्र में पड़ने वाले सात राज्यों में भी के.रि.पु.बल भारी संख्या में तैनात है तथा यहां भी उसने काफी उपलब्धियां हासिल की हैं। मगर इन उपलब्धियों को हासिल करने के लिए यहां भी भारी संख्या में हमारे जवान वीरगति को प्राप्त हुए हैं। 1988 से अब तक इन राज्यों में हमारे 69 वीर जवान वीरगति को प्राप्त हो चुके हैं, तथा 163 बुरी तरह घायल मगर इस अवधि में आतंकवादियों के साथ हुई 170 मुठभेड़ों में 84 आतंकवादी मारे गए तथा 5529 को गिरफ्तार किया गया तथा 1164 घातक हथियार बरामद किए गए।

अकेले इसी वर्ष तक हमारे जवानों ने इन राज्यों से आतंकवादियों के साथ हुई 34

से अधिक मुठभेड़ों में 2247 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा 28 आतंकवादों मारे गए तथा इन मुठभेड़ों में हमारे 15 जवान मारे गए तथा 49 गंभीर रूप से घायल हुए। इन मुठभेड़ों में हमारे जवानों ने 344 घातक हथियार बरामद किए।

वर्ष 1994 में अन्य उपलब्धियां

आपरेशन सफलताओं में अपनी पहचान बनाते हुए बल ने आपात स्थिति में राहत एवं सहायता प्रदान करने में उपयोगी भूमिका निभाई है। लाटूर में आए भूकम्प तथा सूरत में फैले प्लेग के दौरान आर.ए.एफ. के जवानों द्वारा प्रदान की गई राहत सेवाओं की चर्चा पूरे देश में सम्मान के साथ हो चुकी है। पर्यावरण के क्षेत्र में संवर्धन तथा संरक्षण गत वर्ष उड़ीसा में अंगीकृत किया गया बरबरा वन क्षेत्र एक सर्वथा भिन्न क्षेत्र में हमारी सफलता की कहानी स्वयं कह रहा है। इस एक वर्ष में बरबरा में हमने कई उल्लेखनीय सफलताएं हासिल की हैं। खेल के क्षेत्र में अभियान गंगा सागर के माध्यम से बल ने पानी के रोमांचक खेलों में पर्दापण कर अपने खेल जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत की है।

सम्मान

अपने जन्म से लेकर के.रि.पु.बल ने एक जार्ज क्रास, एक वीर चक्र, दो पद्मश्री, वीरता के लिए तीन किंग्स पुलिस व फायर सर्विस पदक, वीरता के लिए राष्ट्रपति के 81 पुलिस पदक, वीरता के लिए 377 पुलिस पदक, चार विशिष्ट सेवा पदक, एक युद्ध सेवा पदक, पांच सेना पदक, 66 प्रधानमंत्री जीवन रक्षा पदक तथा एक जीवन रक्षा पदक अर्जित किया है। अकेले 1994 में के.रि.पु.बल को 41 शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए।

हमारी प्रतिज्ञा

एक शक्तिशाली समाज में, तेजी से बदल रहे सामाजिक समीकरणों, विभिन्न मानव-जातियों, धर्मों व भाषाई समूहों की बढ़ती आकांक्षाओं के कारण आने वाले समय में देश व के.रि.पु. बल की परीक्षा लेने के लिए बाहरी शक्तियों द्वारा अस्थिरता पैदा करने की साजिशें चलती रहेंगी। अपने “सेवा व भक्ति” के उद्देश्य को ऊंचा रखते हुए, के.रि.पु.बल प्रतिज्ञा करता है कि वह इन चुनौतियों का दृढ़ता के साथ मुकाबला करेगा तथा “राष्ट्र के शांति रक्षक” के नाम को बनाए रखेगा।

बरबरा वन

के.रि.पु. बल के पर्यावरण प्रेम का प्रतीक



बरबरा वन क्षेत्र में तैनात बल के जवान व अधिकारी स्थानीय नागरिकों के साथ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा अंगीकृत किये गए बरबरा वन क्षेत्र में 41 बटालियन की “ई” कम्पनी पर्यावरण सुरक्षा तथा लकड़ी की तस्करी व अवैध शिकार पर काबू पाने के लिए तैनात है। बल के जवानों ने अपनी तैनाती की इस अल्प अवधि के दौरान ही स्थानीय लोगों तथा प्रशासन के बीच में काफी ख्याति अर्जित कर ली है। वन विभाग के अधिकारियों के साथ उनका अच्छा तालमेल है। खुर्दा जिले के क्षेत्रीय वन अधिकारियों के अनुसार के.रि.पु. बल की तैनाती के बाद से इस क्षेत्र से टीक और साल की लकड़ी की तस्करी बिल्कुल समाप्त हो गई है। इस वन क्षेत्र में बल के जवानों की गश्त का इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि वे ग्रामीण जो पहले तस्करों को कीमती लकड़ी की तस्करी में मदद देते थे, अब वन अधिकारियों के पास आकर अपने पिछले क्रियाकलापों के लिए न केवल माफी मांग रहे हैं, अपितु उन्हें अपना पूरा सहयोग देने का वादा भी कर रहे हैं। हमारे गश्ती दलों ने तस्करों के कई ठिकानों पर छापे मार कर भारी मात्रा में अवैध रूप से छिपाई गई कीमती लकड़ी को बरामद किया है। अकेले फरवरी, 94 माह में ही हमारे जवानों ने 10 लाख रूपये की अवैध टीक की लकड़ी बरामद की जबकि मार्च के महीने में बरामद लकड़ी की कीमत 7 लाख रूपये है।

बल के जवानों के सहयोग से वन विभाग ने 35 वाहनों को भी अपने कब्जे में

लिया। ये वो वाहन थे जिन्हें विशेष तौर पर जंगल को लकड़ी बाहर ले जाने के लिए तैयार किया गया था। इसके अतिरिक्त बरबरा से भुवनेश्वर तक अवैध रूप से लकड़ी को ढोने वाले 7 ट्रकों को भी वन विभाग ने अपने कब्जे में ले लिया है। इन सभी ट्रकों के पास राष्ट्रीय परमिट थे।

बरबरा वन क्षेत्र में बल के जवानों द्वारा किये जा रहे इस कार्य की सर्वत्र व्यापक प्रशंसा हुई है तथा कई राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने इस विषय पर लम्बे-लम्बे लेख तथा टिप्पणियां प्रकाशित की हैं।

महानिरीक्षक पूर्वी सेक्टर ने भी क्षेत्र में कार्य कर रहे कार्मिकों को किसी भी प्रकार के विवाद से बचाने के लिए ईंधन के रूप में लकड़ी के इस्तेमाल पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया है। साथ ही ये कार्मिक किसी अन्य के अनुरोध पर भी न तो सामान्य रूप से और न परमिट पर लकड़ी खरीद सकेंगे।

पूर्ति

के.रि.पु.बल परिवार कल्याण बोर्ड का एक महत्वाकांक्षी उपक्रम

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश की आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था में लगा देश का सबसे बड़ा तथा सबसे पुराना अर्द्ध-सैनिक पुलिस बल है। इस बल में अनेक कल्याणकारी योजनाएं सरकार एवं कर्मचारियों के सहयोग से चलाई जा रही हैं। जिनमें प्रमुख हैं :-केन्द्रीय कल्याण निधि, जोखिम निधि, बटालियन कल्याण निधि तथा शिक्षा निधि आदि। सी.आर.पी.एफ.पब्लिक स्कूल, प्रौद्योगिक संस्थान तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र भी इसी दिशा में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

पूरे देश भर में फैले के.रि.पु.बल के 30 ग्रुप केन्द्रों में के.रि.पु.बल के परिवार कल्याण केन्द्र काम रहे हैं। इन केन्द्रों में बल के जवानों की पत्नियों तथा लड़कियों को सिलाई, कढ़ाई, हस्तकरघा, अचार-मुरब्बा तथा पापड़ आदि दैनिक उपयोग के वस्तुएं बनाना सिखाया जाता है। जिससे न केवल उनके लिए आय का एक अतिरिक्त स्रोत खुलता है अपितु उनकी रचनात्मक प्रतिभा को एक सही दिशा भी मिलती है।

कल्याण कार्यक्रमों की इसी श्रृंखला में गत वर्ष नवम्बर में नई दिल्ली आर.के.पुरम में के.रि.पु.बल परिवार कल्याण बोर्ड द्वारा स्थापित किया गया शॉपिंग काम्पलेक्स “पूर्ति” एक ओर कदम है। पूर्ति का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री श्रीमति मारग्रेट अल्वा ने बल से जुड़ी सभी महिलाओं का आह्वान करते हुए कहा था कि इस तरह के प्रयास में महिलाएं जितना अधिक भाग लेगी, फोर्स का मानवीय आधार उतना ही अधिक उभर कर सामने आएगा। पूर्ति की स्थापना के एक वर्ष बाद हम पाते हैं कि पूर्ति सभी आंकाक्षाओं पर खरा उतरा है। किन्तु पूर्ति के विषय में बात

करते हुए परिवार कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती इंदु त्रिपाठी कहती हैं कि पूर्ति को यह सफलता हमारी मंजिल नहीं है अपितु हमारे सामने अब इससे भी बड़ा और महत्वाकांक्षी-अपने विस्तार तथा जरूरतमंदों को अपनी सेवाओं एवं सुविधाओं को सहजता से उपलब्ध कराने का कार्यक्रम है।

पिछले एक साल में पूर्ति ने नई दिल्ली आर.के.पुरम के निवासियों तथा समस्त के.रि.पु.बल परिवार के बीच अपनी एक पहचान बनाई है। इस वर्ष पूर्ति बल की वर्षगांठ के साथ-साथ अपना प्रथम जन्मदिवस भी मना रहा है। इस मौके पर पूर्ति दिल्ली में एक हस्तशिल्प कला प्रदर्शनी का आयोजन कर रहा है, जिसमें पूरे देश में फैले हमारे सेक्टरों में कार्यरत कल्याण केंद्रों के स्टाल लगाए जाएंगे। साथ ही पूर्ति अपनी विस्तार योजना के अन्तर्गत “तृप्ति” नाम से एक नई वेट कैटीन भी खोलने जा रहा है।

के.रि.पु.बल में कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए परिवार कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती इंदु त्रिपाठी बताती हैं कि इस वर्ष के.रि.पु.बल ग्रुप केन्द्रों में चल रहे सभी मांटेसरी स्कूलों में अल्पाहार प्रदान करने की योजना प्रारंभ की गई है, साथ ही सभी ग्रुप केन्द्रों को निर्देश दिया गया है कि वे परिवार कल्याण केन्द्रों को ओर अधिक सिलाई का काम दें। रामपुर ग्रुप केन्द्र में इसी वर्ष एक गैस एजेंसी की स्थापना की गई तथा दिल्ली स्थित के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल के छात्रावास के एक खंड का उद्घाटन किया गया। भविष्य की योजनाओं के विषय में बताती हुई वह कहती हैं कि हम सी.आर.पी.एफ. तथा सरकार के सहयोग से आतंकवादी गतिविधियों में शहीद हो चुके जवानों की विधवाओं, विकलांग हो चुके जवानों तथा विकलांग बच्चों के पुनर्वास के लिए शीघ्र ही कुछ योजनाएं शुरू करना चाहते हैं।



परिवार कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती इंदु त्रिपाठी बोर्ड की अन्य पदाधिकारियों तथा पूर्ति के कर्मचारियों के साथ।

वर्ष 1994 के पदक विजेता

शौर्यवीरता के पुलिस पदक

द्वितीय कमान अधिकारी पी.आर.एन.नायर (2 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट डी.कानन (2 बटा.), कांस्टेबल महाराज बक्श सिंह (2 बटा.), कांस्टेबल शेख उस्मान (81 बटा.) सहायक कमान्डेन्ट एच.आर.चौधरी (33 बटा.) सहायक कमान्डेन्ट विवेक वेद (33 बटा.), इंस्पेक्टर सोम प्रकाश (33 बटा.), इंस्पेक्टर देवेन्द्र प्रसाद सिंह (33 बटा.), हैड कांस्टेबल महावीर सिंह (33 बटा.), नायक सुभाष चंदर (33 बटा.), लांस नायक सुरेन्द्र सिंह (75 बटा.), कांस्टेबल प्रीतमदास (73 बटा.), हैड कांस्टेबल धन्ना सिंह (70 बटा.), नायक महेश्वर सिंह (75 बटा.) मरणोपरांत, कांस्टेबल एम.ए.देशमुख मरणोपरांत (73 बटा.), उप निरीक्षक हरज्ञान सिंह (33 बटा.), कांस्टेबल हरिदास लिंगे (73 बटा.), उप कमान्डेन्ट रणपाल सिंह (47 बटा.), कांस्टेबल ओम प्रकाश (47 बटा.), उप कमान्डेन्ट वी.पी.सिंह (91 बटा.), नायक रामावतार सिंह (91 बटा.), हैड कांस्टेबल सुरेश सिंह (91 बटा.), कांस्टेबल प्रगट सिंह (91 बटा.), कमान्डेन्ट वी.डी.टोकस (47 बटा.), उप कमान्डेन्ट टी.एस. नेगी (47 बटा.), कांस्टेबल श्री भगवान (47 बटा.), कांस्टेबल संजीव कुमार (47 बटा.), नायक रघुवीर सिंह मरणोपरांत (36 बटा.), कांस्टेबल पूसाराम (93 बटा.), लांस नायक प्रकाश मरणोपरांत (36 बटा.), हैड कांस्टेबल एम.बोदरा (36 बटा.)।

गणतंत्र दिवस'94 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक

श्री जी.पी.दूबे
महानिरीक्षक
(संभरण एवं प्रशिक्षण)

पी.एन.रामाकृष्णन
उप महानिरीक्षक (प्रधानाचार्य)
सी.टी.सी।

पुरुषोत्तम कुमार
कमान्डेन्ट
4 सिगनल बटालियन

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

उप महानिरीक्षक ओम प्रकाश सिंह मलिक (इलाहाबाद), अपर उप महानिरीक्षक महेंद्र प्रसाद (ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर), कमान्डेन्ट एस.आर.यादव (54 बटा.), कमान्डेन्ट अरूण कुमार सिंह (उप महानिरीक्षक भोपाल कार्यालय), कमान्डेन्ट विश्व देव टोकस

(सहायक निदेशक-निर्माण), कमान्डेन्ट अरूण छिब्बर (सहायक निदेशक विोधे), डिप्टी कमान्डेन्ट सुखविंदर सिंह बल (128 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट के.एस.नायर (7 बटा.), डा. जी.सी.सत्यथी (स्टेशन अस्पताल-नीमच), सूबेदार मेजर नर सिंह बिष्ट (67 बटा.), सूबेदार मेजर (स्टेनो) के.के.नारायण मेनन (महानिदेशालय), इंस्पेक्टर बी.स्वामीनाथन (सी.टी.सी. 2), इंस्पेक्टर (स्टेनो) पी.पी.बक्शी (महानिदेशालय), इंस्पेक्टर यासीन खान (82 बटा.), तब-इंस्पेक्टर मुंशी राम (86 बटा.), सब इंस्पेक्टर आर.डी.पंत (ग्रुप केन्द्र इम्फाल), सब-इंस्पेक्टर के.शशिधरन (5 सिगनल बटा.), हैड कांस्टेबल बी.श्रीनिवासगम (32 बटा.), हैड कांस्टेबल एस.ए.वियाकुलम (ग्रुप केन्द्र आवड़ी), हैड कांस्टेबल दया राम (52 बटा.), हैड कांस्टेबल रघुनाथ सिंह (ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट), नायक निजामुद्दीन (41 बटा.), लांस नायक (बैड) बरफा राम (ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम), कांस्टेबल के.आर.नायर (ग्रुप केन्द्र-2 अजमेर), कांस्टेबल खादिम हुसैन (आर.टी.सी.4) तथा सफाई कर्मचारी पूछा राम (ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट)।

स्वतंत्रता दिवस'94 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के पुलिस पदक

एस.के.महेन्द्र
उप महानिरीक्षक
(श्रीनगर)

वाई.एन. कश्यप
अपर उप महानिरीक्षक
(ग्रुप केन्द्र आवड़ी)

आर.एस.गिल
अपर उप महानिरीक्षक
(उत्तर पश्चिम जोन)

एम.एम. खान
द्वितीय कमान अधिकारी
(ग्रुप केन्द्र हैदराबाद)

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

उप निदेशक (स्थापना) डा.श्रीमति दीपा मेहता, (महानिदेशालय), अपर उप महानिरीक्षक बी.एस.रेखी (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. श्रीमति पी.कौशल (बेस अस्पताल दिल्ली), सहायक निदेशक ए.एस.राठौर (आंतरिक सुरक्षा अकादमी), कमान्डेन्ट पी.के.शर्मा (9 बटा.), कमान्डेन्ट एन.एन.मिश्रा (1 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी प्रताप सिंह (ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर), उप कमान्डेन्ट छेदी सिंह (62 बटा.), उप कमान्डेन्ट एम.एस.नेगी (महानिदेशालय), सहायक कमान्डेन्ट गुरनाम सिंह (31 बटा.), सहायक कमान्डेन्ट रामाशंकर राय (99 बटा.), सूबेदार

मेजर वी.कुंजू (91 बटा.), इंस्पेक्टर राजेन्द्र सिंह (ग्रुप केन्द्र गांधी नगर), इंस्पेक्टर/रेडियो आपरेटर ओ.पी.पाणीकर (प्रथम बेतार बटा.), सूबेदार मेजर/पी.एस.पी.एस.नाम्बीसन (उत्तर पश्चिम जोन), इंस्पेक्टर/एम.रमेश चन्द्र दुदपुरी (स्पेशल सेक्टर कार्यालय), इंस्पेक्टर/एम.एम.के. नागाप्पन पिल्ले (महानिदेशालय), उप निरीक्षक सुखदेव सिंह (88 बटा.), उप निरीक्षक अजीत सिंह (107 बटा. आर.ए.एफ.), हैड कांस्टेबल मुहम्मद रफीक (10 बटा.), हैड कांस्टेबल पी.एस.नायर (13 बटा.) हैड कांस्टेबल जसोर सिंह (49 बटा.) हैड कांस्टेबल जय प्रकाश यादव (सिगनल ग्रुप केन्द्र), नायक/चालक राजेन्द्र सिंह (89 बटा.), कांस्टेबल रामसिंह (ग्रुप केन्द्र अजमेर), सफाई कर्मचारी भाष्करननायर (ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम), कुक करम सिंह (108 आर.ए.एफ.).

उत्तर पश्चिम जोन

उत्तर-पश्चिम जोन की जालंधर रेंज से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार नव स्वीकृत जालंधर ग्रुप केन्द्र में निर्माण कार्य पूर्ण प्रगति पर है। जालंधर, कपूरथला तथा होशियार पुर जिले में तैनात बल की सभी बटालियनें उप महानिरीक्षक जालंधर के परिचालनिक नियंत्रण में आती हैं। इसके अतिरिक्त 127 तथा 128 बटालियन का प्रशासनिक नियंत्रण भी उप महानिरीक्षक जालंधर के ही पास है। ग्रुप केन्द्र जालंधर के निर्माण के साथ ही इससे संबद्ध 96 तथा 98 बटालियनें भी उपमहानिरीक्षक जालंधर के ही प्रशासनिक नियंत्रण में आ गई है।

ग्रुप केन्द्र जालंधर में प्रयोगात्मक स्तर पर एक श्वान दस्ते का गठन कर लिया गया है। जिसके लिए चार हिमालयन शीप श्वान प्राप्त कर उनका प्रशिक्षण प्रारंभ हो गया है।

पर्यावरण सुधार के लिए इस रेंज के प्रशासनिक तथा रिचालनिक नियंत्रण में आने वाली यूनिटों में 5,000 से भी अधिक वृक्ष लगाए गए हैं।

बल के कार्मिकों के कल्याण के लिए सी.एस.डी.कैंटीन की सुविधा के साथ-साथ अन्य कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं।

परिचालनिक क्षेत्र में भी इस वर्ष इस रेंज ने विशेष सफलताएं प्राप्त की हैं। हालांकि इस रेंज में बल के जवानों की सजग चौकसी तथा निगरानी के कारण अपेक्षाकृत शांति रही, मगर फिर भी छुटपुट रूप से तथा एक आध रूप से हुई गंभीर घटना में बल के कार्मिकों ने एक ए.के.47 रायफल तथा एक पिस्तौल तथा उनके कारतूस बरामद किए। तथा इन जवानों के साथ अलग-अलग स्थानों पर हुई तीन मुठभेड़ों में तीन आतंकवादी मारे गए।

इस रेंज के अन्तर्गत आने वाली 128 बटालियन ने इस वर्ष 738 रंगरूटों को प्रशिक्षण दिया तथा इन रंगरूटों की सत्यापन परेड 18 जुलाई, 94 को संपन्न हुई।

खेल के क्षेत्र में भी इस रेंज के खिलाड़ियों ने उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त कर

इंटर सेक्टर एथलोटिक मोट को चौपेयनाशेप जीत ली। इसके आतिरेक्त उस रेंज को टीम ने हाकी प्रतियोगिता का खिताब भी जीता। बास्केटबाल तथा क्रास कंट्री में भी इस रेंज के खिलाड़ियों का प्रदर्शन अच्छा रहा।

स्पेशल सेक्टर

स्पेशल सेक्टर के अंतर्गत आने वाले नीमच केन्द्र में इस वर्ष 27 जुलाई, 1994 को 55वां स्थापना दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रस्तुत एक भव्य परेड की सलामी महानिदेशक श्री एस.वी.एम. त्रिपाठी ने ली। इसी अवसर पर सीधे भर्ती राजपत्रित अधिकारियों के 24वें बैच के अधिकारियों की दीक्षांत परेड भी सम्पन्न हुई।

ग्रुप केन्द्र नीमच के परिवार कल्याण केन्द्र को वर्ष 1993 का सर्वश्रेष्ठ परिवार कल्याण केन्द्र घोषित किया गया। ज्ञातव्य है कि ग्रुप केन्द्र नीमच का यह परिवार कल्याण केन्द्र 1991 से लगातार यह सम्मान प्राप्त कर रहा है।

इसी सेक्टर की 1 बटालियन की एक कम्पनी ने जम्मू शहर में लगभग 54 लाख रुपये की लागत के तस्करी के स्वर्ण बिस्कुट बरामद किए। अन्य परिचालनिक उपलब्धियों के अतिरिक्त दो नवीन ग्रुप केन्द्रों की स्थापना इस सेक्टर की एक मुख्य उपलब्धि रही। ग्रुप केन्द्र शिवपुरी तथा भोपाल ने इस वर्ष अपना कार्य प्रारंभ कर दिया।

ग्रुप केन्द्र भोपाल के अधीन के.रि.पु.बल की 75, 80, 89 बटा. तथा ग्रुप केन्द्र शिवपुरी के अधीन 119, 125 एवं 126 बटालियनों को सम्बद्ध किया गया है। यह सभी बटालियनें अपने तैनाती के इलाकों में काफी अच्छा कार्य कर रही हैं। इस सेक्टर की 80 बटालियन जम्मू-कश्मीर में कानून व व्यवस्था बनाए रखने में बहुत सक्रिय भूमिका निभा रही है। 89, 125 एवं 126 बटालियनों की कंपनियों को हाल में ही में कुछ राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के दौरान कानून व व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया था।

पर्यावरण के क्षेत्र में भी इस सेक्टर ने उल्लेखनीय काम किया है। इस सेक्टर की शिवपुरी रेंज ने दस हजार से भी ज्यादा वृक्ष लगाए।

1994 एक झलक

1994 के.रि.पु.बल के लिए कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा। इस वर्ष के.रि.पु.बल ने कई नए कार्य प्रारंभ किए तथा कई क्षेत्रों में

उपलब्धियां हासिल की। प्रस्तुत है 1994 की एक चित्रमय झलक।



अमरनाथ यात्रा के दौरान मार्ग में तैनात बल का एक सिपाही /

अभियान गंगा सागर

अभियान गंगा सागर के माध्यम से के.रि.पु. बल ने इस वर्ष पानी के रोमांचक खेलों में पदार्पण किया /



महानिदेशक श्री एस.बी.एम. त्रिपाठी हरिद्वार में अभियान दल के नेता श्री डी. क्लेमेंट को ध्वज प्रदान करते हुए।



आभेयान दल के सदस्य इलाहाबाद से गुजरते हुए।



के.रि.पु.बल पब्लिक स्कूल में नए छात्रावास भवन का उद्घाटन इस वर्ष की एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।



आतंकवादियों द्वारा लगातार मिल रही धमकियों के कारण इस वर्ष की अमरनाथ यात्रा के लिए संकट पैदा हो गया था, किंतु बल के जवानों की सजग चौकसी व व्यवस्था के कारण यात्रा निर्विघ्न सम्पूर्ण हुयी।

के.रि.पु. बल स्वर्ण कप बास्केटबाल प्रतियोगिता



के.रि.पु.बल ने इस वर्ष दोबारा अखिल भारतीय के.रि.पु.बल स्वर्ण कप बास्केट बाल प्रतियोगिता शुरू की।

इस प्रातयेयोगेता में देश की चोटों की 10 बास्केट बाल टीमों ने भाग लिया। प्रातयेयोगेता का फाइनल मुकाबला जयपुर की उत्पाद एवं सीमा शुल्क टीम ने जीता।



सूरत में प्लेग फैलते ही लोग सूरत छोड़-छोड़ कर भागने लगे। ऐसे में स्थानीय नागरिकों की सहायता के लिए आर.ए.एफ. के जवान जान हथेली पर लेकर मैदान में कूद पड़े। प्लेग पर शीघ्र काबू पाने में आर.ए.एफ. के जवानों का बहुत बड़ा योगदान रहा। आर.ए.एफ. के जवान सूरत के एक अस्पताल के बाहर।



कुछ राज्यों में विधान सभा के चुनावों की घोषणा से के.रि.पु.बल की व्यस्तता अचानक बढ़ गई। किंतु बल के जवानों की चौकसी से चुनाव निर्विघ्न सम्पन्न हुए। बल की 40 बटालियन के जवान कर्नाटक के एक मतदान केंद्र पर निगरानी करते हुए।

खेल एवं प्रशिक्षण

सफलता एवं प्रगति के नवीन सोपानो पर

प्रशिक्षण के क्षेत्र में इस वर्ष तैयार की गई पाठ्यक्रम योजना (लेसन प्लान) एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस पाठ्यक्रम योजना को सरल हिंदी में तैयार किया गया है, तथा समस्त रंगरूट प्रशिक्षण केंद्रों, बटालियनों तथा अन्य संबंधित इकाइयों को भेज दिया गया है।

मुठखेड़ महाराष्ट्र में स्वीकृत केंद्रीय प्रशिक्षण कालिज ने इस वर्ष अपना कार्य शुरू कर दिया। महानिरीक्षक दक्षिणी सेक्टर के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाले इस प्रशिक्षण कालिज में समय प्रधानाचार्य का कार्यभार अवर उप महानिरीक्षक पी.सी.जोशी देख रहे हैं। नांदेड में इस कालिज परिसर के लिए भूमि का अधिग्रहण भी के.रि.पु.बल ने कर लिया है।

दोसा राजस्थान में सरकार के पास के.रि.पु.बल का पांचवां रंगरूट प्रशिक्षण केंद्र खोलने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

बल के सदस्यों की संवेदनशीलता को बनाये रखने तथा मानव अधिकारों के प्राप्ति उन्हें जागरूक करने के लिए तीन दिन के एक कैप्सूल कोर्स को तैयार कर सभी सेक्टरों एवं जोन को भेजा गया है। यह कोर्स सभी यूनिटों में नियमित रूप से चलाया जा रहा है तथा अब तक 50,000 से ज्यादा कार्मिकों को यह प्रशिक्षण दिया जा चुका है। आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंटआबू में भी राजपत्रित अधिकारियों के लिए पांच दिन का मानव अधिकारों से संबंधित एक कोर्स शुरू किया गया है।

खेल

अंतराष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष बल के तैराक इंस्पेक्टर राजाराम ने नई दिल्ली में हुई एशिया पेसिफिक ऐज ग्रुप चैंपियनशिप में भाग लेकर तीन स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीता। इस प्रतियोगिता में सब इंस्पेक्टर कैलाशनाथ ने भी भाग लिया।

सब इंस्पेक्टर परमजीत सिंह ने हिरोशिमा में हुए एशियाई खेलों में भारत की टीम की ओर से भाग लिया।

इंस्पेक्टर तिलक थापा ने मिंस्क बेलारूस में हुए मिस्क-94 मुकाबलों में भाग लिया तथा राष्ट्रमंडल जूडो प्रतियोगिता माल्टा-94 में भाग लेकर एक रजत पदक जीता। राष्ट्रीय स्तर पर हमारे कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया। जूडो में हमारे खिलाड़ियों ने एक स्वर्ण, एक रजत तथा पांच कांस्य पदक जीते। तैराकी में हमने तीन रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। कुश्ती प्रतियोगिताओं में हमें दो रजत पदक प्राप्त हुए। दौड़ कूद मुकाबलों में इंस्पेक्टर प्रेमजीत ने पोल वाल्ट प्रतियोगिता का स्वर्ण जीता। जिमनास्टिक में चंदू कोफले वाल्टिंग हाई मुकाबले में रजत हासिल करने में सफल रहे।

राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिताओं में भी हमें पांच रजत तथा चार कांस्य पदक प्राप्त हुए।

अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिताओं की चैंपियनशिप इस वर्ष के.रि.पु.बल ने 10 स्वर्ण, 10 रजत तथा चार कांस्य पदकों के साथ जीत ली।

इस वर्ष सहारनपुर में हुई 19वीं ओपन नेशनल क्रास कंटी चैंपियनशिप इस वर्ष भारतीय पुलिस टीम ने 10 वर्ष के अंतराल में जीत ली। भारतीय पुलिस टीम में दो घावक के.रि.पु.बल के, दो पंजाब पुलिस के तथा पांच सीमा सुरक्षा बल के थे। इस दौड़ में के.रि.पु.बल के नायक राजेश कुमार ने स्वर्ण हासिल किया।



इंस्पेक्टर राजाराम-एशिया पैसिफिक ऐज ग्रुप प्रतियोगिता में तीन स्वर्ण /

रेपिड एक्शन फोर्स

संवेदनशील परिस्थितियों के लिए प्रशिक्षित एक विशिष्ट
बल

– ए.ए. सिद्दीकी



प्लेग ग्रस्त सूरत के एक अस्पताल में तैनात आर.ए.एफ के जवान

कुछ समय से सांप्रदायिक दंगों की बढ़ती हुई घटनाएं तथा इनमें शिकार हुए पीड़ितों की भारी संख्या, भारत सरकार को बार-बार झकझोरती रही थी। हर सांप्रदायिक दंगा एक ऐसी मानवीय वेदना है जो अपने पीछे यातनाओं और दुःखों का सिलसिला छोड़ जाती है जिन्हें दूर करने में राज्य पुलिस बल से विश्वास उठ चुका था। अतः भारत सरकार ने एक ऐसी खास फोर्स के गठन का निर्णय लिया, जो मुख्यतः सांप्रदायिक दंगों या दंगों जैसे हालातों पर काबू पा सके। चूंकि सांप्रदायिक दंगों से निपटने के लिए के.रि.पु.बल को जब भी पुकारा गया, इमेशा वह कसौटी पर खरी उतरी, अतः ऐसी फोर्स खड़ी करने का दायित्व के.रि.पु.बल को ही सौंपा गया। के.रि.पु.बल परंपरानुसार बहु-भाषाओं, बहु-धर्मों व बहुक्षेत्रों के प्रति हमेशा ही निरपेक्ष रही और यही नई खड़ी होने वाली फोर्स की एक मूल आवश्यकता थी। परिणामस्वरूप दिसम्बर 1991 के दौरान भारत सरकार ने के.रि.पु.बल की 10 बटालियनों को द्रुत कार्य बल के रूप में परिवर्तित करने का आदेश दिया।

इस नई फोर्स के निर्दिष्ट लक्ष्यों को हासिल करने के उद्देश्य से अब के.रि.पु.बल के अंदर से ही ऐसे नौजवानों का चयन करना था जो सामान्यतः युवा हों और उनका सेवा-रिकार्ड अच्छा रहा हो, जिनमें तीव्र प्रतिक्रिया करने का मुद्दा हो तथा बिल्कुल निष्पक्ष होकर नाजुक स्थिति को सम्भालने में परिपक्व हों। अतः इस उद्देश्य के लिए जवानों की सामर्थ्यता जानने हेतु, उनकी मनोवैज्ञानिक परीक्षा ली गई। द्रुत कार्य बल को एक ऐसा स्वरूप दिया जाना था जिसमें अल्पसंख्यकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो तथा विविधता में एकता झलकती हो।

सबसे पहले द्रुत कार्य बल के लिए चयनित वरिष्ठ, मध्यम और छोटे स्तर के

आधिकारियों को आई.जी.एन.ओ.यू. तथा एन.आई.सी.एफ.एस. जैसी संस्थाओं में नियोजित अति संवेदनशील प्रशिक्षण (Planned Sensitivity Traininig) दिलाया गया । पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षकों को सिविल डिफेंस अग्नि शमन, प्राथमिक चिकित्सा, बचाव और राहत के कार्यों में विशिष्ट प्रशिक्षण देने के लिए अन्य संस्थाओं की सहायता भी ली गई । स्थानीय अग्नि सेवा विभाग सेंट जॉन एम्बुलेंस तथा अन्य स्वैच्छिक संगठनों की सेवाएँ भी ली गई थीं ।

परिवर्तित प्रशिक्षण की प्रक्रिया से गुजरने के बाद, द्रुत कार्य बल की 5 बटालियनें अक्टूबर 1992 में अभियानों में लगाने के योग्य बन गईं तथा अन्य 5 बटालियनें द्रुत कार्य बल की पद्धति पर अप्रैल 1994 में परिवर्तित हो गईं । अब इन सभी 10 बटालियनों को उन अलग-अलग स्थानों पर स्थित किया गया है । जिन्हें सांप्रदायिकता की दृष्टि से संवेदनशील माना जाता है तथा एक बटालियन तैनाती आदि के उद्देश्य के लिए अपने चारों तरफ के 400 कि.मी. के क्षेत्र को सुरक्षा प्रदान करती है ।

द्रुत कार्य बल की भूमिकाओं से जुड़ी कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :—

सरकार ने यह आशा व्यक्त की है कि जब भी तैनाती के लिए इस बल को बुलाया जाए इसका “प्रतिक्रिया समय शून्य” होना चाहिए ।

घटना स्थल पर द्रुतगति से पहुँचने पर बल को यह सुनिश्चित करना होता है कि इसके कार्मिक पूर्ण निष्पक्ष तथा उद्देश्यपरक ढंग से कार्यवाही करते हैं ।

सांप्रदायिक स्थितियों से दक्षतापूर्वक निपटने और दंगा-पीड़ित व्यक्तियों का दर्द कम करने के लिए इस बल के सदस्यों में विशेष कौशल एवं निपुणता होनी चाहिए ।

संचालन में तीव्रता, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण तथा कार्मिकों द्वारा हासिल किए गए कौशल का उचित प्रयोग तभी किया जा सकता है जब ये कार्मिक पॉलीकार्बोनेट लाठी, शॉक-बैटन, अश्रु गैस की आधुनिक वस्तुओं आदि जैसे दंगारोधी विशेष उपकरणों से सज्जित हों । दंगों से तथा दंगा जैसी स्थितियों से निपटने के लिए द्रुकाब बटालियनों के लिए अतिरिक्त पैरामैडिकल स्टाफ के साथ-साथ पानी की बोछार करने वाले अग्नि-शमन उपकरणों व एम्बुलेंस की व्यवस्था भी की गई है ।

दंगों के दौरान महिला आन्दोलनकारियों से निपटने तथा घरों की तलाशी लेने जैसे अभियानों में बल की प्रतिष्ठा को कायम रखने के उद्देश्य से प्रत्येक अपनी द्रुकाब बटालियन में एक महिला प्लाटून रखी गई है ।



अपनी दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर दंगों पर काबू पाने के अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए बल के सदस्य

द्रुकाब बटालियनों को उनके क्षेत्राधिकार में तैनाती के लिए 25 से 30 संवेदनशील तथा अति संवेदनशील जिलों का दायित्व सौंपा गया है। द्रुकाब बटालियनें इन संवेदनशील क्षेत्रों में कोई भी घटना होने से पहले उसके बारे में आसूचना एकत्रित करने तथा अपने क्षेत्राधिकार में मित्रता एवं सहयोग का वातावरण बनाने के लिए विस्तृत पूर्वाभ्यास करती रही हैं।

देश की कानून एवं व्यवस्था के क्षेत्र में द्रुकाब का प्रयोग एक नया अनुभव रहा है। इस बल को सौंपी गई भूमिकाएं नई हैं तथा इनका पहले कभी परीक्षण नहीं हुआ है। इन कर्तव्यों को निभाने के लिए आवश्यक बहुत से पुर्जे तथा उपस्कर अभी तक उपलब्ध नहीं हैं। द्रुकाब कार्मिकों को उनको सौंपी गई भूमिकाओं में प्रशिक्षित करने की दक्षता केन्द्रीय और राज्य पुलिस संगठनों के प्रशिक्षण संस्थानों के पास नहीं है। अतः इन सबके कारण द्रुकाब सेक्टर को काफी आरम्भिक परिश्रम करना पड़ा। उपर्युक्त बाधाओं के बावजूद भी द्रुकाब सेक्टर अपनी संपूर्ण 10 बटालियनों के साथ खड़ा हुआ और पूरी तरह से अभियानों के योग्य है।

अपने प्रादुर्भाव की अल्पावधि के दौरान, जहाँ कहीं भी इसे तैनात किया गया है इसने अपने उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए प्रशंसा अर्जित की है।

जहाँ तक प्रशिक्षण उपकरणों व लाजिस्टिक का संबंध है, द्रुकाब अब पूरी तरह संगठित होने की स्थिति में है। विभिन्न स्थानों पर भूमि का अधिग्रहण, बटा. हैड काटरों का निर्माण तथा आधारभूत सुविधाएं प्रदान करने का कार्य चल रहा है। आशा

को जाती है कि आगामी एक वर्ष के भीतर बल में इतनी शक्ति और पारंपरिकता आ जाएगी जिससे वह सौंपी गई भूमिकाओं को और अच्छी तरह निभा सकेगा ।

अमरनाथ यात्रा

याद रहेगा सी.आर.पी.एफ. का सहयोग



चंदन बाड़ी कैम्प बल के जवानों की निगरानी में

हरकत उल अंसार सहित कई उग्रवादी संगठनों की धमकी के बावजूद वार्षिकी अमरनाथ यात्रा शांतिपूर्वक संपन्न गई ।

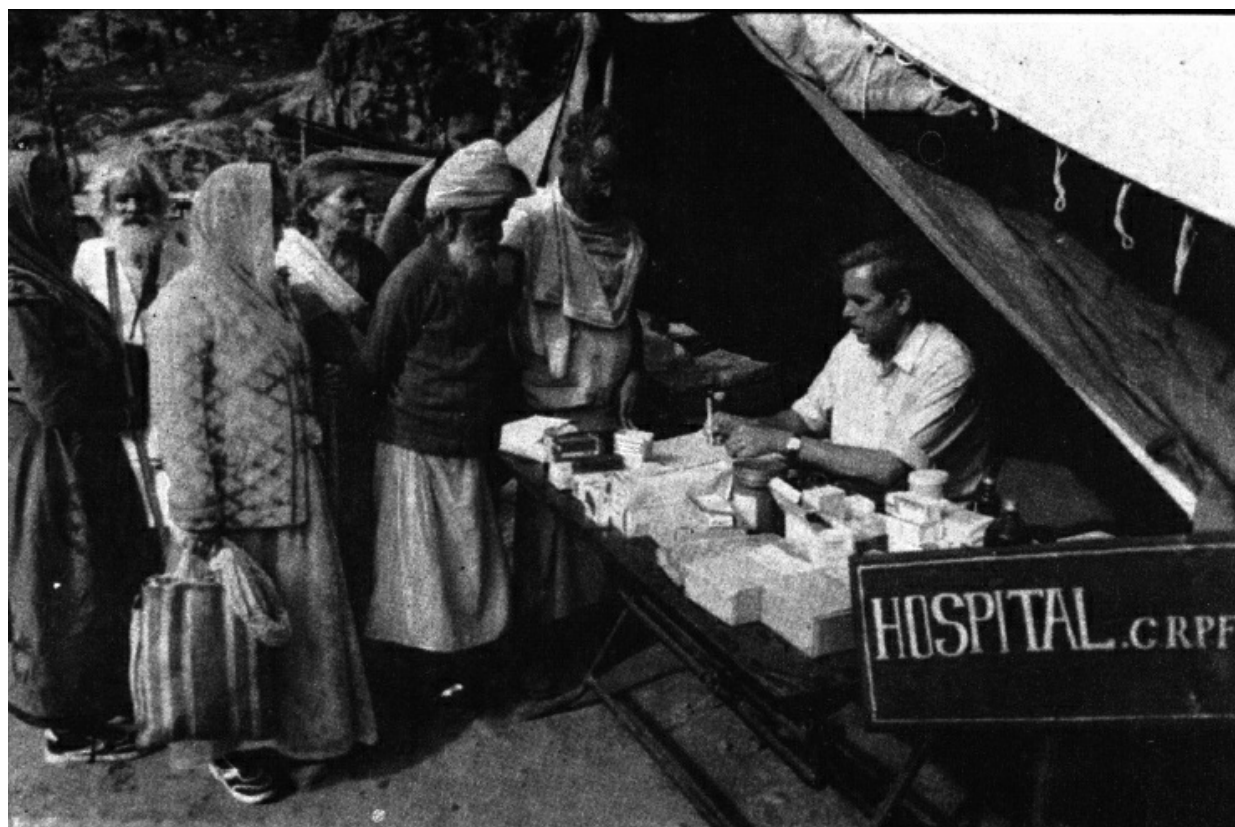
उग्रवादी संगठनों की धमकी के कारण अमरनाथ यात्रा में इस बार तीर्थयात्रियों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में कम अवश्य रही लेकिन सेना, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा बी.एस.एफ.की निरंतर चौकसी और प्रबन्ध ने आतंकवादियों के मसूबों पर पानी फेर दिया ।

इस यात्रा में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस द्वारा तीर्थयात्रियों की सुरक्षा तथा अन्य प्रबन्धों के बारे में जानकारी देने के लिए दिल्ली से पत्रकारों तथा दूरदर्शन टीम के एक छोटे से दल को दिल्ली से चंदनबाड़ी ले जाया गया। इन पत्रकारों से बात करते हुए अपर महानिदेशक श्री डी.डी.गुप्ता ने बताया कि आतंकवादियों की धमकियों के कारण

इस वर्ष केवल 40 हजार तीर्थयात्री ही अमरनाथ यात्रा पा आये, जबकि पिछले वर्ष इनकी संख्या लगभग एक लाख बीस हजार थी।

उन्होंने बताया कि उग्रवादियों की धमकी तथा स्थानीय लोगों के असहयोग को दृष्टि में रखते हुए तीर्थयात्रियों को जम्मू से चंदनबाड़ी तक सुरक्षित ले जाने तथा उनके ठहरने व खाने-पीने की समुचित व्यवस्था का दायित्व के.रि.पु.बल को सौंपा गया।

श्री गुप्ता ने बताया कि एक समय स्थिति ये थी कि इस यात्रा का प्रारम्भ होना ही संदिग्ध लग रहा था। यह लगने लगा था कि लोग यहाँ आएंगे ही नहीं। पहलगाम तथा चंदनबाड़ी में तीर्थयात्रियों को ठहराने के लिए के.रि.पु. बल को भी श्रीनगर, जम्मू तथा अन्य स्थानों से बड़ी संख्या में टैन्ट मंगवाने पड़े। यहां तक कि उनके लिए कम्बल, भोजन आदि का प्रबंध भी बल को करना पड़ा। श्री गुप्ता ने बताया कि तीर्थ यात्रियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बल ने चंदन बाड़ी में एक अस्थायी अस्पताल की व्यवस्था की, जिसमें हजारों तीर्थयात्रियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गई, बीमारों की संख्या इतनी अधिक थी कि कुछ ही दिनों में अस्पताल की दवाईयां समाप्त होने लगी, तब उन्हें अन्य स्थानों से दवाईयों की व्यवस्था करनी पड़ी।



तीर्थ यात्रियों को बल द्वारा उपलब्ध चिकित्सा सुविधा

चंदनबाड़ी में तम्बुओं में अपने चार वर्षीय नाती के साथ ठहरी देवरिया की अस्सी वर्षीय लालमति का कहना था कि मैं काफिले के साथ पहलगाम तक तो आ गई लेकिन अगर सी.आर.पी.एफ. के जवान सहयोग न देते तो मैं यहां तक हरगिज नहीं

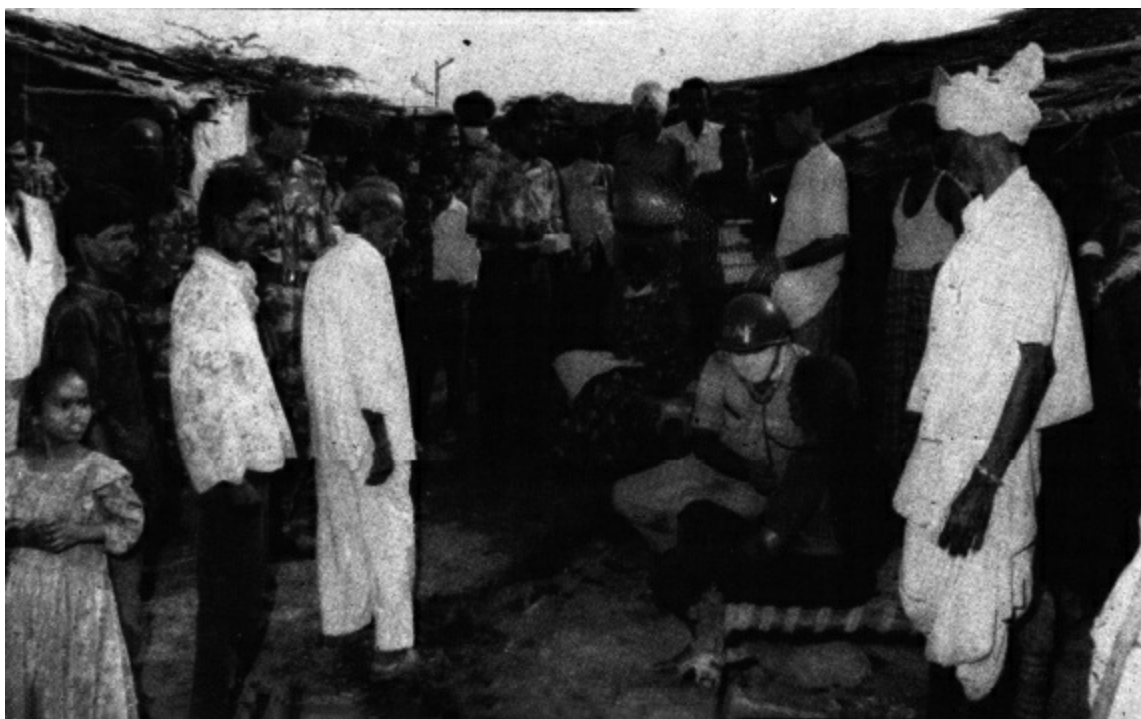
पहुंच सकतों थीं।

करीब 250 तम्बुओं में विश्राम कर रहे तीर्थ यात्रियों में से कई ने अमरनाथ यात्रा पर उग्रवादियों द्वारा लगाई गई रोक का जिक्र करते हुए कहा कि धमकी का डर तो था, लेकिन यहां आने पर उन्हें डरने वाली कोई बात नजर नहीं आ रही, क्योंकि के.रि.पु.बल तथा अन्य सुरक्षा बलों के प्रबन्ध इतने जबरदस्त हैं कि आतंकवादी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

यात्रियों के खाने-पीने की व्यवस्था करने के लिए आरंभ में के.रि.पु.बल को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बल के उप महानिरीक्षक सतीश कुमार महेंद्र ने बताया कि खाना पकाने के लिए रसोई गैस और रसोईयों की व्यवस्था के लिए श्रीनगर और जम्मू में स्थित बटालियनों की मदद लेनी पड़ी। श्री महेंद्र ने बताया कि शुरू में तो तीर्थ यात्रियों को खिलाने की सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर थी, लेकिन बाद में दिल्ली, हरियाणा और पंजाब से यहां आकर धार्मिक संस्थानों और लोगों द्वारा लंगर लगाने के बाद थोड़ी राहत मिली।

कई तरह की कठिनाइयों का सामना करने वाले कई तीर्थ यात्रियों ने कहा कि उन्हें कठिनाइयां अवश्य हुईं लेकिन यदि के.रि.पु.बल की सहायता प्राप्त न होती, तो वे यात्रा कर ही न पाते।

सूरत में आर.ए.एफ.



सूरत में प्लेग प्रभावेत क्षेत्रों में नागारेकों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराते बल के डाक्टर

22 सितम्बर, 94 को जब सूरत में अचानक प्लेग के फूट पड़ने के कारण एक तरफ लोग सूरत छोड़-छोड़ कर भाग रहे थे, तब दूसरी तरफ आर.ए.एफ. के जवान सूरत की तरफ कूच कर रहे थे। प्लेग के डर से सूरत से लगभग सात लाख लोगों ने भाग कर देश के अन्य भागों में शरण ले ली। सूरत में व्यावसायिक गतिविधियां एकदम थम गयीं। स्कूल कालिज, होटल, सिनेमा सब बंद हो गये। जो लोग सूरत में बच गए थे, वे बुरी तरह डरे और सहमे हुए थे। प्लेग से ज्यादा, प्लेग की दहशत ने सूरत का नुकसान किया। सूरत से आया प्रत्येक व्यक्ति देश के अन्य हिस्सों में अछूत हो गया।

इस सूरते हाल में, जबकि प्रभावित क्षेत्रों से जाने से संक्रमण का शिकार होने के पूरे आसार थे, जिससे मृत्यु तक हो सकती थी, रेपिड एक्शन फार्म फोर्स की 100 बटालियन की दो कम्पनियां 24 सितम्बर से 01 अक्टूबर तक सूरत में तैनात कर दी गयीं। उनका मुख्य कार्य था प्लेग से संबंधित राहत कार्य।

इस दौरान आर.ए.एफ. के जवान प्लेग रोगियों के घर गए और उन्होंने न केवल प्लेग रोगियों को अपितु उनके संपर्क में रहने वाले परिवार के लोगों तथा पड़ोसियों तक को टीके लगाए, ताकि इस महामारी को आगे बढ़ने से रोका जा सके। इलाके में उन्होंने डी.डी.टी. पाउडर का छिड़काव किया तथा संदिग्ध रोगियों को अस्पताल पहुंचाया।

आर.ए.एफ. के जवानों ने उन अस्पतालों को अपनी निगरानी में ले लिया, जहां प्लेग के रोगी भर्ती थे। उनके इस प्रयास से अस्पतालों से भयग्रस्त प्लेग रोगियों के पलायन पर रोक लगी।

आर.ए.एफ. के जवानों ने तत्काल सभी केन्द्रों पर दवाइयों के समान वितरण की व्यवस्था को ठीक किया और ये निगरानी अपने जिम्मे ली।

आर.ए.एफ. के जवानों ने प्लेग रोगियों को हर संभव सहायता प्रदान की। यहां तक कि जरूरत पर वे उन्हें स्ट्रेचर पर अस्पताल तक ले गए। किन्तु इन सब कार्यों से भी अधिक गुजरात से बाहर की एक पुलिस फोर्स के जवानों का वहां आना, और प्लेग पीड़ितों के बीच उनका काम करना, स्थानीय प्रशासन के लिए बड़ा लाभप्रद रहा। इससे नागरिकों का प्रशासन के प्रति विश्वास लौटने लगा और इस संबंध में फैली घबराहट और भय धीरे-धीरे कम होने लगा। स्थिति तेजी से सामान्य होनी लगी तथा शहर छोड़ कर भाग गए लोग शहर लौटने लगे। देशी एवं विदेशी संचार माध्यमों द्वारा आर.ए.एफ. के काम को व्यापक प्रचार दिए जाने के कारण स्थानीय प्रशासन को भी स्थिति पर अपनी पकड़ मजबूत करने में भरपूर मदद मिली।

अभियान गंगा सागर

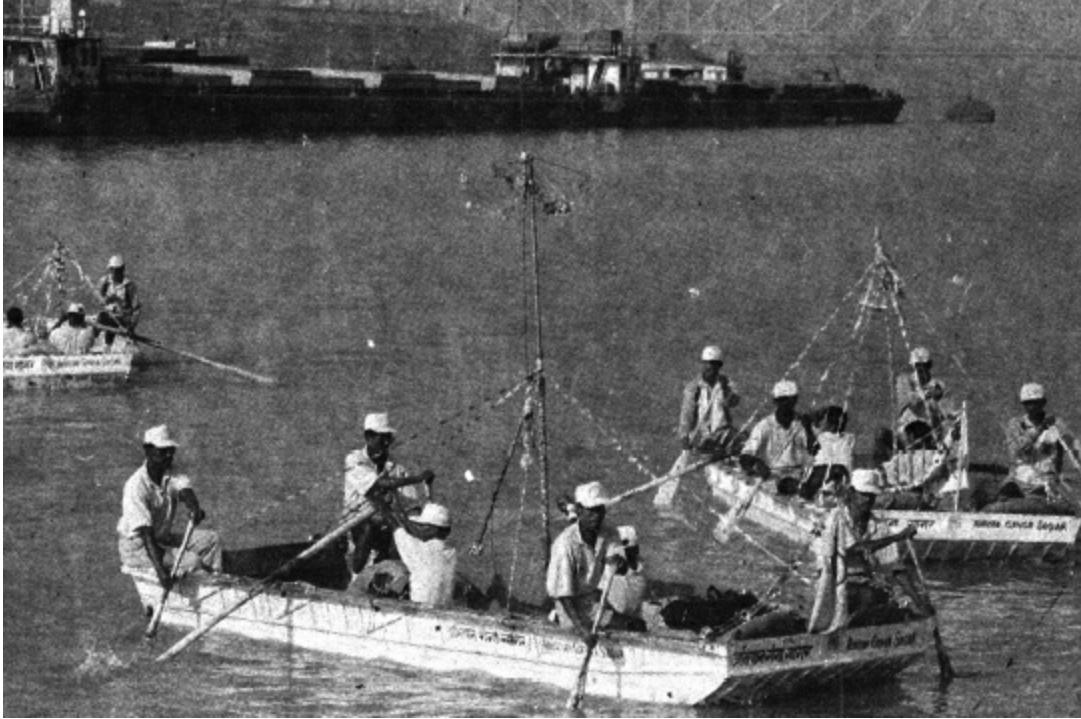
पानी के रोमांचक खेलों में के.रि.पु.बल का प्रथम प्रयास

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के अभियान गंगा सागर की नावें अपनी 61 दिन की यात्रा पूरी कर 15 दिसम्बर को कलकत्ता पहुंची। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री के.वी.रघुनाथ रेड्डी ने कलकत्ता में हुगली नदी के प्रिंसेप घाट पर दल के सदस्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में राज्यपाल श्री रेड्डी ने अभियान दल के सदस्यों को अपनी दुर्गम यात्रा सफलतापूर्वक पूरी करने पर बधाई दी। इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जरूरत के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण हर दिशा से इसी बल की मांग की जाती है और इस बल ने भी अपनी जिम्मेदारी को हमेशा पूरी ईमानदारी तथा कर्तव्यनिष्ठा के साथ निभाया है।

राज्यपाल श्री रेड्डी ने अभियान दल के नेता सहायक कमान्डेन्ट श्री डी. क्लेमेंट को एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया। अभियान की सफलता के लिए उन्होंने अभियान दल के प्रत्येक सदस्य को एक-एक रजत पदक प्रदान किया।

समारोह के प्रारंभ में बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने बल का परिचय देते हुए बताया कि देश में कानून व्यवस्था बनाये रखने तथा आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में इस बल ने सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है। प्राकृतिक आपदाओं तथा साम्प्रदायिक दंगों जैसे स्थितियों में भी इस बल को मानवीय आधार पर नियुक्त किया जाता रहा है। बल की एक कम्पनी को संयुक्त राष्ट्र की सेना के साथ काम करने के लिए हैती भेजे जाने का निश्चय किया गया है। यह बल पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी पीछे नहीं है। उड़ीसा में इसने बरबरा वन क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली 25,000 हेक्टेयर जंगल-भूमि को, वहां के पेड़-पौधों और जन्तुओं के संरक्षण के लिए अपनाया है। समारोह के अंत में महानिरीक्षक श्री के.आर.के. प्रसाद ने अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया।

ज्ञातव्य है कि इस अभियान दल को बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने 16 अक्टूबर, 94 को हरिद्वार से झंडी दिखा कर रवाना किया था। इस अभियान दल में कुल 24 सदस्य तथा 4 नौकाएं शामिल थीं। अपने इस अभियान के दौरान इस दल की नौकाएं उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर गुजरी। अभियान दल के सदस्यों ने प्रतिदिन औसतन 40 किलोमीटर की दूरी तय करके 2,151 किलोमीटर का सफर 61 दिन में पूरा किया। अभियान दल के सदस्यों ने रास्ते में बचाव तथा राहत कार्यों का प्रशिक्षण लेने के , अतिरिक्त गंगा के तटवर्ती इलाकों के संबंध में आंकड़े एकत्र किये तथा अन्य जानकारी भी हासिल की, ताकि भविष्य में बाढ़ आदि के दौरान बल में तैनाती के लिए ये जानकारी उपयोग में लाई जा सके। दल के सदस्यों ने मार्ग में गंगा नदी के बहाव का इस दृष्टि से अध्ययन किया कि के.रि.पु.बल इसमें बढ़ते हुए प्रदूषण को नियंत्रित करने में किस तरह सहायक हो सकता है।



अभियान गंगा सागर की नावें अभियान के अन्तिम चरण में कलकत्ता में प्रवेश करते हुए।

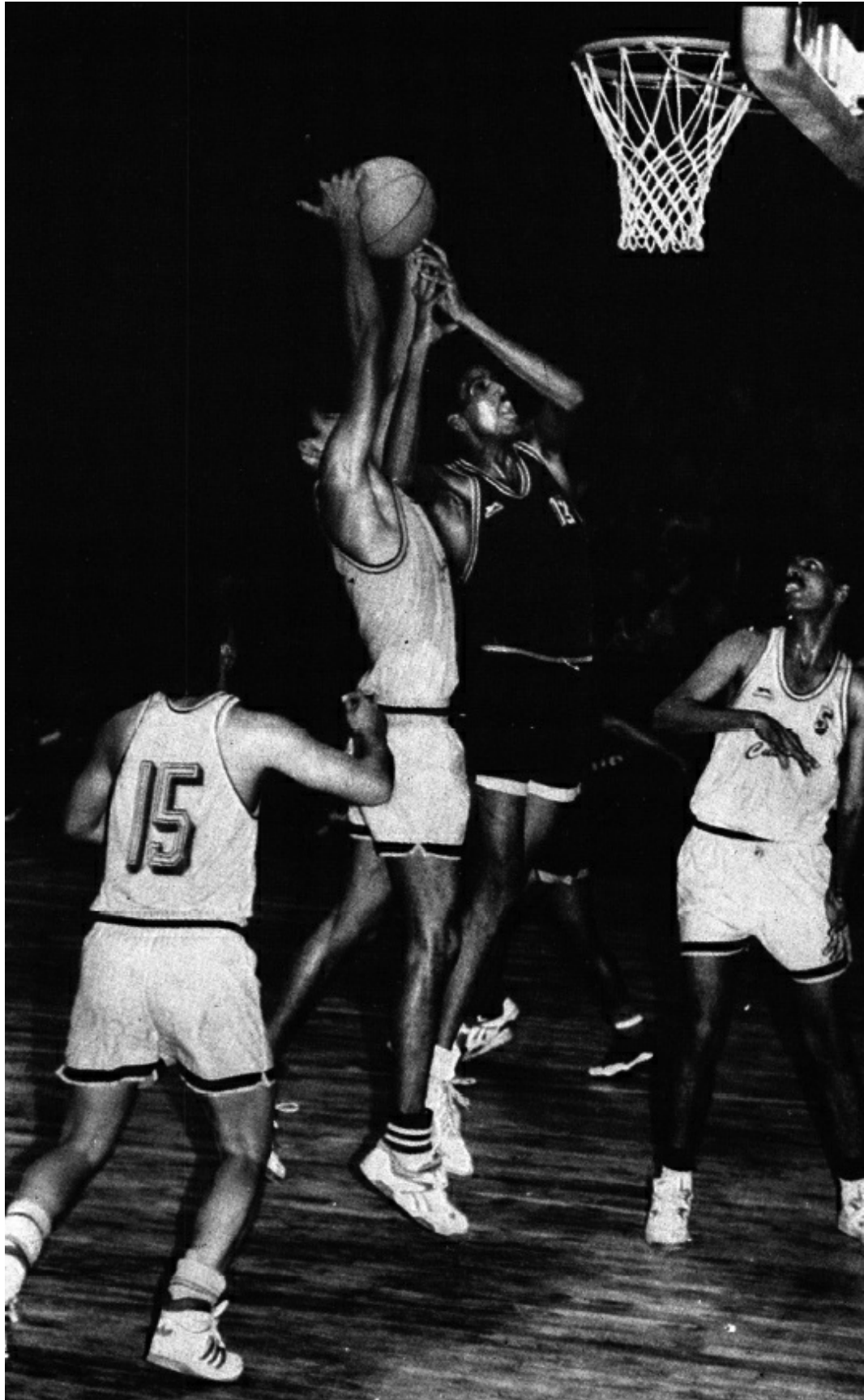
के.रि.पु.बल स्वर्ण कप बास्केटबाल

उत्पाद व सीमा शुल्क जयपुर ने स्वर्ण कप जीता

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की अखिल भारतीय स्वर्ण कप बास्केटबॉल प्रतियोगिता 5 दिसंबर, 1994 को नई दिल्ली के तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में प्रारंभ हुई। प्रतियोगिता का उद्घाटन बल के अवर महानिदेशक श्री ए.वी. लिङ्ग ने किया।

इस प्रतियोगिता में केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सीमा सुरक्षा बल जालंधर, आर्मी केजस, भारतीय नौसेना, कर्नाटक, उत्पाद तथा सीमा शुल्क जयपुर, भिलाई स्टील प्लांट, दिल्ली पुलिस तथा पंजाब राज्य विद्युत बोर्ड जैसी देश की चोटी की टीमों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर टीमों का स्वागत करते हुए महानिरीक्षक (मुख्यालय एवं प्रशिक्षण) श्री सुरेश राय ने बताया कि 1989 में बल की स्वर्ण जयंती के अवसर पर शुरू की गई यह प्रतियोगिता बीच में किन्हीं कारणों से नहीं हो सकी, किंतु भविष्य में अब यह नियमित रूप से प्रति वर्ष आयोजित की जाएगी।



प्रतियोगिता के फाइनल के मुकाबले में उत्पाद व सीमा शुल्क का आर्मी केजर्स पर धावा

प्रतियोगिता का उद्घाटन मैच के.रि.पु.बल और भिलाई स्टील प्लांट के बीच खेला गया, जिसे के.रि.पु.बल ने 68-44 अंकों से जीत लिया। मध्यांतर तक स्कोर 33-28 था। बल की टीम के लिए सर्वाधिक अंक सुरेंद्र कुमार ने 21 तथा दलबीर सिंह ने 16 बटोरे, जबकि दूसरे स्थान पर रहे भिलाई स्टील प्लांट के लिए सर्वाधिक अंक शाजी टी.थामस ने 17 तथा शाजू बालन ने 11 बटोरे।

तीन पूलों में विभाजित प्रतियोगिता की इन टीमों में से उत्पाद एवं सीमा शुल्क जयपुर तथा आर्मी केजर्स की टीमों फाइनल तक पहुंची। एक कड़े मुकाबले में आर्मी केजर्स को 83-75 से हराकर उत्पाद एवं सीमा शुल्क ने के.रि.पु.बल स्वर्ण कप जीत लिया।

9 दिसंबर 1994 को खेले गए फाइनल मुकाबले के मौके पर केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंह देव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने विजेता टीम को टाफी तथा 15,000 रुपये का चेक, दूसरे स्थान पर रही आर्मी केजर्स की टीम को 10,000 रुपये का चेक तथा क्रमशः तीसरे तथा चौथे स्थान पर रही, के.रि.पु.बल व पंजाब राज्य विद्युत बोर्ड की टीमों को 5,000 -5,000 रुपये के चेक भेंट किये।

इस मौके पर बोलते हुए श्री सिंह देव ने कहा कि एक वर्दीधारी फोर्स द्वारा इस तरह के मुकाबलों का आयोजन एक अच्छी परंपरा है तथा इससे देश को नई प्रतिभाओं के विकास में मदद मिलेगी।

इससे पूर्व आयोजन के सचिव उप निदेशक (प्रशिक्षण) श्री वी.सी. गोयल ने मुख्य अतिथि को बल का परिचय देते हुए के.रि.पु.बल की खेल गतिविधियों से अवगत कराया। महानिरीक्षक (मुख्यालय) श्री सुरेश राय ने मुख्य अतिथि को धन्यवाद देते हुए कहा कि के.रि.पु.बल खेलों के क्षेत्र में कुछ बड़े कदम उठाने जा रहा है, जिनमें रोमांचक खेल भी शामिल है।



प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर बल के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए अवर महानिदेशक श्री ए.वी.लिङ्गल

9 दिसंबर को खेले गए फाइनल मुकाबले में आर्मी केजर्स ने शुरू से ही उत्पाद एवं सीमा शुल्क को कड़ा मुकाबला किया। मध्यान्तर तक स्कोर 47-44 था। जिसे उत्पाद एवं सीमा शुल्क की टीम मध्यान्तर के बाद 83-75 तक बढ़ा ले गई। विजेता टीम के लिए सर्वाधिक अंक वीरेन्द्र जोशी ने 25 तथा अशोक कुमार ने 18 बनाये। जबकि आर्मी केजर्स के लिए पूल सिंह ने 26 तथा वीरेन्द्र सिंह ने 14 अंक बनाये।

9 दिसंबर को ही सुबह खेले गए हार्ड लाइन मैच में के.रि.पु.बल ने पंजाब विद्युत बोर्ड को 74-49 से हराकर प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

उत्पाद एवं सीमा शुल्क सेमी फाइनल में पंजाब राज्य विद्युत बोर्ड को तथा आर्मी केजर्स के.रि.पु.बल को परास्त कर फाइनल में पहुंची। फाइनल मैच का दूरदर्शन तथा आकाशवाणी ने सीधा प्रसारण किया।

इस सम्पूर्ण प्रतियोगिता का प्रायोजन दिल्ली की मैसर्स मेघा ट्रेवल्स ने किया।

के.रि.पु.बल में राजभाषा हिंदी के बढ़ते चरण

हंसराज गुगनानी (हिंदी अनुवादक)

के.रि.पु.बल, भारत सरकार की राजभाषा नीति का पालन करने की दिशा में किसी भी मंत्रालय अथवा विभाग से पीछे नहीं है। आज इस विभाग में लगभग 50 प्रतिशत सरकारी कार्य हिन्दी में निपटाया जाता है। विभाग का सामान्य प्रकृति का कार्य ही नहीं बल्कि अदालती जाँचों की कार्रवाई, प्राथमिक एवं विभागीय जाँचें भी हिन्दी में की जाती हैं। यूनिटों के फोर्स आर्डर हिन्दी में प्रकाशित किए जा रहे हैं। यह सब सरकार की प्रोत्साहन नीति के सफल कार्यान्वयन का ही प्रतिफल है। इस विभाग में भारत सरकार की मूल हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन योजना, अधिकारियों के लिए हिन्दी डिक्शनरी योजना तथा हिन्दी टंकणों के लिए प्रोत्साहन भत्ता योजना सफलतापूर्वक चल रही है। यही नहीं, सहायक उप निरीक्षक (मंत्रालयिक) की भर्ती परीक्षा में “अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र” को हटा दिया गया है। अब इस पद का प्रत्येक उम्मीदवार “सामान्य हिन्दी” अथवा “सामान्य अंग्रेजी” में से किसी भी प्रश्न-पत्र का अपनी इच्छानुसार उत्तर देने के लिए स्वतंत्र है।

इस बल में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस पावन अवसर पर, बल के प्रत्येक कार्यालय में विभिन्न प्रकार की हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं में बल के सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। वर्ष 1993 में मनाए गए हिंदी दिवस के अवसर पर 1,045 बल कर्मिकों को विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए 1,25,925 रु. के नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इतना ही नहीं, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में भी इस बल के कर्मचारियों ने अखिल भारतीय स्तर के अनेक पुरस्कार जीते हैं। भारत सरकार द्वारा लागू वर्ष 1993-94 की मूल हिन्दी टिप्पण/आलेखन योजना के अधीन भी 301 कर्मचारियों को 68,925 रु. के नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वयन करने में के.रि.पु.बल के अधिकारियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान किया है। वर्ष 1993-94 की हिन्दी डिक्शनरी योजना के अंतर्गत इस बल के श्री चरणजीत सिंह हीरा, द्वितीय कमान अधिकारी, 23 बटालियन तथा श्री एम.करूणाकरण, उप कमांडेण्ट, 84 बटालियन को 500-500 रु. के नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, 6 अन्य अधिकारियों को भी अधिकाधिक डिक्शनरी हिन्दी में देने के लिए 400 रु. की दर से मानदेय स्वीकृत किया गया है।

अभी हाल ही में, महानिदेशक द्वारा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप देवनागरी टाइपराइटर खरीदने का आदेश जारी किए गए हैं। इससे बल में देवनागरी के पर्याप्त टाइपराइटरों की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। आशा है देवनागरी टाइपराइटरों की उपलब्धता से बल में राजभाषा के प्रयोग को गति मिलेगी तथा यह बल निकट भविष्य में राजभाषा विभाग द्वारा इस निर्मित निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।



ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए केरल विधान सभा अध्यक्ष श्री पी.पी. तंकाचन

उत्तरी सेक्टर कल्याण गतिविधियों में अग्रणी

उत्तरी सेक्टर की नयी दिल्ली रेंज की कम्पनियां सुदूर उत्तर पूर्व से लेकर दिल्ली और जम्मू कश्मीर तक तैनात है। बल को प्रतिष्ठित महिला बटालियन इसी रेंज के अंतर्गत आती है। इन कम्पनियों ने सामान्य कानून व व्यवस्था को बनाए रखने के अतिरिक्त अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों तथा स्थलों की निगरानी के कर्तव्य को भी अंजाम दिया है। महिला बटालियन के सदस्य इस वर्ष जम्मू कश्मीर, दिल्ली, देहरादून व हरिद्वार आदि में तैनात रहे हैं।

इनके अतिरिक्त इस वर्ष मार्च माह में इस रेंज द्वारा नई दिल्ली में आयोजित रक्तदान शिविर में भी बल की 88 बटालियन की सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस रक्तदान शिविर में दिल्ली में तैनात बल के लगभग 400 कार्मिकों ने रक्तदान किया।

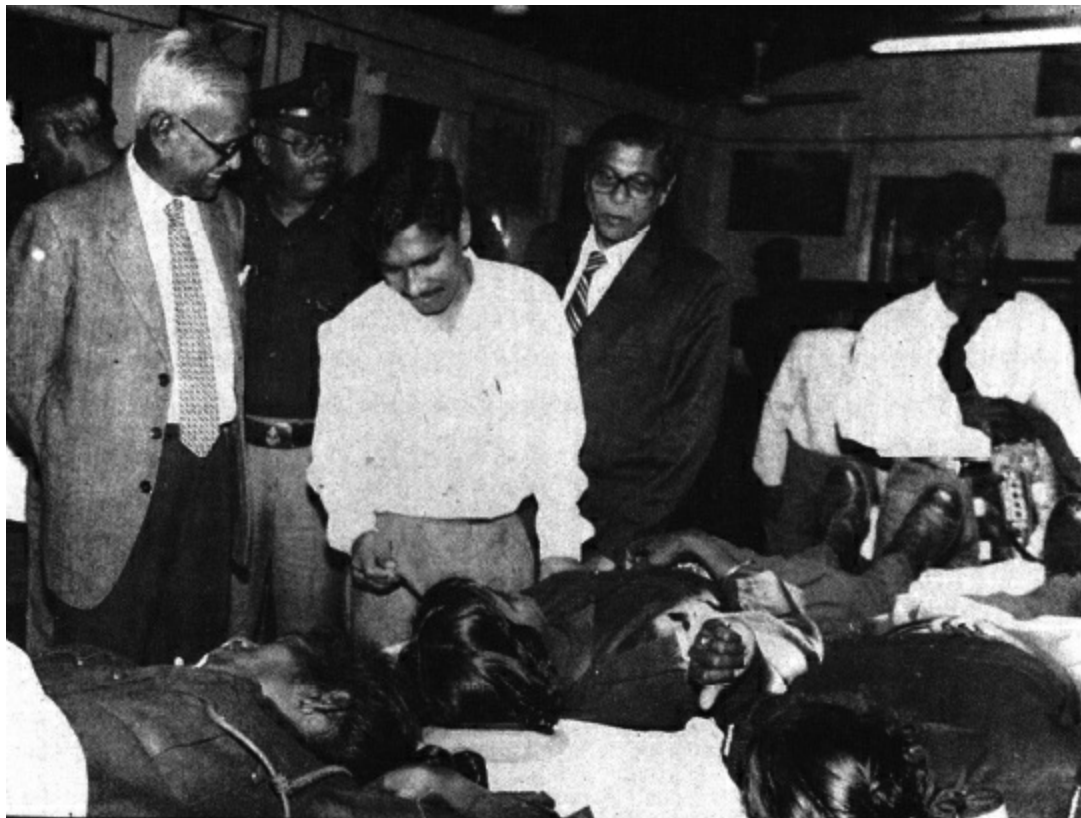
दिल्ली स्थित बेस अस्पताल को पूरी तरह व्यावसायिक रूप से आत्मनिर्भर बना दिया गया है। तथा यहाँ पर लगभग हर आपरेशन किया जाता रहा है। हाल ही में बेस अस्पताल-1 में नवजात शिशुओं के लिए आधुनिक उपकरणों एवं यंत्रों से युक्त एक

नसंरो खोली गई है।

इसी बेस अस्पताल में इस वर्ष सितंबर से एक विशेष टीकाकरण अभियान भी चलाया जा रहा है।

स्वास्थ्य विभाग ने नई दिल्ली बेस अस्पताल को एक परिवार कल्याण केंद्र के रूप में मान्यता दे दी है।

इशी सेक्टर की अजमेर रेंज ने अपने अंतर्गत पड़ने वाली यूनिटों में इस वर्ष लगभग 17,000 वर्ष लगाए।



नई दिल्ली में आयोजित एक रक्तदान शिविर में भाग लेते बल के कार्मिक

छोटे परिवार तथा धूम्रपान से संबंधित एक जागरण अभियान इस रेंज में चलाया गया।

इस वर्ष इस रेंज के तीन कार्मिकों की शौर्यवीरता के पुलिस पदक, पांच को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक तथा 15 की महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गई।

कर्त्तव्य पर मारे गए लांस नायक हरनाथ मीणा तथा कांस्टेबल छोटे लाल के आश्रितों को एक सादे समारोह में क्रमशः 1,25,000 रुपये तथा एक लाख रुपये के अनुग्रह राशि के चेक भेंट किए गए।

इस वर्ष इस रेंज ने 656 नए रंगरूट भर्ती किए तथा नए व पुराने जवानों के लिए

कई प्राशेक्षण कोसे चलाए।

इस रेंज की अधिकतर कम्पनियां उत्तरपूर्व में तैनात हैं, मगर फिर भी उन के लिए रोटेशनल ट्रेनिंग का कार्यक्रम बाकायदा रूप से चलाया गया।

खेल के क्षेत्र में परिचालनिक कर्तव्य से मुक्त बहुत कम कार्मिक उपलब्ध होने के बावजूद इस रेंज के सदस्यों की बल की केन्द्रीय खेल टीम में एक बड़ी संख्या है। 14 बटालियन के हैड कांस्टेबल असीम कुमार राष्ट्रीय वाटर पीलो टीम में शामिल थे। नायक एच.एम. माहतो ने अखिल भारतीय पुलिस खेलों में रजत पदक प्राप्त किया। कांस्टेबल बलराम ने इंटर सेक्टर मुकाबलों में एक स्वर्ण तथा एक रजत पदक प्राप्त किया।

दक्षिण सेक्टर हर क्षेत्र में अग्रणी



ग्रुप केंद्र रंगारेड्डी का शिलान्यास करते हुए अपर महानिदेशक (दक्षिणी सेक्टर) श्री डी.आर.कार्तिकेयन

दक्षिण सेक्टर ने बल की गौरवशाली परंपराओं को ऊँचा बनाये रखने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। 1992-93 में इनके अंतर्गत आने वाले ग्रुप केन्द्र हैदराबाद को दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ ग्रुप केन्द्र की ट्राफी प्रदान की गयी। इस वर्ष इस सेक्टर के दो कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक, पांच को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक तथा पांच कार्मिकों को शौर्यवीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए।

राजभाषा नौते को उसके सहो अथों में लागू करने के लिए इस सेक्टर को इस वर्ष भारतीय बीमा कम्पनी लि. की रोलिंग ट्राफी प्रदान की गई।

पर्यावरण-संरक्षण के क्षेत्र में भी इस वर्ष इस सेक्टर ने बहुत कार्य किया है। हैदराबाद, मद्रास, बंगलौर तथा पल्लिपुरम में लगभग 46,000 पौधे लगाए गए। परिचालनिक प्रतिबद्धताओं तथा अन्य समस्याओं के बावजूद इस सेक्टर की फील्ड यूनिटों ने भी लगभग 17,000 वृक्ष लगाए।

इस वर्ष इस सेक्टर के अन्तर्गत पड़ने वाले दो नए ग्रुप केन्द्रों ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी तथा ग्रुप केन्द्र बंगलौर ने अपना कार्य शुरू कर दिया। ग्रुप केन्द्र बंगलौर का उद्घाटन बल के महानिदेशक श्री एस.वी.एम.त्रिपाठी ने 27 मई, 1994 को किया, जबकि ग्रुप केन्द्र रंगारेड्डी का शिलान्यास दक्षिण सेक्टर के महानिरीक्षक श्री डी.आर.कार्तिकेयन ने 18 सितम्बर, 94 को किया। मगर इस ग्रुप केन्द्र ने अपना कार्य 11 अप्रैल, 94 से ही प्रारंभ कर दिया।

पारिचालनिक उपलब्धियां

इस सेक्टर की बटालियनों जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्वी राज्यों सहित लगभग सम्पूर्ण देश में कानून व व्यवस्था की स्थिति के लिए तैनात हैं। पारिचालनिक क्षेत्र में इस वर्ष इस सेक्टर ने विशेष उपलब्धियां हासिल की हैं। इसके जवानों ने देश भर में आतंकवादियों तथा अन्य अराजक तत्वों से हुई मुठभेड़ों में 57 घातक हथियार, 21 विस्फोटक तथा 262 गोली बारूद बरामद किया। इसके जवानों के साथ हुई मुठभेड़ों में 12 आतंकवादी मारे गए तथा 87 को गिरफ्तार किया गया।

इसी सेक्टर की 19वीं बटालियन को अमरनाथ यात्रियों को बनिहाल से अमरनाथ गुफा तक सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। लगभग 150 किलोमीटर लम्बे मार्ग पर यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करना एक कठिन कार्य था, मगर इस सेक्टर के जवानों की सजग चौकसी के कारण ये यात्रा निर्विघ्न पूर्ण हुई।

भारी पारिचालनिक प्रतिबद्धताओं के बावजूद इस सेक्टर की 48 कम्पनियों ने इस वर्ष रोटेशनल ट्रेनिंग में भाग लिया।

इस वर्ष इस सेक्टर की शूटिंग, बास्केटबाल तथा जिमनास्टिक इंटर सेक्टर मुकाबलों में दूसरे स्थान पर रही।

कल्याण के क्षेत्र में इस सेक्टर ने ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में बल के कार्मिकों के बच्चों में से प्रतिभावान खिलाड़ियों के चयन के लिए एक बास्केटबाल टीम का गठन किया है, जो स्थानीय स्तर पर बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद तथा परिवार कल्याण केन्द्र ने बल के कार्मिकों के परिवारजनों के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की है।

जम्मू कश्मीर शांति के पथ पर



के.रि.पु. बल के जवान, डल झील श्रीनगर में गश्त पर।

जम्मू कश्मीर स्थित के.रि.पु.बल की बटालियनों द्वारा इस वर्ष अमरनाथ यात्रा को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराना उनकी इस वर्ष की सबसे बड़ी सफलता है। इसके अतिरिक्त आपरेशन के क्षेत्र में भी अपर महानिदेशक (परिचालन) श्री डी.डी. गुप्ता के निर्देशन में इस क्षेत्र में तैनात बल की बटालियनों ने भारी सफलताएं प्राप्त की हैं।

पंजाब के बाद के.रि.पु.बल सर्वाधिक कश्मीर में व्यस्त है। 1 जनवरी 94 से 30 नवम्बर, 94 तक बल के जवानों ने कश्मीर में 349 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया तथा बल के जवानों के साथ हुयी मुठभेड़ों में सात आतंकवादी मारे गए। इन मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 35 घातक हथियार बरामद किए। मगर के.रि.पु.बल को इस सफलता की भारी कीमत चुकानी पड़ी। यहां बल के सात कार्मिक मारे गए तथा 86 गंभीर रूप से घायल हुए। ज्ञातव्य है कि कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियान में शामिल किए जाने के बाद से अब तक बल के 130 कार्मिकों ने इस अभियान में अपने प्राणों की आहुति दी है, जबकि 1238 या तो गंभीर रूप से घायल हुए हैं या शारीरिक रूप से अक्षम हो चुके हैं। लेकिन दूसरी तरफ आतंकवादियों के साथ हुयी मुठभेड़ों में 219 आतंकवादी मारे गए हैं तथा 2589 को गिरफ्तार किया गया है। इन

मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 1095 घातक हाथियारों तथा 35612 गोली बारूद को भी बरामद किया है।

जम्मू कश्मीर में बल के जवानों की कार्रवाईयों तथा आतंकवादियों के पस्त पड़ते हौसलों के देखते हुए इस बात को पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि जम्मू कश्मीर एक बार फिर शांति के पथ पर अग्रसर है। वह दिन दूर नहीं जब सैलानियों के स्वर्ग के रूप में विख्यात यह घाटी एक बार फिर अपनी पुरानी चहल पहल और रंगत को पा लेगी। उसके इस प्रयास में के.रि.पु.बल के जवान अपने प्राणोपन्न से सहयोग दे रहे हैं।

के.रि.पु.बल में संचार व्यवस्था

सिगनल रेंज देश के कोने तक दक्षपूर्ण एवं अचूक संचार व्यवस्था करने के लिए उत्तरदायी है। और इसने यह भूमिका बहुत ही अच्छी तरह निभाई है।

के.रि.प.बल में संचार व्यवस्था, लाइन व रेडियो नेटवर्क पर आधारित है। लाइन संचार के लिए टेलीप्रिंटर सर्किट संचार विभाग से किराए पर लिए जाते हैं। बल मुख्यालय के महानिरीक्षक, उप-महानिरीक्षक, अपर उप महानिरीक्षक तथा अन्य महत्वपूर्ण केन्द्रों के साथ जोड़ा गया है। लाइन संचार की सहायता के रूप में हाई-फ्रीक्वेंसी (उच्च-आवृत्ति) रेडियो संचार उपलब्ध कराया गया है। उच्च-आवृत्ति/अति उच्च आवृत्ति संचार साधन एकजीक्यूटिव बटा।

/कंपनी मुख्यालय तक प्रदान किये गये हैं। बातचीत के लिए अति उच्च आवृत्ति संचार साधन प्लाटून लेवल तक उपलब्ध किये गये हैं।

बल में बिल्कुल आधुनिक टैक्नोलोजी अपनाना पहला विकल्प रहा है। सिन्थेसाइज़ रेडियो सैट, इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेन्ज, रेडियो टेलीप्रिंटर द्वारा संदेश क्लियर करने के लिए बी.ई.एस.टी. उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक टेलीप्रिंटर तथा आटोमैटिक मैसेज स्विचिंग सिस्टम की व्यवस्था से संचार के क्षेत्र में आधुनिकीकरण हो चुका है। इस व्यवस्था से हमारे संचार तंत्र को संदेशों की आवाजाही के कामकाज की क्षमता बढ़ाने में मदद मिली है।

एक विशाल आधुनिकीकरण की योजना सरकार के अधीन विचाराधीन है। इसमें मुख्यतः मल्टी-मीडिया मैसेज स्विचिंग सिस्टम की मुख्य-मुख्य सिगनल केन्द्रों पर, बी.ई.एस.टी.उपकरणों की बटालियन स्तर पर, उच्च आवृत्ति बैंड में भीड़-भाड़ से बचने के लिए द्रु.का. ब. बटालियन हेतु परा-उच्च आवृत्ति संचार, प्रतिकूल भू क्षेत्रों के लिए वी-एस. ए.टी. का प्रयोग तथा रेंज मुख्यालय तक फैक्स व एस.टी.डी.टेलीफोन की बहुमूल्य सुविधाएं जुटाना शामिल है। जवानों को तकनीकी प्रशिक्षण देने पर सबसे अधिक तरजीह दी जाती है।

सांक्षिप्त खबरें

जोखिम निधि लाभ

केन्द्रीय रिजर्व बल केन्द्रीय जोखिर निधि से माह नवम्बर, 94 में मृत्यु के कुल 25 मामलों में कुल 9,41,00 रुपये देने स्वीकृत किये गये। इनमें प्रति मामला 10,000 रुपये की सी.डब्ल्यू.एफ. तथा सी.बी.एफ. की राशि भी शामिल है।

इसी प्रकार अक्षमता के एक मामले में कुल 15,000 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि “पार्ट-बी” (स्पेशल कल्याण निधि) से भी इसके 10 सदस्य की मृत्यु के मामले में कुल 3,45,00 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

माह नवम्बर, 94 में मृत बल के कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह नवम्बर, 94 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

हैड कांस्टेबल/ट्रेलर राम कुमार (ग्रुप केन्द्र रामपुर), नायक राम अवतार सिंह (68 बटा.), हैड कांस्टेबल भोला सिंह (42 बटा.), कांस्टेबल बी.एन.मिश्रा (48 बटा.), लांस नायक कलीम बोर (106 बटा.), कुक केशव राम जी (64 बटा.), हैड कांस्टेबल जगदीश प्रसाद (127 बटा.), नायक/रेडियो आपरेटर बी.पेटोर (91 बटा.), हैड कांस्टेबल के.जी.एस. नैयर (110 बटा.), कांस्टेबल मोहम्मद अमु (27 बटा.), नायक अजीत सिंह (83 बटा.), हैड कांस्टेबल/डाईवर बलवान सिंह (88 बटा.), कांस्टेबल धीर सिंह (ग्रु.के. जालंधर), कांस्टेबल पी.के.राय (125 बटा.), कांस्टेबल मणिराम (9 बटा.) हैड कांस्टेबल अजीज अहमद (बटा.), सब-इंस्पेक्टर बी.डी.जोशी (ग्रुप केन्द्र हैदराबाद), हैड कांस्टेबल ओम प्रकाश (सी.टी.सी.तीन), लांस नायव एस.गुरिया (110 बटा.), कांस्टेबल एम धर्मा रेड्डी (60 बटा.), कांस्टेबल सतपाल (99 आर.ए.एफ.), कुक उजागर (9 आर.ए.एफ.), कांस्टेबल अनूप कुमार मलिक (99 आर.ए.एफ.), कांस्टेबल केवल राम (99 आर.ए.एफ.) हैड कांस्टेबल भवर सिंह (34 बटा.)

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त हुई सूचना के अनुसार अक्टूबर, 94 माह में 74 बटालियन के कांस्टेबल रोशन लाल भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

होम्योपैथी यथार्थ व आदर्श

डा. जी.एस. सोनी (डी.एच.एम.एस.)

आज शायद ही कोई ऐसा नागरिक होगा जो होम्योपैथी से परिचित न हो। सभी

वर्गों के लोग जानते हैं कि होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान आरोग्य-लाभ कराने में सक्षम है। शिक्षित समाज के अधिकांश लोग तो होम्योपैथिक चिकित्सा सिद्धान्तों व दवाओं के प्रयोग के बारे में भी सामान्य जानकारी रखते हैं। अतः होम्योपैथी क्या है, इस बारे में मैं अधिक विस्तार से वर्णन न कर मात्रा स्मृति हेतु इतना ही कहूँगा कि “होम्योपैथी डा. सामुएल हैनिमैन द्वारा प्रसारित चिकित्सा विज्ञान है, जिसमें निश्चित और स्थायी, प्रकृति के आर्गेनिज के सिद्धान्तों के आधार पर चिकित्सा की जाती है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि स्वस्थ मनुष्य पर औषध की शक्तिकृत अल्प मात्रा का प्रयोग कर रोग लक्षण दूर करके रोगी को रोगमुक्त व सच्चा स्वास्थ्य प्रदान किया जाता है।

होम्योपैथी विधि से “केस-टेकिंग” का ज्ञान बहुत कम होम्योपैथों को है। जिन्हें थोड़ा-सा ज्ञान है वह व्यावहारिक रूप में न होने से वे प्रयोग नहीं करते। इसी प्रकार, रिपोर्टरी के प्रयोग व रिपोर्टराइजेशन की कला भी नहीं है।

प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित का भेदभाव रखा जाता है जिसके कारण होम्योपैथ को आदर नहीं मिल पाता। शासन भी वर्ग-भेद करता है।

औषधियों के प्रूविंग की ओर एवं नई औषधियों की ओर स्विच का भी अभाव है।

कई नामों से होम्योपैथी संस्थाएँ बनती हैं। इसलिए कि होम्योपैथी की उन्नति करेंगे, किन्तु होता है पद-लिस्फ व स्वार्थ पूर्णता का उद्देश्य प्रमुख। आए दिन आपसी मतभेद के कारण सीमित क्षेत्र में मन-मुटाव बना रहता है। इससे होम्योपैथी की प्रगति के आधार पर द्वार बन्द हो जाते हैं।

होम्योपैथी में आपस में मिल-बैठकर रोगी व मनुष्य के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चर्चाएँ नहीं होती हैं। सब अपनी निजी विशेषता के घमण्ड में रहते हैं। होना यह चाहिए कि प्रत्येक क्षेत्र में रोगी व रोगावस्थाओं के अध्ययन हेतु विचार गोष्ठी होवें तथा रोगी को शीघ्रता से व सरलतम ढंग से स्वस्थ करने के उद्देश्य की पूर्ति की ओर संयुक्त प्रयत्न किए जाएँ। इस प्रकार के सामयिक विचार-विमर्श व केस के परीक्षणों से होम्योपैथी की जड़ मजबूत होगी तथा आपस में प्रेम व नम्रता बढ़ेगी। किन्तु खेद है कि आज यदि इस प्रकार की कोई योजना की जाती है तो उसे असफल करने का प्रयास किया जाता है तथा अपने ज्ञान व प्रायोगिक अनुभवों को छिपा कर रखने में ही श्रेष्ठता समझी जाती है।

जनता जो समझदार है, पढ़ी-लिखी है, अर्थात् प्रबुद्ध वर्ग के समाज में होम्योपैथी उपचार विधि व मोटे-मोटे सिद्धान्तों का प्रसार नहीं हो रहा है। यदि इस प्रकार का प्रचार होगा तो निश्चित ही प्रबुद्ध वर्ग शत-प्रतिशत होम्योपैथी की ओर झुक जाएगा और धीरे-धीरे गाँव के लोग या अन्य लोग भी जागृत होंगे।

सामान्यतः होम्योपैथी जगत में अन्य चिकित्सा पद्धतियों को बुरा-भला कह कर अपशब्द प्रयुक्त होते हैं। इससे समाज में वैमनस्य फैलता है व इतर पद्धतियों वाले होम्योपैथी को बदनाम करने का प्रयास करते हैं। अतः होम्योपैथों को केवल अपनी चिकित्सा की विशेषताओं का परिचय देना चाहिए, दूसरी विधियों की कठोर

आलोचना नहीं करनी चाहिए बल्कि उन्हें आधुनिक नई खोजों व यन्त्रों का सहारा लेकर (जो मानव मात्र की खोज हैं और उस पर किसी इतर पैथी का प्रभुत्व नहीं है) इन साधनों का प्रयोग इस आधार पर करना चाहिए कि होम्योपैथी को बल मिले व लक्षणावली एवं समता के सिद्धान्तों का हनन न होवे।

कविता अमन शांति जग में लाता है

सुरभित धरा गगन में अपना, के.रि.पु.बल रत्नाकर है,
अमन शांति नित लाने वाला, निर्मल छवि दिवाकर है।
“परम्परा” इस बल की ऊँची, अनुपम छटा बिखेर रही है,
कोटि-कोटि भारतवासी से, प्यार अपार बटोर रही है।
हिन्दु-मुस्लिम सिख इसाई, मिल-जुल कर इसमें रहते हैं,
भेद-भाव नहीं इनके मन में, कर्तव्य लता में ये लिपटे हैं।
“सेवा-भक्ति” के सहज भाव से, दुर्लभ कार्य सुलभ बनते हैं,
सिसक रही मानवता के हित, पल में खुशियां ये लाते हैं।
प्रेम-भाव के भावुक प्रहरी, कर्म-सुधा नित बरसाते हैं,
सत्य अहिंसा की वेदी पर, हंसते-हंसते चढ़ जाते हैं।
अनुशासन का मुकुट है यह, नित गौरव-ध्वज फहराता है,
सबका जीवन सुखी बना कर, नैसर्गिक सुख यह पाता है।
पर हितकारी, स्नेही जनों से, भरा हुआ यह के.रि.पु.बल है,
भारत-भाग्य संवार रहा नित, रखवाली करता प्रतिपल है।
मध्य प्रदेश में नीमच इस बल का पवित्र उद्गम स्थल है,
“लौह पुरुष” का कुसुम धरा पर, मुस्कराता रहता प्रतिपल है।
महिला दल इस बल में आकर, नवयुग का निर्माण किया है,
संकट में जो फंस जाते हैं, उनका सदा कल्याण किया है।
दृढ़ निश्चय की देवी हैं ये, वीरांगनायें कहलाती है,
नर-नारी के अतुल कर्म से, देश की बची आजादी है।
बल की है पहचान धरा पर, नित्य “प्रभात” फैलाता है,
नीला ध्वज बल का प्रतीक यह, अमन शांति जग में लाता है।

हंसराज ओझा
“प्रभात”
49 बटा.



इस वर्ष आंतकवादियों की धमकियों के कारण अमरनाथ यात्रा काफी जोखिम पूर्ण हो गयी थी, किंतु के.रि.पु. बल के जवानों की सजग निगरानी के यह यात्रा निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हुयी।

रजि. नं. 4767/87



के.रि.पु. बल द्वारा आयोजित अखिल भारतीय स्वर्ण कप बास्केट बाल प्रतियोगिता की ट्राफी उत्पाद एवं सीमा शुल्क, जयपुर की टीम ने आर्मी केजर्स को हराकर जीत ली। विजेता टीम को ट्राफी सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के.पी. सिंह देव ने प्रदान की।